॥ श्रीः ॥

आकृति-विज्ञान

(मनुष्य की आकृति से उसके स्वभाव और चरित्र की पहिचान)

सहायता से

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित



लहरी बुक डिपो

१९५।१ हरिसन रोड, कलकत्ता।

प्रकाशक—
दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी बुक डिपो
१९५।१, हरिसन रोड,
कलकत्ता।

मुद्रक—
भगवतीप्रसाद सिंह
एन० आर० प्रेस,
७३ ए चासाधोबापाड़ा स्ट्रीट,
कलकत्ता

आकृति-विज्ञान

पहिला अध्याय

आकृति

आकृति-विज्ञान अर्थात् मनुष्यों की सूरत शकल, चाल ढाल, रंग रूप आदि देख कर उनके स्वभाव चरित्र और जीवन के संबंध में ठीक ठीक बहुत कुछ जान लेना, कोई नवीन कला नहीं है। वेदों की बात तो नहीं जानते पर पुराणों और अन्य ग्रंथों में साधु संतों और दैत्य दानवों, सज्जनों और दुष्टों, धर्मराज के दूतों और यमराज के दूतों, आदि आदि का जो विवरण देखने में आता है उसी से पता लगता है कि आकृति देख के मनुष्यों के बारे में जान लेना उस समय भी एक साधारण सी बात समझी जाती थी। महाभारत काल के पात्रों का जो वर्णन इतिहास-ग्रन्थों में मिलता है वह भी यही

बताता है और बहुत बाद में यहां तक कि कादंबरी काल में भी यह कला प्रचलित थी यह उसके पात्रों का विवरण पढ़ने से स्पष्ट प्रगट होता है। प्राचीन ग्रीस और रोम तथा मिश्र आदि देशों में भी इस कला के जानकार बहुतायत से थे और अरस्तू इसका आचार्य समझा जाता था। कहा जाता है कि ईसा काल से २५० वर्ष पूर्व टालेमी के दर्बार के प्रसिद्ध विद्वान मेलाम्पस ने इस विषय पर एक ग्रन्थ भी लिखा था। पर खैर, वह सब जो कुछ भी हो, कम से कम आज कल, और विशेष कर यूरोप और अमेरिका में तो यह एक विज्ञान ही हो गया है और वहां इस कला के कितने ही जानकार हैं तथा इस पर कितने ही ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। आधुनिक विज्ञान ने अवश्य ही इस संबंध में बहुत सहायता पहुँचाई है और खुर्दबीन के नीचे रक्खे हुए एक बाल की सहायता से उस बाल वाले का चरित्र, स्वभाव, स्वास्थ्य, जाति, और अवस्था ही नहीं बताई जा सकती बल्कि उसके माता पिता तक का भी थोड़ा बहुत हाल जाना जा सकता है।

पर इस जगह हम उतने ऊंचे शिखरों तक आपको ले जाना नहीं चाहते। यहां पर हम मनुष्य संबंधी उन खास खास और मोटी मोटी बातों के बारे में ही कुछ लिखना चाहते हैं जिनकी आलोचना द्वारा साधारण मनुष्य दूसरों के बारे में बहुत कुछ जान सकता है।

प्रायः देखा जाता है कि छोटे लड़के, और स्त्रियां भी,

लोगों की आकृति मात्र देख कर स्वाभाविक रीति से उनके बारे में कुछ धारणा अपने मन में बना लेते हैं और उसी के अनुसार चलते हैं। यही नहीं अकसर उनकी धारणाएं सही भी निकलती हैं। पर मनुष्यों में, शायद इसलिये कि अपने साधारण जीवन में नित्य ही उन्हें कितने ही प्रकार के लोगों के संसर्ग में आना पड़ता है, यह बात नहीं होती। उनका सहज-ज्ञान (इनस्टिन्क्ट) भले ही उन्हें किसी किसी मनुष्य से दूर रहना बता दे, पर साधारणतया वे इस बात पर कोई भी ध्यान नहीं देते कि वे जिस आदमी को अपने सामने देख रहे वा जिससे बातें कर रहे हैं वह किस श्रेणी का है और उससे मित्रता या संपर्क बढ़ाना कहां तक उचित है। पर इसमें संदेह नहीं कि आकृति-विज्ञान का आश्रय ले कर अगर चला जाय तो बहुत से मनुष्य उन कष्टों से बच सकते हैं जो उन्हें दूसरों द्वारा मिलते हैं।

इस कला का ज्ञान बढ़ाने का सब से सहज और स्वाभाविक उपाय है लोगों की आकृतियों को देखना और देखने मात्र से क्या क्या बात उनके बारे में समझ में आती है उसको हृदय में बैठाना। खास तौर पर अपने उन मित्रों या परिचितों की आकृति को जिनके स्वभाव, चरित्र, शील आदि के विषय में कुछ ज्ञान अपने को है, खूब ध्यान से देख उनमें क्या क्या विशेषताएं हैं इसको लक्ष्य करते रहने से कुछ ही समय बाद एक साधारण सा ज्ञान मन में बैठने लगता

है और स्वभावतः ही एक आकृति को दूसरी आकृति से मिलान करने या दो आकृतियों की परस्पर तुलना करने की इच्छा होती है। यही तुलनात्मक ढंग इस कला का ज्ञान बढ़ाने का सब से अच्छा उपाय है। पर इसमें एक अंडस भी फौरन ही नजर आ जाती है जो यह है कि संसार में इतने प्रकार की आकृतियां नजर में पड़ती हैं कि उनके 'प्रकार' ही चित्त को संशय में डाल देते हैं। साधारणतः कहा जाय तो यह भी कह सकते हैं कि किसी भी मनुष्य की आकृति किसी भी दूसरे मनुष्य से सब बातों में नहीं मिलती। आकृति तो क्या मनुष्य का कोई भी अंग प्रत्यंग एक दूसरे से मिलता नजर नहीं आता, प्रत्येक मनुष्य के हाथ, पांव, आंख, नाक, कान, यहां तक कि बाल और नाखून तक में विभिन्नता नजर आती है, किसी की कोई चीज किसी दूसरे की उसी चीज से नहीं मिलती। यह बात बहुत सही है और यहीं प्रकृति के अपार भंडार का एक छोटा नमूना दिखाई पड़ता है, पर इस बात से घबड़ाना नहीं चाहिये। उस विभिन्नता में ही समानता खोजना चाहिये, उस विचित्रता में ही तथ्य खोजना चाहिये, उस बहुलता में ही ऐक्य खोजना चाहिये। धीरे धीरे, विचार और मनन करते करते, जहां आपको विभिन्नता, वैचित्र्य या बहुलता नजर आती थी, वहीं अब एक समानता, एक नियम, एक विज्ञान दिखने लगेगा और इसी जगह से आपके इस विषय के ज्ञान की नीव पड़ेगी।

ज्यों ज्यों आपकी लक्ष्य करने की, मनन करने की, शक्ति बढ़ेगी, त्यों त्यों आप इस संबंध में नई नई बातें देखेंगे। आप देखेंगे कि केवल मनुष्यों की आकृति में ही विभिन्नता नहीं होती, उनका केवल मुंह आंख कान नाक मोंछ भौं बरौनी बाल और हाथ पांव आदि अंग ही भिन्न भिन्न बनावट के नहीं होते, बल्कि उनकी चाल ढाल, उनका रंग रूप, उनका बात करने का ढंग, हंसने का ढंग, बोलने का ढंग, चलने का ढंग, उठने बैठने का ढंग, सभी में विभिन्नता होती है। कोई दो वृद्ध एक तरह से नहीं हंसते, कोई दो युवा एक प्रकार से नहीं दौड़ते। इससे एक तरफ जहां आपके जांचने, लक्ष्य करने, ध्यान में रखने, तुलना करने, की सीमा बेहद बढ़ कर आपका काम और भी कठिन कर देती है, वैसे ही दूसरी तरफ ये ही बातें आपका ध्यान इस तरफ भी ले जाती हैं कि केवल अंग प्रत्यंग की बनावट ही नहीं बल्कि उसकी चाल ढाल रहन सहन तथा अन्य बातें भी लक्ष्य करनी होंगी यदि आप आकृति से किसी के स्वभाव और चरित्र की पहिचान करना चाहते हैं। सच तो यह है कि मनुष्य जिस जिस प्रकार के बर्ताव करता है वह उसकी आंतरिक आत्मा की छाप मात्र ही होती है, उसके चरित्र का एक नकशा भर ही होती है। किसी अनुभवी अथवा प्राचीन लेखक द्वारा लिखा कोई उपन्यास पढ़िये। आप देखियेगा कि लेखक जब कभी अपने किसी पात्र का लेखनी-चित्र खींचने लगता है तो न केवल

उसकी सूरत शकल चाल ढाल आदि का वर्णन करता है बल्कि उसका रहन सहन और बर्ताव, यहां तक उसका कपड़े पहिनने का ढंग तक अकसर बयान करता है, कैसे मौके पर उसने किस ढंग से कौन बात कही यह भी बयान करता है, कब किस तरह वह कमरे में आया या कब कैसे मकान से बाहर निकला है यह भी बयान करता है, और यह सब लिखने का कारण सिर्फ यही है कि अनुभवी लेखक जानता है कि चरित्र इन सब चीजों को मिला कर बनता है अथवा यों कहना चाहिये कि चरित्र का चित्र खींचती समय इन सभी बातों का वर्णन होना चाहिये। इस उदाहरण से आपको पता लगेगा कि आप भी अगर किसी की आकृति देख के किसी के चरित्र का हाल जानना चाहते हैं तो आपको अपने पात्र की इन सभी बातों पर लक्ष्य करना होगा।

अवश्य ही आकृति की तरह इन सभी बातों में आपको अंतर मिलेगा पर साथ साथ एक और बात भी इसके अन्दर आप पावेंगे। आप देखेंगे कि उसकी आकृति और उसके चाल ढाल में एक अद्भुत समानता है। जो बात उसकी आकृति कह रही है वही उसकी चाल ढाल और भी स्पष्ट बताती है। उसका एक टुकड़ा जिस बात को कहता है, वही उसका पूरा शरीर भी कहता है। अगर किसी को आंखों को देख कर एक खांस बात समझ में आती है मसलन यह पता

लगता है कि यह व्यक्ति दुराचारी है, तो उसके माथे, उसके होंठ, उसकी उंगलियों, उसकी हथेली की रेखायें तक उसी बात को बराबर दोहराती रहेंगी, यहां तक कि जो लोग लिखावट देख कर चरित्र पहिचानने की कला से परिचित हैं वे ऐसे आदमी के हाथ की लिखी दो पंक्तियें देख कर भी ठीक वही बात आपसे कह देंगे।

और आकृति-विज्ञान के भीतर का प्रधान अंग यही बात, यही व्यापकता है। मनुष्य की आंख नाक कान चेहरा मोहरा चाल ढाल बनावट सब मिल जुल कर एक ऐसी आकृति आपके सामने रख देते हैं कि जिसमें से कोई एक भाग अगर हटा के दूसरा रख दिया जाय तो बड़ा ही विश्री हो जायगा। यदि आप दस सुन्दर चेहरों वाले चित्रों को ले लीजिये और प्रत्येक चेहरे में जो बात सब से सुन्दर है उन सभों का समावेश एक ही चित्र के अन्दर कर डालिये तो देखियेगा कि जो चित्र बना है वह सुन्दर नहीं कुरूप हो गया है। एक सुन्दर नाक अपने उसी चेहरे में सुन्दर लगेगी, एक चेहरे की सुन्दर आंख के साथ दूसरे चेहरे की सुन्दर नाक अगर मिला दी जायगी तो वह ज्यादा सुन्दर नहीं बल्कि असुन्दर हो जायगा। अलग अलग अगर वे दसो चेहरे सुन्दर लगते थे तो एक में मिला देने पर उनमें से कोई भी सुन्दर न दिखेगा। यही प्रकृति की दूसरी विशेषता है, यानी वह हर एक वस्तु पूर्ण बनाती है, जो चीज जहां मौजूं है वही वहां रखती है, और

यही आकृति-विज्ञान की—जैसा हमने ऊपर कहा—भित्ति है।

आकृति-विज्ञान के संबंध में हमने हर एक अंग प्रत्यंग का विशेषत्व बताया, हरेक चाल ढाल, रंग रूप, बर्ताव ढंग, का गुरुत्व बताया। अब एक तीसरी याद रखने वाली बात बताते हैं। वह है—कद। मनुष्य के हरेक अंग प्रत्यंग का एक खास नाप है। नाक कान आंख मुंह हाथ पैर सीना उंगली सब का एक खास परिमाण है—जिससे लंबी या जिससे छोटी होना भी फर्क डाल देता है। इस कद या नाप पर भी आपको ख्याल रखना होगा।

एक चौथी चीज इस संबंध में खयाल रखने वाली है—स्वभाव। स्वभाव शब्द हम चरित्र के बदले में नहीं कह रहे हैं बल्कि इस संबंध में कहते हैं कि किसी खास मौके पर कोई खास आदमी किस प्रकार का बर्ताव करता है। आप एक रेल के डिब्बे में बैठे कहीं जा रहे हैं। उसमें आपके साथी यात्रियों में स्त्री भी हैं पुरुष भी हैं, युवा भी हैं वृद्ध भी हैं, भले भी हैं बुरे भी हैं। आपके सामने कोई सुन्दरी बालिका बैठी है। अवश्य ही आपकी निगाहें तो बार बार उसकी तरफ उठती ही हैं, र यदि आप थोड़ी देर के लिये अपने से अलग हो सकें और दूसरों की निगाहों को लक्ष्य कर सकें तो एक अद्भुत मनोविनोद की बात देखेंगे। जितने लोग उस सुन्दरी की तरफ देखते हैं उतने ही ढंग से देखते हैं। किसी की दृष्टि

में भूख है, किसी की दृष्टि में लालच है, किसी में वासना है, किसी में कामुकता है, किसी में स्नेह है, किसी में वैराग्य है। कोई कभी कदाच ऐसी दृष्टि भी आप देखेंगे जिसमें घोर घृणा होगी। इन विभिन्न दृष्टियों की तुलना मात्र से ही आप कितनी ही बातें इस विज्ञान की समझ सकेंगे। कामुक दृष्टि उस व्यक्ति विशेष का काम-पूर्ण चरित्र जिस प्रकार बतावेगी घृणित दृष्टि उसी प्रकार यह पुकार पुकार कर कहेगी कि इस व्यक्ति को कभी किसी सुन्दरी की बदौलत घोर कष्ट मिल चुका है और इसी से यह सुन्दरी मात्र को घृणा, संदेह, भय, की दृष्टि से देखता है। यही उस खास व्यक्ति का खास 'स्वभाव' है।

गरज कि आकृति-विज्ञान का अध्ययन अगर आप करना चाहते हैं तो आपको इन चारो चीजों पर ध्यान रखना होगा। उसके नाक कान आदि अंगों पर, उसके रंग ढंग पर, उसके अंगों के नाप पर और उसके 'स्वभाव' पर। बिना इन चारो बातों का एक साथ विचार किये आप ठीक ठीक निर्णय कर न सकेंगे। क्योंकि आकृति इन चारो के सम्मिश्रण का ही फल है। अब आगे हम इनमें से एक एक बात को अलग अलग लेकर उसके विशेषत्व का वर्णन करेंगे।

दूसरा अध्याय

बाल

कदाचित् आप इस समय पूछ बैठेंगे—"आप कहते हैं कि मनुष्यों के स्वभाव का पता उनकी आकृति को देखने से लग सकता है—मुमकिन है ऐसा होता हो, पर अगर होता है तो क्यों? प्रकृति किस लिये, किस प्रकार, अपने किस नियम से, उनके चेहरे पर उनके चरित्र की छाप लगा देती है?" ठीक है, यह सवाल उठ सकता है, और यहां हम इसका उत्तर दे के तभी आगे बढ़ेंगे।

आकृति पर स्वभाव की छाप सिर्फ एक कारण से पड़ती है—उस जीव की विचार-धारा की क्रियाओं के कारण। प्रत्येक मनुष्य जो कुछ सोचता है, जो कुछ करता है, सब उसके विचारों का परिणाम होता है और ये विचार उसके मस्तिष्क में उत्पन्न होते हैं। चूंकि मनुष्य का चेहरा स्वभावतः ही उसके अन्य अंगों की बनिस्बत मुलायम और जल्दी छाप ग्रहण कर सकने वाला होता है इसी लिये उसके विचारों

की छाप भी उसके चेहरे पर सब से अधिक पड़ती और पड़ते पड़ते गहरी जमती जाती है। थोड़े ही से अनुभव में आपने देखा होगा कि जिस तरह के विचारों में डूब कर मनुष्य बैठा रहता है उसी तरह की आकृति भी उस समय उसकी हुई रहती है। मन के आनंद में बैठे हुए व्यक्ति और चिन्तातुर बैठे व्यक्ति की आकृतियें ही उनके मन की बात स्पष्ट कर देती हैं, अस्तु जो व्यक्ति प्रायः जिस प्रकार के विचारों में डूबा रहेगा उस पर वैसे ही प्रकार की छाप भी स्थायी होती जायगी। फिर, गंभीर तौर पर देर तक विचार करने से मस्तक में बल्कि समूचे चेहरे में खून का दबाव बढ़ता है। जिस प्रकार के भाव में मनुष्य रहेगा उस प्रकार के विचारों में काम आने वाले उसके अज़ो भी वैसे ही हो जायंगे। स्वभावतः ही जो मनुष्य बहुत हंसता है उसकी आंखों के बगल में पतली पतली लकीरें पड़ जांयगी और जो स्वभावतः ही क्रोध किया करता है उसकी आकृति पर क्रोध की छाप पड़ने लगेगी। जब जब हम क्रोध घृणा लज्जा भय कामुकता या ऐसे ही किसी अन्य जबर्दस्त विकार को अपने मन या मस्तिष्क में स्थान देंगे तब तभी उस विचार की एक छाया, एक लकीर, एक दाग, चेहरे के किसी न किसी हिस्से पर भी आ पड़ेगा। शुरू शुरू में वह दाग या लकीर उस विचार के हटने के साथ साथ हट जाया करेगी पर बाद में जब वैसा ही सोचते रहने या करते रहने की आदत पड़ जायगी तो वह

लकीर या दाग भी चेहरे पर अमिट हो जायगा और यह मानों एक प्रकार की छाप प्रकृति ने उसके चरित्र की उसकी आकृति पर डाल दी। अतएव स्पष्ट हो गया कि आकृति की छाया चेहरे पर पड़ने का मुख्य कारण है मनुष्य की विचार-धारा। जैसी विचार-धारा मनुष्य की होगी वैसी ही उसकी आकृति भी बन जायगी।

अस्तु यह भी फिर स्वाभाविक ही है कि मनुष्य की आकृति देख के हम उसके बारे में बहुत कुछ निर्णय अपने मन में कर लें। चाहे किसी किसी हालत में हमारे मन की सोची हुई बात अथवा उस व्यक्ति के चेहरे से प्रगट होती हुई बात सही न निकले, पर अधिकांश जगहों में सही निकलेगी ही और इस कला को जान रखने से आपको कभी न कभी मदद मिलेगी ही। ज्ञान किसी भी बात का, किसी भी अवस्था में, बुरा नहीं है, बुरा होता या हो सकता है उस ज्ञान का प्रयोग। आप अपने ज्ञान को किस प्रकार व्यवहार में लाते हैं यही बात ध्यान में रखने और बचा के चलने की है। वायुयान बुरे नहीं, पर उनसे समुद्र में डूबते जहाज के यात्री बचाए भी जा सकते हैं और जहाज पर बम गिरा के उसे डुबाया भी जा सकता है।

अरस्तू और उस जमाने के कुछ और विद्वानों का मत था कि मनुष्य की आकृति की छोटी श्रेणी के जानवरों से तुलना कर के उनके स्वभाव के बारे में बहुत कुछ जाना जा

सकता है अर्थात् जिस मनुष्य को आकृति जिस श्रेणी के पशु से मिलती जुलती हुई होगी, उसी पशु जैसा उसका स्वभाव और चरित्र भी होगा। यह बात बहुत अंशों में आज भी सही उतरती है यद्यपि इस शास्त्र का विज्ञान इस संबंध में अब कुछ नई बातें भी कहने लगा है। भेंड़ का मुंह मूर्खता जाहिर करता है, भेड़िये का क्रूरता, शेर का बहादुरी, तेंदुए का चपलता, सियार का कपट, और इस तरह के जानवरों की सी आकृति जिनकी होगी उनका स्वभाव भी कुछ कुछ वैसा ही होगा यह बात बहुत अंशों में सही है, जैसे जिस आदमी का चेहरा कुछ कुछ सूअर की तरह हो वह बहुत ज्यादा खाता है, जिसका चेहरा शेर की तरह हो वह बहुत बहादुर होता है। ||

इसका एक दूसरा कारण भी है जो यह है कि आकृति पर छाप डालने वाली एक दूसरी वस्तु होती है उस मनुष्य का शारीरिक डील डौल। बहादुरी, हिम्मत, मर्दानगी, यह सब चौड़ें सीने और बड़ी छाती से सम्बन्ध रखते हैं। चौड़े सीने वाले आदमी हिम्मती होते हैं, गंभीर होते हैं, ठंडे मिजाज के होते हैं, कम बोलने वाले होते हैं, ताकतवर भी होते हैं। इसके विपरीत सकरी छाती और पतले सीने वाले किसी मनुष्य को लीजिये, वह डरपोक होगा, कायर होगा, जल्दीबाज होगा, उसकी चाल में आशंका छिपी होगी, उसकी सांस जल्दी जल्दी आने जाने वाली होगी—और ये ही दोनों विभिन्न

बातें आगे चल कर उनके विभिन्न आकृति रखने का कारण बन जाती हैं। (चौड़े सीने तथा गहरी छाती वाले आदमी का फेफड़ा बड़ा होता है और वह गहरी सांसें ले सकता है, इसी से उसका स्वास्थ्य भ अच्छा होता है और वह मजबूत होता है। वह धीरे धीरे काम करता है फलतः शान्त रहता है। वायु छाती में ऊपर से जाती है और फेफड़े में पीठ की तरफ से घुसती है, अस्तु छाती बड़ी होने से फेफड़ा बड़ा होता है, फेफड़ा बड़ा होने से स्वास्थ अच्छा रहता है, स्वास्थ अच्छा हो तो शक्ति भी अधिक रहती है, और यही सब ऐसे मनुष्य के हिम्मती और बहादुर होने का कारण बनता है। इस संबंध में एक साधारण और याद रखने लायक नियम यह है कि हिम्मत और बहादुरी जितनी अधिक होगी, सांस उतनी ही कमती देर पर और गहरी ली जायगी। इसका उलटा जितनी जल्दी जल्दी और छोटी छोटी सांसें ली जायंगी हिम्मत बहादुरी और ताकत उतनी ही कम होगी। बहादुर आदमी कोई हिम्मत का 'काम करने उठेगा तो गहरी और लंबी सांस भर के उठेगा, इसके विपरीत डरपोक आदमी अगर वैसा ही कोई काम करने उठेगा तो जल्दी जल्दी सांसें लेकर अपने में हिम्मत भरने की कोशिश करेगा। इसका एक कारण यह भी है कि डर जल्दी जल्दी सांस लेने पर मजबूर करता है। इसी लिये हिम्मती आदमी का सीना चौड़ा होता है, डरपोक का

सकरा, और यही कारण है कि हिम्मती आदमी का चेहरा फूला फाला शेर की तरह हो जाता है और डरपोक का सूखा साखा सियार की तरह।)

कुछ और बातें भी इस संबंध में मार्के की और याद रखने लायक हैं। डरपोक, जल्दी जल्दी और छोटे छोटे कदम रखते हैं। कमजोर और डरपोक जानवर अकसर सकरे सीने वाले, हलके बदन और पतली टांगों वाले, साथ ही तेज दौड़ने वाले होते हैं। जैसा उनका स्वभाव होता है वैसा ही उनका शरीर भी हो जाता है। चूंकि उन्हें दौड़ के अपने शत्रु से बचना है इस लिये वे दुबले पतले और हलके होते हैं, दुबले इसलिये कि हवा उनकी गति में बाधा न दे, हलके इसलिये कि उनकी टांगें उन्हें देर तक और फुर्ती से ले जा सकें। हिरन या बकरी को चलते हुए देखिये, और शेर या हाथी को भी, दोनों की चाल का फर्क साफ मालूम हो जायगा और साथ ही यह भी पता लग जायगा कि कौन किस स्वभाव का है।

इन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि जानवर की आकृति उसके स्वभाव के अनुकूल होती है और इस बात का कारण है उनका जीवन-युद्ध तथा शत्रुओं से उनके बचने या शत्रुओं को मार कर खाने की उनकी शक्ति का प्रकार। खरगोश डरपोक जानवर है—इसी लिये प्रकृति ने उसको दुबला पतला और हलका बना दिया, साथ ही उसके पैर इतने

मजबूत दे दिये कि वह देर तक दूर तक और फुर्ती से दौड़ सके। उसके कान लंबे होते हैं—क्यों? यह हम आगे चल कर जब कान का जिक्र आयेगा तब बतावेंगे, पर खरगोश की प्रकृति ही हो जाती है कि जरा सा खटका हुआ और बस नौ दो ग्यारह। उधर शेर या हाथी को देखिये। भारी भड़कम, मजबूत, गंभीर, चौड़ी छाती, मोटे सीनेवाले। इनको कोई खटका पड़े तो फौरन रुक जायेंगे, गौर से उधर देखेंगे, और भरसक तो खतरे की कोई बात मालूम पड़ी तो फौरन उसी तरफ को टूट पड़ेंगे। दोनों की आकृति से ही दोनों के स्वभाव और चरित्र का पता स्पष्ट लग जाता है।

स्वास प्रश्वास, सांस लेना—जीवन का मुख्य आधार है। इससे शरीर के भीतर जीवन-ज्योति जगती रहती है। जब सांस बंद हो जाता है—प्राणी मर जाता है, जीवन-ज्योति बुझ जाती है। सब प्रकार की शक्ति गर्मी से ही उत्पन्न होती है और यह गर्मी मुख्यतः सांस द्वारा मिलती है। इसी लिये जो चीज हमारे शरीर के भीतर की गर्मी भीतर ही रखने में सहायक हो वह हमारे प्राणों की रक्षक भी होगी यह स्पष्ट ही है, और इस काम में एक वस्तु समान भाव से सब पशुओं में क्रिया करती देखी जाती है जो है—बाल।

बाल, रोंए, पशम, खाल, या पंख, चाहे जो भी कहिये या जिस प्रकार के भी देखिये, इन्हें सभी पशुओं पर आप पावेंगे और सभी में इन्हें आप उस पशु की जीवन-ज्योति की रक्षा

करते हुए यानी उसके बदन की गर्मी बदन के अंदर बचा कर रखने के काम में लगे हुए देखेंगे। चाहे चौपाए हों चाहे दोपाए, और चाहे उड़ने वाले हों या चलने वाले, पर सभी पशुओं के शरीर पर न्यूनाधिक मात्रा में यह चीज—बाल—आप देखेंगे। इस बाल की दो एक अन्य विशेषताएं भी याद रखने योग्य हैं। पहिली तो यह कि इनमें स्पर्श-शक्ति नहीं होती और ये घास जैसी चीज होती हैं, यानी इन्हें काटिये दबाइये या मोड़िये, इससे प्राणी के शरीर को कोई आघात नहीं पहुँचता, केवल नोचने से जड़ में कुछ तकलीफ होती है। दूसरी विचित्रता यह कि प्राणी मर जाए तब भी, उसके प्राण निकल जांय तब भी, ये बढ़ते रहते हैं। जब तक प्राणी का शरीर एक दम सूख साख के ठठरी न हो जाय तब तक बाल अपने पोषण की चीजें उस शरीर से लेते और बढ़ते रहेंगे, फिर चाहे वह प्राणी जिसके शरीर पर वह है मरा हो या जिन्दा।

(यह बाल जीव को प्रकृति ने उसकी शक्ति, एनर्जी, की रक्षा के लिये दिया है, अतएव जिसके शरीर पर जितना अधिक बाल आप देखें, समझ लें कि वह उतना ही अधिक बलशाली है।) सब से जंगली, सब से खूंखार, पोस न मानने में सब से अधिक जिद्दी जो पशु होगा वह उतना ही मोटे, गझिन, कड़े बालों से ढंका हुआ होगा। शेर सिखाने से, फुसलाने से, समझाने से, पोस मान जायगा और सरकस में खेल करेगा,

पर जंगली भैंसा कभी पोस न मानेगा। किसी जंगली भैंसे को कभी किसी सरकस में खेल करते आप न देखेंगे। कमतो बाल वाले कितने ही अन्य पशुओं के उदाहरण भी आपको याद आ जावेंगे जो सरकसों में अपना खेल दिखाते हैं, पर अधिक बाल वाला कोई भी न दिखेगा। भालू या बनमानुस के शरीर पर भी बाल होते हैं और ये भी अकसर खेल करते दिखते हैं पर इनके रोएं मुलायम और छोटे होते हैं, विपरीत इसके, जंगली भैंसों के बाल बहुत ही कड़े, बहुत ही गझिन, बहुत ही मोटे, और बहुत ही लंबे होते हैं। ऊंट, हाथी, बैल, घोड़े, गधे इनके शरीर पर बाल एक दम नहीं के बराबर हैं, इसी से संसार में इन्हीं पशुओं को सब से ज्यादा काम करने वाले, परिश्रमी, और पोस मानने वाले आप देखेंगे, मनुष्य के सब से बड़े सहायक पावेंगे।

इन उदाहरणों का आशय स्पष्ट है। मनुष्यों के शरीर पर भी बालों का वही असर है जो पशुओं के, यानी जिस मनुष्य के शरीर पर जितने ही अधिक बाल आप देखें, जिसके बालों को जितना ही अधिक संख्यक, कड़े, बड़े बड़े, पावें, समझ लीजिये कि वह मनुष्य उतना ही अधिक शक्तिशाली कठोर और परिश्रमी है। क्यों? यह हम आगे चल कर बतावेंगे। ऊपर हमने इतना बताया कि जीवों के शरीर में बाल प्रकृति ने उनकी शक्ति की रक्षा के लिये दिये हैं। अब यहां हम यह बताना चाहते हैं कि मनुष्यों के शरीर पर के

भिन्न भिन्न प्रकार के बालों से क्या तात्पर्य निकलता है अथवा निकालना चाहिये।

अवश्य ही बाल अन्य जीवों के शरीर पर जो कुछ बताता है वही मनुष्य के शरीर पर भी बतावेगा, अर्थात् जिस तरह जंगली भैंसा बहुत बड़े और कड़े कड़े बालों वाला जीव होने के कारण बहुत ही बली और कठोर होता है उसी प्रकार जिस मनुष्य के सिर शरीर और सर्वाङ्ग पर बड़े बड़े और गझिन बाल हों, समझ लेना चाहिये कि वह बहुत ही कठोर-कर्मी है, और इसके विपरीत जिसके बाल बहुत ही कम या हलके या मुलायम हों, उसके विषय में समझ लेना चाहिये कि वह नाजुक प्रकृति का अथवा कमजोर है। इसी से यह बात भी समझ में आ जाती है कि संसार में जो तलवार के धनी हो गये हैं जैसे नेपोलियन, सीजर, या सिकंदर, उनके बालों में, और जो चतुरता में, राजनीतिक दांव पेंचों में, या दगाबाजी में, बाजी मार ले जाने वाले हैं, जैसे रूशो, लायड जार्ज, या क्लाइव, इनके बालों में क्या अंतर होगा। बीर लोग, शूरबीर लोग, बड़े बड़े और गझिन बालों वाले होंगे, चतुर लोग, राजनीतिज्ञ लोग, छोटे, हलके, पतले, कमती बालों वाले होंगे। इस अंतर को ध्यान में रख कर अब आप अपनी परिचित मंडली या मित्र मंडली पर एक दफे निगाह डालें। आप देखेंगे कि अकसर (सब अवस्थाओं में नहीं क्योंकि अन्य चिन्हों के प्रभाव भी मनुष्य पर पड़ते रहते हैं)

जो लोग बड़ी बड़ी दाढ़ी मोंछ और गलमुच्छों या जटाजूट वाले हैं वे सीधे पर बहादुर होंगे और जो लोग चिकने चुपड़े सफाचट खोपड़ी या टापकटौवा दाढ़ी वाले हैं वे चतुर, धोखेबाज, और चालबाजी से काम निकाल ले जाने वाले होंगे। इसी का एक दूसरा नतीजा यह भी निकलता है कि जो लोग कमती या हलके बालों वाले होंगे वे सफल व्यापारी या कार्यकर्ता होंगे और जो ज्यादे बाल वाले होंगे वे पास की रकम भी अकसर गंवा चुके होंगे—कारण? बस वही चतुरता का अभाव!

मगर इस जगह शायद कोई पूछ बैठे—अगर यही बात है तो आज दिन दुनिया में बड़े बड़े और गझिन बाल रखने वाली जितनी जातियां हैं वे सभी गुलाम क्यों हैं और कमती या हलके बालों वाली जातियां प्रभुताशाली क्यों? अफ्रिकन, भारतीय, चीनी, ये सभी जातियां बड़े और गझिन बाल वाली हैं और इसी लिये इन्हें पराक्रमी और शूरबीर होना चाहिये, पर अंग्रेज, फ्रान्सीसी, जर्मन ये सभी कमती बालों वाली जातियां हैं जो आज संसार पर राज्य कर रही हैं। ऐसा क्यों फिर?

यदि आप कुछ भी विचार करेंगे तो समझ लेंगे कि इसका कारण क्या है। बात यह है कि संसार में विजय या प्रभुत्व सदा बल से ही नहीं मिलता, अकसर यह मिलता है चतुरता से, चांगलेबाजी से। भारतीय चीनी या अफ्रीकन, बहादुर और परिश्रमी भले ही हों, पर इनमें बुद्धि और चतुरता की

बली होने के कारण सब अपने से अपेक्षाकृत कम बलशाली पर अधिक चालाक जातियों के गुलाम बने हुए हैं। इस बात के अधिक उदाहरण हम न देंगे, आप सोचेंगे तो स्वयम् ही कितने ही उदाहरण आपकी निगाह में आ जावेंगे। बस इतना आप समझ लीजिये कि दुनिया में सर्वत्र और सर्वदा शरीर की शक्ति ही काम नहीं देती, ज्यादातर देती है मस्तिष्क-शक्ति, और ऐसा आज ही नहीं सदा से ही होता आ रहा है। संसार कभी कदाच् ही बली के पैरों तले रौंदा जाता है, अकसर वह चतुर के पैरों की ही जूती बनता है।

खैर, तो इन बालों की बात से इतना तो आप जान ही गये कि अधिक बाल शक्ति का और कम बाल बुद्धि का चिन्ह है। अब जरा देर के लिये यह भी विचारिये कि कम बाल और बुद्धि के बीच में क्या संबंध है। मनुष्य के शरीर में बुद्धि और विचार का जो स्थान है यानी सिर, वहीं पर आप देखेंगे कि सब से अधिक बाल उगे हैं पर पशुओं के शरीर में इसका उलटा होता है। वे सिर से उतना काम नहीं लेते जितना अपनी छाती से, अपने पुट्ठों से, या अपने पैरों से, और इसी लिये अकसर जानवरों का सीना, कंधे, पैर, बालों से ढंके आपको मिलते हैं। उनके सिर अपेक्षाकृत छोटे होते हैं और बहुत कड़ी हड्डी के भीतर दबे होते हैं, कारण वे अकसर सिरों से ही युद्ध करते हैं। प्रायः सभी पशुओं के सींघ सिर में होते हैं और ये सींघ ही उनके मुख्य अस्त्र हैं। जिन्हें बल की

अधिक आवश्यकता है उन्हें प्रकृति बली बनाती है, जिन्हें बुद्धि की अधिक आवश्यकता है उन्हें बुद्धिशाली बनाती है। मनुष्यों और पशुओं में यही अंतर है। जिन अंगों में बल की आवश्यकता है उन्हें अधिक शक्ति यानी गर्मी देना भी जरूरी होता है, इसी से जहां पशुओं के अन्य अंगों में बाल ज्यादे होते हैं वहां मनुष्यों के सिर में ज्यादा होते हैं, और यही इस बात को जाहिर करता है कि मनुष्य का प्रधान अस्त्र बुद्धि है और पशु का शारीरिक बल।

अब बालों संबंधी एक तीसरी बात पर गौर कीजिये—उनकी लंबाई। यह लंबाई भी हर जाति में एक सी नहीं होती। निग्रो लोगों के सिर के बाल छोटे होते हैं, अंग्रेजों के लंबे। निग्रो जाति बुद्धि में कमजोर है, अंग्रेज अधिक बुद्धिशाली। अतएव बालों की लंबाई से बुद्धि की अधिकता समझना भी स्वाभाविक है। इससे यह भी पता लगता है कि जिन मनुष्यों के बाल लंबे होते हैं वे दयालु शान्त चित्त और विचारशील होते हैं, तथा जिनके छोटे होते हैं वे जल्दी क्रुद्ध हो जाने वाले, बिना सोचे काम करने वाले, और चिड़चिड़े मिजाज वाले होते हैं।

मगर सिर्फ बालों की लंबाई पर ही रह मत जाइये, अभी इस संबंध की कुछ और भी बातें विचारणीय हैं। चतुर डाक्टर रोगी की केवल एक ही बात देख के रोग-निर्णय या दवा का निर्णय नहीं करता। वह रोगी की नाड़ी ही भर

नहीं देखता, वह उसकी जीभ देखता है, आंख देखता है, पेट देखता है, हाथ पांव देखता है, न जाने कितने कितने सवाल करता है और तब किसी निर्णय पर पहुँचता है। अस्तु आप भी केवल किसी के बालों की सघनता या कमी, अथवा उनका छोटापन या लंबापन देख के ही सहसा कुछ निर्णय न कर डालिये। आप इस बारे की कुछ और बातें भी पहिले जान लीजिये तभी कोई बात स्थिर रूप से कहने योग्य आप होंगे। इन अन्य बातों में से पहली है बाल की किस्म— अर्थात् वह कैसे ढंग का है, पतला है कि मोटा, कड़ा है कि मुलायम, काला है कि भूरा, या सफेद या लाल या अन्य रंगों का।

बाल का काला रंग ताकत की सूचना देता है। यह रंग पैदा होता है लोहे से। जिसके शरीर में लोहे का अंश अधिक होगा उसका बाल भी अधिक काला होगा। लोहा सभी प्राणी के शरीर के लहू में रहता है, और यह जरूरी है कि जब शरीर के रक्त में लोहे की प्रचुरता होगी तो वह रक्त बलशाली हो के शरीर को भी बलशाली बनावेगा। आखिरकार रक्त ही तो जीवन है। जिसका रक्त पुष्ट होगा वही तो बली होगा। इसी तरह मुलायम बाल मधुरता और कड़े बाल कठोरता सूचित करते हैं। पतला बाल कलानिपुणता, मोटा बाल शक्ति की प्रचुरता बताता है।

इस संबंध में वैज्ञानिकों का कहना है कि बाल और पेड़ पौधों की पत्तियों के बीच में बड़ी समानता है। जिस तरह

पेड़ के पत्तियों को अगर धूप हवा पानी आदि पूरा न मिले तो वे पीली पड़ कर मुरझा जाती हैं, वही हालत बालों की भी है। बालों को काफी गिजा न मिले तो वे भी मुरझा जाते हैं। ठंढे मुल्कों में रहने वाले या कड़ी टोपियां पहिनने वालों के बाल अक्सर इसी लिये पतले और कम हो जाते हैं, और ज्यादा दिमागी काम करने वालों के बाल भी इसीलिये उड़ जाते हैं, क्योंकि उस हालत में बाल की जो स्वाभाविक गिजा थी वह मस्तिष्क के अंदर दूसरी तरफ खिंच जाती है। इसीलिये जिसका सिर सफाचट हो उसके बारे में यह भी समझ लेना जरूरी है कि वह दिमागी काम ज्यादा करता है।

इस संबंध में एक बात और भी कह देना जरूरी है। यद्यपि आज कल के फैशन के यह बिल्कुल ही खिलाफ पड़ता है फिर भी यह मान ली गई हुई बात है कि सिर और दाढ़ी मोंछ के बाल बड़े बड़े रखने से शरीर का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। प्रकृति कोई काम व्यर्थ या बेमतलब नहीं करती। अगर उसने मनुष्य के शरीर पर, या दाढ़ी होंठ और सिर पर, बाल दिये हैं तो किसी मतलब से ही दिये हैं। इन्हें अगर हम व्यर्थ रोज काट-काट कर फेंक दिया करें तो अवश्य ही यह हानि-प्रद होगा। अतएव यह समझ लीजिये कि अगर स्वास्थ्य अच्छा और शरीर बली चाहते हैं तो बालों की रक्षा कीजिये और उन्हें बड़े हो जाने दीजिये।

अब भिन्न भिन्न प्रकार के बालों से क्या तात्पर्य निकलता है वह हम बताते हैं।

कदाचित संसार के किसी भी और जीव के शरीर के बालों में उस तरह की विभिन्नताएं नजर नहीं आतीं जैसा कि मनुष्य के बालों में। प्रकृति ने मनुष्य के बालों को पचासों ही तरह की किस्में दे रक्खी हैं और विचित्रता तो यह है कि उन सभों का ही मतलब अलग अलग है।

बालों में यह तरह तरह का रंग क्यों पैदा होता है? इसका कारण यह है कि सूर्य से जो सुफेद रोशनी हम लोगों को मिलती है वह वास्तव में सात तरह के रंगों के सम्मिश्रण से बनी हुई है और ये ही सातो रंग संसार में सब जगह तरह तरह के अन्य रंग उत्पन्न करने के कारण होते हैं। भिन्न भिन्न तरह के पदार्थों में भिन्न भिन्न रंग ग्रहण करने की क्षमता होती है, और जो पदार्थ जिस तरह का वा जैसा रंग ग्रहण करता है खुद भी वह उसी रंग का होने लग जाता है। मनुष्य के बालों में भी जो कई तरह के पदार्थ और तेल हैं वे सभी सूर्य किरणों से भिन्न भिन्न तरह के रंग ग्रहण करते फलतः खुद भी उसी रंग के हो जाते हैं। ये पदार्थ और तेल हर मनुष्य या हर जाति के बालों में एक प्रकार के नहीं होते और यही भिन्न भिन्न मनुष्य या भिन्न भिन्न जाति के बालों का रंग अलग अलग होने का कारण है। हिन्दुस्थानी आदमी का बाल अफ्रिकन आदमी से नहीं

मिलता या इटालियन का बाल अंग्रेज से नहीं मिलता इसका यही कारण है। बालों में रंग पैदा करने का मूल जो वस्तुएं होती हैं वे शरीर से ही वहां जाती हैं इसलिये यह मानी हुई बात है कि भिन्न भिन्न शरीरों में भिन्न भिन्न प्रकार के पदार्थ कम बेश रहने से ही बालों में भी उन पदार्थों की कमी बेशी होती है और इसी से बालों का रंग भी दूसरा दूसरा हो जाता है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि वे ही पदार्थ एक तरफ जहां बालों का रंग दूसरा दूसरा करने के कारण बनते हैं वहां वे ही शरीर के अन्य भागों पर भी जरूर कुछ न कुछ दूसरा असर अवश्य करते होंगे। मिसाल के लिये ले लीजिये—कि काला बाल खून में लोहे का अंश अधिक रहने के कारण होता है, और यही लोहा लहू में अधिक रहने से लहू बलवान फलतः वह व्यक्ति बलवान होता है। इसी से जिसे घोर काले बालों वाला देखिये समझ लीजिये कि वह पुष्ट और सबल देह वाला भी है, अस्तु।

बाल यों तो अकसर बहुत रंगों के देखने में आते हैं, पर मोटे तौर पर काले, भूरे, लाल, कत्थई, सुनहरे और फीके रंग के अधिक होते हैं और इन सभी रंगों का भिन्न भिन्न मतलब लगाया जा सकता है।

जैसा कि हमने ऊपर कहा, काला बाल शक्ति का सूचक है, पर इसके अंतर्गत कुछ और किस्में भी आ जाती हैं। अगर इस तरह का बाल एक दम सीधा लंबा रूखा और

बहुत ही गाढ़े काले रंग का हो तो समझ लेना चाहिये कि वह आदमी जिसका ऐसा बाल है बहुत ही बुझी हुई तबीयत का, हमेशा दुःखदाई विचारों में डूबा रहने वाला, और उदास प्रकृति का होगा, पर वे ही गाढ़े काले बाल अगर घुंघराले हों, लच्छेदार हों, ऐंठे हुए या बल खाए हुए हों, तो (खास कर अगर उस आदमी की नाक तोते की तरह घूमी हुई सी है) वह व्यक्ति प्रेमी स्वभाव और मौजी तबीयत का, सहानुभूतिपूर्ण हृदय रखने वाला, कभी कभी चंचल और रागी प्रकृति का, पर अकसर दृढ़ निश्चय वाला होगा। ऐसे आदमी को क्रोध जल्दी आवेगा, पर उतर भी जल्दी ही जायगा, क्षमा करने को यह सदा तैयार रहेगा, किसी से गहरे तौर पर बुरा कभी न मानेगा, किफायतशार होगा, और चाहे कभी कभी रंगीली तबीयत वाला भी हो पर साधारणतः विचारपूर्ण प्रकृति का ही होगा। ऐसे बालों वाले व्यक्ति पर (यदि कोई बाहरी प्रभाव उस पर न आ पड़ा हो तो) भरोसा किया जा सकता है।

यह तो हुई बहुत ही गाढ़े काले रंग के बालों की बात, अब जरा हलके काले रंग के बालों पर आइये, वे बाल जो कुछ कुछ भूरे और काले मिश्रित रंग के होते हैं। इनमें भी दो किस्में हो जाती हैं। एक बाल तो बहुत ही हलके रंग के होते हैं, दूसरे कुछ गाढ़े रंग के, यानी हलके काले और गाढ़े काले। इनमें से हलके काले रंग वालों की प्रकृति चंचल, विचारों में ही गोते खाते

रहने वाली, दिवास्वप्न देखने वाली, और असंतोषी होती है। वे अकसर सदैव ही कुछ एक अभाव सा अनुभव करते रहते हैं, ऐसा अभाव जिसे वे खुद ही निर्णय नहीं कर पाते कि किस चीज का है। ऐसे लोग अकसर धार्मिक प्रवृत्ति के भी होते हैं पर दृढ़ता की कमी के कारण वे स्थिररूप से इधर भी नहीं झुक पाते सदा डगमगाते ही रहते हैं। ऐसे बाल अगर किसी बहुत ही गोरे रंग के साथ मिलें तो समझ लेना चाहिये कि उस व्यक्ति में दृढ़ता की बहुत बड़ी कमी है। ऐसे लोग कभी किसी बात पर जम के नहीं लग सकते और उन्हें जब चाहे जिधर को 'बहकाया' जा सकता है।

अब जरा गाढ़े काले रंग पर आइये। इसके अन्दर भी यद्यपि साधारणतया कई किस्में आ जाती हैं फिर भी मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि ऐसे बाल वालों पर (खास कर अगर ये बाल घुंघराले या लच्छेदार हों तो) विचारों का प्रभाव बहुत बड़ा पड़ता है, ये बड़ा फूंक फूंक कर, सोच सोच, कर कदम रखने वाले होते हैं, घूमने फिरने के शौकीन, कुछ कुछ फिजूलखर्च, और अच्छे स्वभाव के होते हैं। इनकी तबीयत औपन्यासिक ढंग की होती है, पर एक बात स्थिर कर लेने बाद ये उस पर दृढ़ हो जाते हैं।

एक बात इन बालों के बारे में और ख्याल रखने की है जिसे बता कर तब हम बालों के विषय की अन्य बातों पर आवेंगे। ऊपर जो हमने मोटी मोटी चार श्रेणियें बालों की

बताईं उनमें उन बालों की बनावट का असर भी याद रखने लायक होता है अर्थात् वह बाल है कैसा? पतला है कि मोटा, मुलायम है कि कड़ा, लंबा है कि छोटा। अगर मुलायम पतला नाटा बाल हो तो कुछ कुछ जनानी तबीयत, विनोदी प्रकृति, दूसरों से मिलते जुलते रहने की इच्छा, और दूसरों को प्रसन्न रखने की चेष्टा प्रगट होती है। ऐसे लोग स्त्रियों के संग बहुत जल्दी घुल मिल जाते हैं, इनका स्वास्थ्य साधारणतः अच्छा होता है, ये जल्दी बुड्ढे नहीं होते, लड़के बच्चों से प्रेम करते हैं और विनीत नम्र तथा उपकारी स्वभाव के होते हैं। अकसर ऐसे लोगों को क्रोध जल्दी आ जाता है और इनकी अगर कठोर और विरुद्ध समालोचना की जाय तो ये अत्यंत दुःखी भी हो जाते हैं, पर इसका कारण यह नहीं होता कि इनमें हिम्मत या लड़ने की शक्ति की कमी है, बल्कि यह समझना चाहिये कि दूसरे को अपने ऊपर प्रसन्न नहीं कर सके यही दुःख इन्हें सताने लगता है। यह तो हुई मुलायम बालों की बात, ऐसे ही बाल अगर कड़े और मोटे हों तो इसका असर बिल्कुल उलटा होता है, अर्थात् उस तरह के लोग लापरवाह, दूसरों के मत और राय या उपदेश की बिल्कुल परवाह न करने वाले, स्वतंत्र प्रकृति, और अकेले में ही आनंद मानने वाले होते हैं।

अवश्य ही एक और भी बात इस जगह आपको समझ लेनी चाहिये। खाली बालों ही का रंग रूप देख के आप

अपना अंतिम निर्णय न कर डालिये। शरीर में और भी कितने ही चिन्ह ऐसे हैं जिन सभों का विचार करके तभी कोई आखिरी मत या निर्णय करना उचित है क्योंकि मनुष्य शरीर के भिन्न भिन्न सभी अवयव अपनी अपनी कहानी अलग अलग कहते रहते हैं और सब की बातें सुन के ही कोई अंतिम राय कायम करना ठीक होता है। इसका प्रधान कारण यह है कि प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य के शरीर पर इतने प्रकार के प्रभाव पड़ते रहते हैं कि जिसका अंत नहीं। सभों का सामूहिक विचार करना चाहिये और तभी जो कुछ निर्णय किया जायगा वह सही हो सकेगा।

बालों की कुछ किस्में और भी हैं जो यद्यपि प्रधानतः पश्चिमीय और शीत प्रधान देशों में ही अधिक नजर आती हैं फिर भी यहां हमारे देश में कभी कभी दिखलाई पड़ जाती हैं। उनके बारे में भी कुछ मोटी मोटी बातें समझ लेना उत्तम है।

इनमें से प्रधानता भूरे ही रंग की है क्योंकि अकसर काले बालों के बाद भूरे बाल वालों का ही नंबर अधिक है। इस भूरे रंग की भी कई श्रेणियां हो सकती हैं अर्थात् हलका भूरा, गाढ़ा भूरा, लाल मिश्रित भूरा, और काला मिश्रित भूरा, पर मोटे तौर पर यह समझ लेना चाहिये कि भूरे बाल वे ही होते हैं जिनमें थोड़ा या बहुत लाल रंग का सम्मिश्रण काले रंग के साथ हो। जितनी लाली ज्यादा होगी उतना ही भूरा-

पन अधिक झलकेगा, बल्कि कभी कभी तो साफ लाल रंग के भी बाल दिखने में आते हैं यद्यपि बहुत कम। अस्तु भूरे बालों का जिक्र होते ही समझ लेना चाहिये कि इन बालों के भीतर कहीं और किसी परिमाण में लाली छिपी हुई है।

जिस तरह काले रंग के बालों का एक सीधा सादा मोटा गुण हमने बता दिया वैसा ही एक इस लाल रंग के बारे में भी बताते हैं। ज्योतिष के मत से लाल रंग मंगल ग्रह का चिन्ह है अतएव लाल बालों की भी आप वही प्रकृति समझ लीजिये। यह लाल रंग हिम्मत और बहादुरी दिखाता है, पर साथ ही साथ घमंड, दूसरों को तुच्छ समझना, अविश्वास, निरादर आदि भी प्रगट करता है। बालों की ललाई का कम या बेशी मात्रा पर ही ये बातें मुनहसिर हैं, पर यह जाने रहना चाहिये कि साधारणतया यह रंग पाशविक शक्ति, का सूचक है जो अगर अच्छी तरफ लगा दी जाय तो अच्छी और बुरी तरफ लगा दी जाय तो बुरी सिद्ध होगी। इस तरह के बालों का गुच्छेदार या लच्छेदार होना, सीधा होना, मोटा या पतला होना, कड़ा या मुलायम होना आदि आदि लक्षण वे ही बातें बतावेंगे जो हम ऊपर काले बालों का जिक्र करती समय इस संबंध में आपसे कह आए हैं।

यद्यपि यह पश्चिमीय देशों की ही चीज है और भारतवर्ष में यह रंग प्रायः नहीं ही देखने में आता, फिर भी एक तरह का बाल होता है जिनको सुनहला कहा जा सकता है। इसकी प्रकृति

भी कुछ कुछ वही समझनी चाहिये जो लाल बालों से प्रगट होती है, पर इस रंग के साथ अकसर हिम्मत जिद्द और अपनी बात को ऊपर रखने की इच्छा, साथ साथ कुछ झगड़ालूपना और जान बूझ कर लड़ पड़ना प्रगट होता है। लेकिन अगर यह रंग कुछ काला या भूरापन लिये हुए हो तो इससे बहुत मनोबल भी सूचित होता है। अगर ऐसा बाल बहुत मुलायम, बहुत पतला या बहुत लंबा हो तो उससे जनानपना जाहिर होता है, पर यही खुशमिजाजी और प्रसन्नता का भी चिन्ह है तथा इससे लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करने की एक प्रवृत्ति प्रगट होती है।

शुद्ध लाल बाल भी यद्यपि बहुत कम देखने में आता है फिर भी एक दम अलोप नहीं है, किसी किसी सिर पर दीख ही जाता है। इससे गर्मी—स्वभाव की गर्मी, चरित्र की गर्मी, दोस्ती की गर्मी, और दुश्मनी की गर्मी, जाहिर होती है। ऐसे लोग जो कुछ करते हैं पूरे जोश से करते हैं, और इन बालों वालों से चुप शान्त बैठे रहना नहीं बन पड़ता। इन लोगों के हृदय में कवित्व और प्रेम अकसर पाया जाता है। अगर बहुत ही गोरे रंग के साथ ये बाल हों तो इनसे कल्पना-प्रियता, प्रेम, गायन वादन आदि कला, इत्यादि प्रगट होती है। ये ही बाल यदि बलदार हों तो कवि-कल्पना और आदर्शवादिता के सूचक हैं।

उपरोक्त सब रंगों के बारे में एक साधारण नियम यह

याद रखना ठीक है कि जितना हलका रंग उतना ही कम शक्ति, प्रभाव, और मनोबल, तथा जितना ही गाढ़ा रंग उतना ही अधिक ये तीनों चीजें समझ लेनी चाहियें। यही बात मानसिक शक्ति के बारे में भी समझिये। जितने ही गाढ़े रंग के बाल होंगे, मानसिक शक्ति भी उतनी ही अधिक होगी और जितना ही हलका रंग होगा मानसिक शक्ति उतनी ही कम होगी। चरित्र गठन के बारे में यही बात बहुत कुछ लागू है।

कभी कभी काले और लाल मिश्रित यानी कत्थई रंग के बाल भी नजर आते हैं। उपरोक्त नियम उन पर भी ठीक [illegible] तरह लागू होते हैं। तब इतना है कि इन बालों में कुछ काले रंग का मिश्रण अधिक होने के कारण ये अ[illegible]सिक और शारीरिक बल तथा चैतन्य के सूचक हो[illegible]

एक तरह के बाल होते हैं जिनका रं[illegible] कहा ही नहीं जा सकता, वे न काले हैं [illegible] सुनहले। एक तरह पर इन्हें फीके रंग का [illegible] सकता है। इनके बारे में भी उपरोक्त नियम ठीक [illegible]ता है। अर्थात् जितना ही यह रंग हलका होगा उत[illegible] सब प्रकार की शक्तियों की कमी समझनी होगी। जैसा कि हमने बार बार कहा, गाढ़ापन सदा बल का सूचक और हलका पन उसकी कमी प्रगट करता है।

अब कुछ आखिरी बातें बालों के बारे में और बता कर

हम इस अध्याय को समाप्त करेंगे। बालों का कड़ापन और मुलायमपन भी अच्छा खासा मतलब रखता है। मुलायम बाल जनानापना जाहिर करते हैं, कड़े बाल मर्दानगी। अगर रेशम के ऐसे चमकीले ये मुलायम बाल हों तो ऐसा व्यक्ति झगड़ा टंटा, कलह, और शोर गुल बिल्कुल नापसंद करता है। ऐसा व्यक्ति बहुत जल्दी आतुर हो जाने वाला, जरा सी विपत्ति में रो देने वाला, बहुत जल्दी हिम्मत छोड़ देने वाला होता है। किसी की दुःख गाथा सुन के, अच्छा भजन या गाना सुन के, पत्रों में कोई दुःखदाई संवाद पढ़ के ऐसे व्यक्ति की आंखों में अक्सर आंसू आजाते हैं। ऐसे व्यक्ति बहुत कल्पना-प्रिय भी होते हैं।

तार की तरह कड़े बाल शक्ति और आत्म-विश्वास प्रगट करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने अंदर आपही डूबे रहते हैं, न जल्दी अपना भेद किसी को बताते हैं, न दुःख। बाल कड़े तो हों पर पतले हों, तार की तरह न हों तो कोमलता, सौहार्द्र, प्रेम, सहानुभूति, या ममता प्रगट करते हैं, पर तार जैसे कड़े बाल वालों में ये बातें बिल्कुल नहीं पाई जातीं, वे इन गुणों की ओर से एक दम लापरवाह रहते हैं, सदा दूसरों पर अपना प्रभुत्व कायम रखना चाहते हैं, ऐसे लोग अक्सर बहुत ईर्षालु भी होते हैं।

बालों को अकेला ले के कभी विचार न करना चाहिये। इनके साथ अन्य बातों की तरफ भी बराबर गौर रखना

चाहिये। नमूने के लिये इन बालों वाले का माथा कैसा है यह देखना बहुत जरूरी है। चौड़े, चिकने, बगैर लकीरों वाले माथे पर ये ही बाल कुछ और कहेंगे और सकरे, लकीरों से भरे, या बालों से ढके माथे पर कुछ और। अकसर आप देखेंगे कि सकरा और कम ऊंचा माथा है और बाल ऊपर से उस पर झुके आते हैं। यह इन्द्रियलोलुपता का चिन्ह है, पर वही बात अगर चौड़े माथे के साथ हो तो ऐंद्रिक विषयों से प्रेम रखता हुआ भी वह व्यक्ति कला प्रेमी होता है जैसे चित्रकार हो, गायक हो, वादक हो, या भावुक हो। इसी तरह अगर साफ सुन्दर चेहरे पर ये बाल हों तो दूसरा अर्थ और सूखे साखे, क्रोधी या भकाऊ जैसे चेहरे पर दूसरा ही मतलब बताते हैं। चेहरे के संबंध में बताती समय हम उन बातों पर आवेंगे।



तीसरा अध्याय

भौंहें

आकृति-विज्ञान में बालों का जो महत्व है उससे कुछ ही कम भौंहों का समझना चाहिये क्योंकि मनुष्य की भौंहें किस ढंग की हैं इसे देख कर जानकार व्यक्ति उसके चरित्र और स्वभाव के बारे में बहुत कुछ बता सकता है।

भौंहों पर विचार करतो समय दो तीन बातें मुख्य तौर से लक्ष्य करनी चाहियें—उनकी गोलाई लंबाई और मोटाई, पर इसके इलावा यहां के बालों की बनावट भी कम महत्व नहीं रखती। सिर के बालों का रंग ढंग जिस प्रकार अपनी कहानी कहता है भौं के बाल भी वैसे ही अपनी बात सुनाते हैं पर इसके साथ साथ भौं के बारे में एक और बात जो ख्याल करने की है वह यह है कि उनका आदि और अंत किस तरह का है। हम इनमें से हर एक बात का महत्व बताते हैं।

सबसे पहिले तो भौं का आरंभ देखिये कि वे कहां से

प्रारंभ होती हैं। अगर दोनों भौंहें आपुस में सटी हुई या बहुत ही पास से शुरू हुई हैं तो इस बात को देखते ही आप सावधान हो जाइये। यद्यपि इस विज्ञान के कुछ जानकार तो यहां तक कहते हैं कि जिसकी दोनों भौंहें सटी हुई हों उसका कभी विश्वास न करना चाहिये पर हम उतनी दूर न जायंगे, फिर भी यह जरूर कहेंगे कि भौंहें सटी देखते ही सावधान हो जाइये, क्योंकि ऐसी भौंहें दिल की सफाई का अभाव, संशयात्मक प्रकृति, और धोखा प्रगट करती हैं। अगर मौका मिल जाय, यदि पकड़ जाने का डर न हो या न दिखता हो, तो ऐसी भौंहों वाला आदमी बेईमानी कर बैठ सकता है। कुछ अन्य बुराइयें भी ऐसे व्यक्तियों में छिपी रहती हैं जो मौका पड़ने पर प्रगट हो सकती हैं, अस्तु ऐसी भौंहें देखते ही सावधान हो जाना उचित है।

इसके विपरीत जो भौंहें एक दूसरे से दूर हट कर प्रारंभ होती हैं, जिनके बीच में अच्छी खासी जगह छूटी होती है, वह साफ दिली, असंशयता और सिधाई प्रगट करती हैं। थोड़ा ही अनुभव आपको बतादेगा कि सटी हुई भौंहें और अलग अलग भौंहें स्वभाव की कितनी बड़ी विभिन्नता प्रगट करती हैं। हमें अक्सर ऐसे कवियों की रचना देखने को मिलती है जिन्होंने प्रिया की भौंहों की वर्णना में पृष्ठ के पृष्ठ रंग डाले हैं, उनका वर्णन देखने से अक्सर तलवार की तरह घूमी हुई, बांकी, तिरछी, पतली, और नाक के दोनों

तरफ से प्रारंभ हुई भई भौंहें नजर आवेंगी और बात भी यह बहुत ठीक है क्योंकि इस प्रकार की भौंहें प्रेमी स्वभाव और सरल प्रकृति प्रगट करती हैं।

तलवार की तरह घूमी हुई भौंहें मधुरता, सरलता, तथा कलाप्रियता प्रकट करती हैं, पर ये आंखों से बहुत दूरी पर न होनी चाहियें क्योंकि उस अवस्था में इनसे कमजोरी, मानसिक दुर्बलता और चरित्र की शिथिलता प्रगट होती है। जो लोग मूर्ख होते हैं, जो सर्वदा ही दूसरों के मजाक के शिकार बनते रहते हैं अकसर उनकी भौंहों को आप ऐसी ही, अर्थात् आंखों से बहुत ही दूरी पर देखेंगे। ऐसे लोगों की विचारशक्ति भी बहुत कम होती है। इसके विपरीत जो भौंहें बहुत नीची, सीधी, और आंखों के नजदीक होती हैं वे मजबूती, कठोरता बल्कि कभी कभी क्रूरता,, और जिद्दीपना सूचित करती हैं। हाथ देख कर स्वभाव बताने वाले जिस प्रकार मोटे अंगूठे को देख कर ये ही बातें कहते हैं बस ठीक वही बातें आप ऐसी भौंहें देख कर कह सकते हैं।

कुछ भौंहें इस किस्म की होती हैं कि प्रारंभ ऊंचे से होती हैं पर झुकाव अधिक लेती हुई अंत में एक दम आंखों की बगल में नीचे तक आ जाती हैं। ये देखने में चाहे सुन्दर लगती हों पर ऐसी भौंहों वाले में मनोबल नहीं होता। तथापि इनसे उत्तम शिक्षा दीक्षा, सफाई और अच्छी पसंद जाहिर होती है। इन्हीं की एक किस्म यह है कि वे प्रारंभ

में तो सीधी रहती हैं पर अंत में आ के एक दम नीचे को झुक जाती हैं। यह कलाप्रियता प्रगट करने वाली भौंहें हैं। सांसारिक व्यक्ति, दुनिया का ऊंच नीच अच्छी तरह समझने और अपना भला बुरा सोचने की बुद्धि रखने वाले व्यक्ति की भौंहें मोटी होती हैं और साथ ही सीधी भी बगल में आ के अगर वे ऊपर की तरफ घूम पड़ें तो समझना चाहिये कि ऐसा व्यक्ति हिसाब किताब में बहुत चतुर होगा। अगर ऐसी सीधी भौंहें अंत में आ कर एक दम नीचे को झुक पड़ें तो किफायतसारी और सूमपना प्रगट करती हैं।

कुछ भौंहें कभी कभी ऐसी देखने में आती हैं जो बड़ी ही टेढ़ी मेढ़ी, मोटे मोटे गुच्छेदार बालों वाली और मजबूत सी दिखने वाली होती हैं। ऐसी भौंहों वाले चतुर, थोड़े में चिढ़ उठने वाले, साफ सुथरे न रहने वाले पर हुकूमत से रहने वाले होते हैं। बहुत बुद्धिमान व्यक्ति, ऐसे व्यक्ति जिनकी मस्तिष्क शक्ति बहुत ही अधिक है, अकसर ऐसी ही भौंहों वाले होते हैं। ऐसे लोग अकसर अपनी सूरत और शक्ल और कपड़े लत्ते की तरफ से लापरवाह भी होते हैं।

एक साधारण नियम इस संबंध में यह समझ लेना चाहिये कि मोटी और घने बालों वाली भौंहें मजबूती, दिमागी ताकत, और दृढ़ निश्चयता बताती हैं। इसी का विपरीत लीजिये, जो भौंहें बहुत पतली कमजोर या कमती बालों वाली होती हैं वे कमजोरी, सब तरह की—शारीरिक भी

और मानसिक भी, प्रगट करती हैं। छोटी भौंहें जल्दी चिढ़ उठने वाला स्वभाव बताती हैं।

मोटे तौर पर भौंहों की निम्नलिखित कई श्रेणियां की जा सकती हैं—(१) साफ सीधा सरल स्वभाव बताने वाली (२) धोखा जाहिर करने वाली (३) कला और मधुरता प्रगट करने वाली (४) सांसारिक (५) शक्तिशाली (६) कमजोर (७) सफाई पसंद (८) रूखी फीकी तबीयत जाहिर करने वाली।

एक बात भौंहों का विचार करती समय कदापि नहीं भूलिये, भौं के बालों का रंग सिर के बालों के रंग से हलका है कि गाढ़ा। अगर हलका है तो यह शक्ति की कमी, अगर गाढ़ा है तो शक्ति प्रगट करता है। अगर भौं के बाल छोटे छोटे हो तो समझना चाहिये कि उस व्यक्ति में देख के ही बहुत कुछ समझ लेने की शक्ति है।

:o:

चौथा अध्याय

आंखें

बालों के बाद मनुष्यों के बारे में सब से ज्यादा भेद प्रगट करने वाली हैं—उसकी आंखें, बल्कि कुछ लोग तो यह कहते हैं कि आंखें जितना कुछ बता सकती हैं उतना कोई भी अ बता नहीं सकता। एक प्रसिद्ध अंगरेजी कहावत है—' आत्मा की खिड़की हैं।" देशी कहावत भी है—' भोगी को, रोगी को, आंख से पहिचान!" खैर व भी हो, कम से कम इसमें तो कोई भी संदेह के बारे में, और हृद्गत विचारों के बारे स्पष्ट संदेश देती हैं।

शायद बहुत ही कम लोगों ने कभ दिया हो कि आंख का देखने वाला से बाहर के दृश्य को भीतर पहुँचा लोगों ने कभी यह विचारा होग आंखों की बनावट में किस प्रका

है। एक ही देश में रहने पर भी भिन्न भिन्न, जाति के लोगों की आंखों में बड़ा अंतर होता है। एक नैपाली की आंख काश्मीरी से नहीं मिलती और आसामी की आंख बंगाली से नहीं मेल खाती, यही क्यों यूरोप के ही निवासी—अंगरेज, फ्रान्सीसी, जर्मन, और स्विस की आंखों में अपार अंतर रहता है। अस्तु इससे यह भी समझा जा सकता है कि अगर आंखें मनुष्य के दिल की बातें कहने को बड़ी तत्पर रहती हैं तो भी उन्हें देख कर ठीक ठीक सब बातें समझ लेना कोई सहज कला नहीं है, उनकी यह तरह तरह की विभिन्नता ही इस काम में सब से बड़ी बाधक होती है।

कुछ विद्वानों का यह भी कथन है कि यह जो भिन्न भिन्न
ौर देश वालों को भिन्न भिन्न प्रकार की आंखें होती हैं
छ नहीं केवल उस देश के विभिन्न मौसिम, आब-
ोलिक स्थिति के ही कारण है। मसलन, वे
क तिब्बती या भूटानी की वे आधी बन्द आंखें
ी हैं कि उस देश के निवासियों को पर्वतीं
ा करता है। वहां के पर्वतों पर पड़ने
ओर से चमकती है कि अगर वे लोग
धर न देखें तो चकाचौंध से अंधे हो
ो जाति वालों की विचित्र आंखें
के देश में बराबर बर्फ के तूफान
लिये वे अपनी पूरी आंखें कभी

खोल ही नहीं सकते। इसी तरह न्यू हालेन्ड वालों की वैसी अधखुली सी आंखों का कारण वहां के वे छोटे छोटे कीड़े मकोड़े और फतंगे हैं। जो उस देश में इस बहुतायत से उड़ते रहते हैं कि अगर आंखों को सदा बचा कर न रखा जाय तो उनमें पड़ के उन्हें चुटीला कर दें।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि आंखों की बड़ाई और छुटाई उस व्यक्ति के मानसिक विकाश का चिन्ह है। जितनी छोटी आंखें होंगी, समझना चाहिये कि उस मनुष्य का मस्तिष्क अभी उतनी ही कम उन्नत अवस्था में है। ऐसा पशुओं में तो अकसर देखने में आता है पर मनुष्यों में यह बात कहां तक लागू है कहा नहीं जा सकता, फिर भी, यह सही है कि यह बात भी तथ्य से खाली नहीं है।

खैर यह सब जो कुछ भी हो और मानव समाज की आंखों के भिन्न भिन्न प्रकार की होने का कारण जो कुछ भी हो, पर कम से कम इतना तो मान ही लेना चाहिये कि आंखें स्वभाव और चरित्र के विषय में बहुत कुछ बता देती हैं, साथ ही साथ वे जाति, देश, और प्रकृति के बारे में भी बहुत सा हाल प्रगट कर देती हैं, और इतना मान कर हम आगे चलते हैं।

यद्यपि हमारे देश में प्रायः काली पुतली वाली आंखें ही दीख पड़ती हैं पर अन्य देशों में, और कभी कभी यहां भी, अन्य प्रकार की पुतलियां बहुतायत से नजर आती हैं। साधारणतः इनको इतने भागों में बांटा जा सकता है—काली, भूरी,

नीली, हरी, पीली, और नारंजी। इन सभों में रंग के गाढ़े पन और हलकेपन के अनुसार बहुत से विभेद हो जाते हैं, पर मोटे तौर पर ये छः विभाग पुतलियों के किये जा सकते हैं। यूरोपीय, और उनसे संलग्न देशों में काली आंखें प्रायः नहीं के बराबर ही हैं, वैसे ही यहां अन्य रंगों की आंखें भी दुर्लभ सी हैं, फिर भी इन विभिन्न रंगों के बारे में हम मोटे तौर पर बताते हैं।

नीली आंखें कोमलता का चिन्ह हैं, काली या गाढ़ी भूरी कठोरता और तेजी या शक्ति का, एक दम काली पुतलियों वाली आंखें तो यहां—भारत में भी—कम ही दिखती हैं और ज्यादातर तो भूरी और गाढ़ी भूरी ही पुतलियें होती हैं जो चारो तरफ के सुफेद घेरे के अंतर के कारण ही काली नजर आती हैं। पर साधारण तौर पर हम इन गाढ़ी भूरी आंखों को भी काली ही मान कर चलते हैं। अस्तु, नीली आंखें जहां कोमलता बताती हैं, वहीं विचारशीलता, स्थिरता, धैर्य, आदि की भी सूचक हैं, और अगर वे गाढ़े नीले रंग की हों तो उनसे विश्वसनीयता प्रगट होती है, पर वे व्यापार कुशलता का चिन्ह नहीं हैं और न ही विभिन्न गुणों के होने का परिचय देती हैं, ज्यादातर जितनी काली (यानी गाढ़ी भूरी) आंखों की पुतलियां होगी उतनी ही तेजी, व्यापार कुशलता, शक्ति, गुण और प्रभाव प्रगट करेंगी। इस बारे में कुछ कुछ वही समझना चाहिये जो बालों के बारे में, अर्थात् काला रंग शक्ति का सूचक होता है।

पुतलियों के इस विभेद में एक बात खास तौर पर याद रखने लायक है यह कि पुतलियों का रंग जितना ही हलका होगा, उतना ही वह चालाकी और बेईमानी की तरफ का झुकाव भी बतावेगा। बहुत हलके रंग की पुतलियों वाले आदमी कभी कभी अपने बड़े से बड़े मित्र को भी धोखा दे देते हैं। ऐसी आंखों वाले दूसरे का मजा किरकिरा करने और भेद लगाने तथा उन्हें छिपा के रखने में आनंद अनुभव करते हैं, और साधारण तौर पर ऐसों का साथ आनंददायक नहीं होता।

यहां पर एक बात और भी कह देना जरूरी है। आंखों की बनावट या पुतलियों के रंग के आधार पर मनुष्य के चरित्र की पहिचान करती समय किसी एक ही बात को लेकर नहीं उड़ चलना चाहिये, उनके साथ साथ भौं, बरौनी, ठुड्ढी, नाक इत्यादि सभी को एक साथ लेकर ही कुछ स्थिर करना उचित होगा, मसलन आंखें अगर कमजोरी बताती हों पर साथ साथ बहुत ही मजबूत ठुड्ढी हो, तो उस व्यक्ति को कमजोर चरित्र वाला नहीं कह सकेंगे। केवल आंख ही क्यों, इस बात को तो आप सभी अन्य विषयों में एक नियम की तरह मान कर चलेंगे तभी सफल होंगे क्योंकि शरीर के केवल एक अजो को लेकर पूरे मनुष्य के बारे में कुछ कह देना धोखा खाने का रास्ता है। खैर।

हरी आंखों के बारे में भी बहुत तरह की बातें देखने में आती हैं। ज्यादातर लोग इस रंग की पुतलियों को धोखा,

बेईमानी, दगाबाजी आदि आदि का चिन्ह कहते और समझते हैं, बाइबिल के शैतान की भी हरी आंखें थीं, ऐसा कहा जाता है। कुछ लोग तो यहां तक कहते हैं कि कोई ऐसा पाप या कोई ऐसा दुराचार नहीं जो अपना मतलब सिद्ध करने के लिये हरी आंखों वाला व्यक्ति न कर डाले, पर इतनी दूर तक चला जाना ठीक नहीं। याद रखना चाहिये कि आंखों का यह रंग यद्यपि भारत में नहीं दिखता फिर भी यूरोप और अन्य देशों में साधारण है और वहां कितने ही ऐसे व्यक्ति नजर आते हैं जिनकी ऐसी आंखें हैं फिर भी वे सुशील, सच्चरित्र, विद्वान् और विश्वसनीय हैं। अस्तु विचार करने पर पता लगता है कि ऐसी पुतलियां जिनका रंग हरा है पर जिन आंखों में वे हैं वे बड़ी बड़ी, और खुली हुई सी हैं, वहां वे प्रतिभा और विद्वत्ता का चिन्ह हैं। इस हरे रंग के साथ अगर भूरी फुटकियां पड़ी हों, या नारंगी या अन्य रंग हों, तो समझना चाहिये कि उस व्यक्ति में कार्य कुशलता और उचित निर्णय करने की शक्ति है। अगर ऐसी आंखों के ऊपर वाली भवें पतली, सुन्दर, और लंबी हों तो ऐसा व्यक्ति अकसर कलाप्रिय, विनोदी प्रतिभावान, और संसार का आनंद लेने वाला होगा। यद्यपि कभी कभी ऐसे व्यक्ति बदला लेने की विशेष इच्छा रखने वाले, क्रूर और कठोर हृदय के भी होते हैं, फिर भी इतना जरूर कहा जा सकता है कि हरी पुतलियां चतुरता की द्योतक हैं।

पीली और नारंगी रंग की पुतलियां बहुत कम ही देखने में आती हैं, फिर भी साधारणतया इनके बारे में यह कहा जा सकता है कि यह कुछ कुछ चंचल प्रकृति, भावुक, और स्वप्न राज्य में विचरण करना बताने वाली होती हैं। इनके साथ अगर भूरापन मिला हो तो अकसर ये कवित्व शक्ति प्रगट करती हैं, क्योंकि भूरापन कल्पना का द्योतक है। ऐसी आंखों वाले अकसर किफायतशार, और कुछ कुछ स्वार्थी होते हैं, पर इनको बात की चोट बहुत जल्दी लगती है अस्तु ऐसों से बहुत सम्हल कर बातें करनी चाहिये।

भूरी आंखें, खास कर वे जिनका रंग गाढ़ा भूरा है, अच्छी ही समझी जाने के योग्य हैं। उनसे प्रेम, विश्वास, चतुरता, गंभीरता यह सब गुण प्रगट होते हैं। यह रंग जितना ही गाढ़ा हो उतना ही दृढ़ता का सूचक होता है, पर उसके साथ ही थोड़े में गुस्से हो जाना भी प्रगट होता है। ऐसे लोग ईमानदार और व्यवहार में सच्चे होते हैं पर उनमें भावुकता कम होते हुए भी चरित्र संबंधी कुछ कमजोरी अकसर पाई जाती है।

काली आंखें, एक दम गाढ़े काले रंग की, बहुत ही कम मिलती हैं, अकसर गाढ़े भूरे रंग की ही पुतिलियां दिखाई पड़ती हैं और उन्हीं को काला कहा जाता है, फिर भी यह रंग एक दम नापैद नहीं है, अकसर मिलता ही है मगर प्रायः गर्म मुल्कों में ही। इस रंग से ऐन्द्रिक उत्तेजना (पैशन), प्रेमिकता, और शक्ति प्रगट होती है, पर कभी कभी ऐसी आंखों

वाले अविश्वासी, धूर्त, और कपटी भी पाए जाते हैं। देखने में ये आंखें चाहे जैसी भी सुन्दर लगें, पर इनसे सावधान रहना ही उचित है। यही काला रंग अगर हलका रहे तो चंचलता प्रगट होती है। ऐसी आंखों के ऊपर वाली भवों के नाक की तरफ वाले हिस्से के बाल यदि खड़े खड़े हों तो ऐसा व्यक्ति बड़े सहज में गुस्से हो जाता है। आंखें अगर बहुत बड़ी बड़ी गोल, और उभड़ी हुई हों तो भीरुता और दब्बूपना प्रगट करती हैं। बिल्ली के जैसी आंखें बिल्ली के जैसा ही स्वभाव भी बताती हैं।

आंख की पुतलियों के रंग की बात अगर थोड़ी देर के लिये अलग रख दें, तो भी कई बातें आंखों के संबंध में ऐसी और भी बच जाती हैं जो बहुत कुछ बताती रहती हैं। आंखों की साधारण स्थिति से कितना ही कुछ मनुष्य के स्वभाव और चरित्र के बारे में जाना जा सकता है। यदि साफ, खुलासी, निर्भीक, (झगड़ालू नहीं) दृष्टि है तो उस व्यक्ति पर आप विश्वास कर सकते हैं। यदि उस मनुष्य में कपट की कोई रेखा है तो उसकी दृष्टि अकसर अस्थिर रहेगी। एक दफे आपकी तरफ देख के तुरत ही दूसरी तरफ घूम जाने और क्षण भर बाद पुनः लौट आने वाली दृष्टि बताती है कि वह व्यक्ति हृदय का साफ नहीं है, अथवा उसके मन में कुछ और तथा मुंह में कुछ और है। स्पष्ट निर्भीक दृष्टि भी, कभी कभी, खास कर यदि उस व्यक्ति को किसी तरह का अंदेशा है, तो

चंचल हो पड़ती और इधर उधर हटने लगती है। प्रश्नकर्ता की दृष्टि यदि बहुत ही कठोर या क्रूर है और जिससे प्रश्न किया जा रहा है वह भीरु-स्वभाव का है तो वह स्वभावतः ही अपनी आंखें हटा लिया करेगा या नीची रक्खेगा, पर इससे भ्रम में न पड़ जाना चाहिये, यह कपट नहीं भीरुता के कारण है।

कुछ कोमल-हृदय या कल्पना-परायण व्यक्तियों की आंखें अक्सर थोड़े से भी कारण से आंसुओं से भर उठती हैं। जिनमें धार्मिकता अधिक है उनमें यह बात प्रायः देखने में आती है। पर इसमें भी एक भेद है। अगर ऐसी आंखों में कपट की झलक है, और कहने वाला बहुत उत्सुकता दिखाते हुए आंखों में पानी भर लाया है, तो आप सावधान हो जाइये। प्रायः वे आंसू नकली और आपको धोखा देनेवाले साबित होंगे, पर इस विषय में ठीक-ठीक निर्णय ऐसे व्यक्ति की अन्य बातें करेंगी। (यदि अन्य चिह्न सफाई, सचाई, सहृदयता आदि बता रहे हैं तो ये आंसू भी उत्सुकता अथवा हृदय के भाव-पूर्ण हो जाने के चिह्न हो सकते हैं।

उभड़ी हुई आंखों से अक्सर विद्या का व्यसन प्रगट होता है, कारण ज्यादा पढ़ने लिखने से कभी कभी आंखों के डेले उभड़ आते हैं, पर बहुत से विद्वान और विचारशील व्यक्ति आप ऐसे भी देखेंगे जिनकी आंखों में यह बात न होगी, तो इससे यह न समझ लीजिये कि वे पढ़ने लिखने के व्यसनी नहीं हैं। कभी कभी ऐसे व्यक्ति भी मिलते हैं जिनकी आंखें उभड़ी हुई हैं पर वे

विद्याव्यसनी कुछ भी नहीं हैं। यदि ऐसा हो तो भी उनमें इतना तो आप पावेंगे ही कि वे जब किसी काम में जुट जाते हैं तो खूब ही लगते हैं और उन्हें बातें भी खूब याद रहती हैं। अगर ऐसे आदमी किसी भाषा या विषय का अध्ययन करें तो बहुत जल्दी ही उसमें व्युत्पन्न हो जायेंगे।

अच्छी व्यापार-बुद्धि खुली स्पष्ट आंखों से प्रगट होती है। ऐसी आंखों वाले बड़ी लगन के व्यक्ति होते हैं और जिस काम में लगें उसी में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

आंखों के डेले उभड़े हुए हों और साथ ही उनके बीच में बहुत अधिक फासला हो तो इससे कुछ मूर्खता या दिमागी कमजोरी जाहिर होती है।

कभी कुछ आंखें ऐसी भी नजर आती हैं जो खुलासी हैं, खुली हुई हैं, साफ हैं, बड़ी बड़ी हैं, मगर कुछ गोल गोल सी हैं। ऐसे व्यक्तियों का एक प्रधान लक्षण यह पाया जाता है कि यदि स्त्री है तो पुरुषों के प्रति, और पुरुष है तो स्त्रियों के प्रति, बहुत जल्दी आकर्षित होते हैं। ऐसी आंखों वाली लड़कियां लड़कों के साथ खेलना पसन्द करेंगी और लड़के लड़कियों के साथ। ऐसे व्यक्ति बहुत चतुर तो नहीं होते फिर भी इनकी बातचीत मनोहर होती है और दूसरों को ये सहज ही आकर्षित कर लेते हैं। यही दृष्टि, अगर दोनों आंखें अलग अलग यानी ज्यादे फासले पर हों, तो सादगी सिधाई और स्पष्टवादिता प्रगट करती है। अगर ऐसी आंखों की पुतली के भीतर तक दीख

पड़े तो वह व्यक्ति प्रेमी भावुक और सफाई पसन्द होता है। अगर ऐसी दृष्टि तो हो पर साथ साथ उनसे सुस्ती सी प्रगट हो तो समझना चाहिये कि वह व्यक्ति बहुत चालाक है। इससे चंचलता अस्थिरता आदि भी प्रगट होता है।)

बादाम की तरह की आँखें, जैसी चीनी लोगों की होती हैं, धूर्तता प्रगट करती हैं। अगर वे साथ साथ में एक तरफ को झुकी अर्थात् टेढ़ी टेढ़ी भी हों तो जैसे भी बने अपना काम बना लेना— यह स्वभाव प्रगट होता है। अगर आंखें ऐसी ही हों पर दृष्टि में कोमलता हो तो भाव-प्रवणता और स्वप्न-राज्य में विचरण करने वाला स्वभाव प्रगट होता है, परन्तु इसमें कभी कभी सूमड़ापन भी छिपा रहता है। यदि आँखें ऐसी हों और उनके ऊपरवाली भवें कनपटी के पास से एक दम नीचे की तरफ झुक गई हों तो वह व्यक्ति रुपै वाला होने पर भी गरीब की तरह रहेगा। ऐसी दृष्टि पर की पलकें मोटी, बड़े बड़े वालों वाली, और भद्दी हों, तो कामुकता प्रगट होती है।

किसी किसी अपार बुद्धिसम्पन्न व्यक्ति (जीनियस) की आँखों में एक अजीब तरह का झुकाव सा नजर आता है। वे मानों झुकी झुकी सी पड़ती हैं। यदि ऐसी दृष्टि हो तो कम से कम इतना तो समझना ही होगा कि वह व्यक्ति बहुत ही विचारशील है।

आंख पर की पलकें और उनके बाल भी कुछ बातें बताते हैं। अगर भौं और बरौनी के बाल सिर के बालों से हलके रंग

के हों तो चंचलमतित्व प्रगट होता है। अगर भौं और बरौनी में कम बाल हों तो डरपोकपना जाहिर होता है। यदि एक दम ही बालों की कमी हो तो ऐसे व्यक्ति को बुद्धि विशेष नहीं ऐसा समझना होगा। पर इन चिन्हों पर ज्यादा विश्वास न करना चाहिए क्योंकि कभी कभी इसमें धोखा भी होता है, हां और लक्षण भी यदि यही बात कहते हों और साथ साथ में यह लक्षण भी हो तो जरूर ऐसा ही कुछ होगा यह निश्चय है।

कभी कभी कुछ ऐसे व्यक्ति भी नजर आ जाते हैं जिनकी दो आंखें जान पड़ता है जैसे दो तरह की हों। ऐसे व्यक्ति अकसर बहुत चतुर, साथ ही बड़ी लगन वाले, मगर कभी कभी कुछ अर्ध-विक्षिप्त से भी होते हैं। एकाध विद्वान का तो यहां तक भी कहना है कि पागलों की आंखों में यह बात बहुधा पाई जाती है। पर यदि विक्षिप्तता नहीं है तो ऐसी आंखें फिर बहुत ही विद्वत्ता और योग्यता प्रकट करती हैं।

आंखों पर चश्मा लगता है कि नहीं इस बात का विचार चरित्र और स्वभाव से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखता, क्योंकि वह एक दम दूसरे ही कारण से होता है, तब यह जरूर है कि ज्यादा पढ़ने लिखने से अकसर आंखें खराब हो जाती हैं और इसी से चश्मा लगाना जरूरी हो जाता है। इसी के साथ साथ यह भी बात है कि भूरी आंखें सब से मजबूत होती हैं, नीली सब से कमजोर।

मगर आंखों की कथा इतने ही में समाप्त नहीं हो जाती।

आंखों में प्रकृति ने न जाने क्या विशेषता दे रक्खी है कि उसके बारे में सब बातें कही जा ही नहीं सकतीं। इस विषय का जितना ही अध्ययन किया जाय नई नई बातें प्रगट होती हैं। जिन्हें इस विषय से प्रेम है वे आते जाते, बैठते उठते, मिलते जुलते, अगर लोगों की आंखों पर गौर करते रहें तो कितनी ही विचित्र बातें जान सकेंगे। सच तो यह है कि "शरीर के रूप रंग और बनावट से चरित्र की पहिचान" यह विषय जितना कौतूहलप्रद है उतना ही इसका क्षेत्र विस्तृत भी है। इस विषय में जितना ही विचार अध्ययन और मनन किया जायगा उतना ही ज्ञान बढ़ेगा। तब यह बात है कि बहुत बातों पर एक साथ विचार न करके एक एक अंग या भाग को लेकर कुछ समय तक केवल उसी पर मनन करते रहने से अधिक फल होगा। एक साथ सब बातों पर आप विचार करेंगे तो—यदि आप इस विषय में दक्ष नहीं हो गये हैं तो—आपको यह विद्या हासिल करने में कठिनता बोध होगी। अस्तु, धीरे धीरे चलिये और एक एक विषय का अध्ययन करते हुए चलिये, यही इस विद्या को सीखने का सब से सरल उपाय है।



पांचवां अध्याय

नाक

ऊपर जो कुछ बातें हमने कहीं उनमें से किसी से भी कम महत्व की चीज नाक नहीं है बल्कि कहें तो यह भी कह सकते हैं कि नाक का महत्व उन सब से अधिक है, कारण मनुष्य के चेहरे में सब से पहिले जिस चीज पर निगाह जाती है वह है नाक। नाक न रहे तो चेहरा कैसा भद्दा हो जाता है यह कहने की जरूरत नहीं।

यों तो सरसरी निगाह देखने में सभी नाकें एक समान ही नजर आती हैं पर जरा भी गौर से देखा जाय तो अन्तर स्पष्ट हो जाता है, बल्कि हम तो कहेंगे कि कोई भी नाक किसी दूसरी नाक से नहीं मिलती।

नाकों में अन्तर यों तो बहुत बातों का होता है पर मुख्य रीति से देखने की चीजें हैं नाक की जड़ यानी उसका माथे से सटने वाला हिस्सा, लंबाई, चौड़ाई, मोटाई, सीधापन या टेढ़ापन, और नोक। इनमें से हर एक की कई कई किस्में होती हैं और

इनको मिला कर बनने वाले भेद अनन्त हैं मगर कुछ मोटे मोटे नियम याद रखने से कार्य सरल हो जाता है। फिर भी उनका वर्णन करने के पहिले हम दो एक साधारण बातें बता देना आवश्यक समझते हैं।

नाक चाहे जैसी भी रहे पर उसका चेहरे के साथ खाप खाना चाहिये, यानी उसका मेल चेहरे से ठीक बैठना चाहिये। जिस तरह अन्य सब भांति से सुन्दर चेहरे पर बेडौल नाक अच्छी नहीं लगती उसी तरह सब तरह से बेडौल चेहरे पर सुन्दर नाक का भी मेल नहीं बैठता। पुराने प्रसिद्ध मूर्त्ति-कारों ने इस विषय में कुछ नियम बना रक्खे थे और उसी के अनुसार सदा चलते थे। वे माथा जितना ऊंचा हो उतनी ही लंबी नाक रखते थे, आंख जितनी लम्बी हो उतनी ही चौड़ी नाक की नोक रखते थे, दोनों भौंहों के बीच में जितना अन्तर हो उतनी ही मोटाई रखते थे, आदि। इस तरह की नाकें प्रायः सभी अच्छी ग्रीक युग की मूर्त्तियों में पाई जाती हैं और प्राचीन भारतीय मूर्त्तियों की भी कुछ कुछ ऐसी ही होती हैं, पर यह कहना ही होगा कि ऐसी नाकें सुन्दर बहुत होते हुए भी प्रायः प्रत्यक्ष रूप से बहुत कम ही देखने में आती हैं।

बीच में से उभड़ी हुई तथा नदी के पुल या तोते की ठोर की सी गोलाकार नाक साधारणतः शक्ति और प्रभुत्व की सूचक है। ऐसी नाक वाले के बारे में समझ लेना चाहिये कि वह जिम्मेदारी से डरता नहीं और जिस काम को हाथ में लेता है उसको पूरा

करके ही छोड़ता है। लेकिन ऐसी नाक अगर मोटाई में कमती हो यानी पतली हो, तो उसका महत्व कम हो जाता है। पतली नाक शक्ति की कमी को द्योतक होती है, मोटी शक्ति की अधिकता बताती है। मोटी, बीच से उभड़ी हुई, ठोंठदार नाक प्रायः बड़े-बड़े सेना-नायकों, वीरों, और प्रभुताशालियों की होती है। जो आज्ञा दे सकें और आज्ञा मान भी सकें, उनकी नाक इस श्रेणी की आप पावेंगे।

बेडौल नाक चरित्र में किसी प्रकार की न्यूनता बताती है। छोटे चेहरे पर बड़ी नाक या बड़े चेहरे के साथ बहुत छोटी नाक भी यही कहती है। कोई एक दम बेमेल बात हो, जैसे पतली नाक हो और नथुने बहुत बड़े, मोटी नाक हो और नोक बहुत छोटी, लंबाई कम हो और चौड़ाई बहुत अधिक, आदि—तो भी स्वभाव और चरित्र में किसी प्रकार का दूषण प्रगट होता है।

सीधी पतली लम्बी नाक भी अच्छी होती है यदि उसके साथ अन्य चिन्ह भी अच्छे हों। यह चरित्र की विशुद्धता, उत्तमजाति, कलाप्रियता, और जोश की सूचक है। यदि और चिन्ह भी उत्तम हों तो ऐसी नाक प्रायः ऊंचे कुल वालों में ही मिलती है, पर साधारण स्थिति वालों की ऐसी नाक हो तो कुछ बातें अच्छी होने पर भी प्रायः ऐसे व्यक्ति का हृदय निर्मम, निष्ठुर और स्वार्थी होता है, कुछ चारित्रिक कमजोरी भी अकसर देखने में आती है।

कुछ नाकों की नोक एकदम नीचे को झुकी हुई और इसके

विपरीत कुछ की ऊपर को उठी हुई मिलती है, और ये दोनों ही चरित्र के एक विशिष्ट चिन्ह हैं। पहली, अर्थात् झुकी हुई नोक, यदि अन्य बातें ठीक हैं, तो कुछ उदासीन स्वभाव प्रगट करती है। बुद्धि तीक्ष्ण होने पर भी ऐसी नोकवाला व्यक्ति किसी विषय में दृढ़तापूर्वक काम करते कम देखा जाता है; और दूसरी यानी ऊपर को उठी हुई नोक स्वभाव का चटपटापना जाहिर करती है। विनोदप्रिय, सर्वदा हंसी मजाक करनेवाले, या विदूषक की नाक की नोक अकसर ऐसी ही आप देखेंगे। झुकी हुई नोक कभी-कभी आचरणहीनता, और दूसरों पर कटाक्ष करने की इच्छा भी प्रगट करती है, उसी तरह उठी हुई नोक कभी-कभी हंसते-हंसते अपनी जिद पूरी करा डालने का स्वभाव बताती है। ऐसी नोक वाला हंसता रहेगा, मजाक करता रहेगा, बातें करता रहेगा, लोग समझेंगे बहुत ही मौजी आदमी है, पर वह रहेगा अपनी जिद का पूरा, अपने मन की ही करनेवाला, लोगों से झगड़ा किये बिना ही अपनी इच्छा पूरी कर लेने वाला।

इस तरह की नीचे झुकी या ऊपर उठी नोक के ऊपर वाला नाक का हिस्सा कैसा है यह भी मगर ध्यान रखने की बात है। अगर उठी हुई यानी ठोंठ की तरह उभाड़दार और शक्ति की सूचक नाक के साथ नीचे को झुकी हुई नोक है तो अच्छा चिन्ह नहीं है, कुछ खराबी प्रगट होती है, वैसी ही यानी ठोंठ जैसी नाक के साथ यदि ऊपर उठी नोक है तो बदला लेने की इच्छा न रखते

हुए भी दूसरे का मजाक उड़ाना प्रगट होता है। सीधी पतली नाक के साथ उठी हुई नोक हो तो चतुर और विनोदशील होते हुए भी वह व्यक्ति दूसरों की बातें खोजने में बहुत प्रयत्नशील होगा। अपने से ज्यादे उसे दूसरों की चिन्ता होगी। जिन स्त्रियों की ऐसी नाक और नोक हो उनसे सावधान रहना चाहिये। वे हंसते हुए अपना मतलब निकाल लेने में बहुत प्रवीण होती हैं।

चिपटी हुई यानी बैठी हुई नाक देखने में भी सुन्दर नहीं होती और कोई अच्छा व्यक्तित्व भी नहीं प्रगट करती। ऐसी नाक के साथ का प्रारम्भिक यानी ऊपर वाला अंश यदि दबा हुआ है तो बहुत साधारण व्यक्तित्व प्रगट होता है, पर यदि यह भाग दबा न हो, तथा नथुने कुछ फूले हों, तो कवित्व, लेखनकला, और विशिष्ट व्यक्तित्व प्रगट होता है। प्रायः औपन्यासिकों और काव्यप्रेमियों की ऐसी ही नाक आप देखेंगे। ऐसे लोग बिनोदप्रिय भी होते हैं। ऐसी नाक के ऊपर वाला माथा और भौहें यदि ऊपर से झुकी आती हुई हों तो खोजी प्रकृति और गम्भीर विचारशीलता प्रगट होती है। ऐसी नाक के साथ अगर नीचा चौकोर माथा हो तो प्राकृतिक शक्ति का द्योतक है। अगर ऐसी नाक हो और चमकती हुई आंखें तथा मजबूत ठुड्ढी हो तो कवित्व और कल्पना-शक्ति, विचारशीलता और विनोदप्रियता प्रगट होती है। लेखकों और कवियों की अकसर ऐसी ही नाक आप पावेंगे।

अगर नाक का बिचला हिस्सा उठा हुआ हो पर बहुत अधिक नहीं, तो लिखना पढ़ना पसन्द करने का स्वभाव प्रगट होता है। नाक सीधी और पतली हो तथा नोक उभड़ी या बैठी हुई, तो कला से प्रेम प्रगट होता है। ऐसी नाकवाले अच्छे समालोचक होते हैं, पर स्वयम् कुछ अच्छी रचना कर सकें, ऐसा कम ही देखने में आता है। ऐसे लोग स्वयम् कुछ गढ़ नहीं सकते पर दूसरों की गढ़ी वस्तु की आलोचना खूब कर सकते हैं। परन्तु ऐसी ही नाक अगर मोटी हो और बीच से कुछ अधिक उठी हुई रहे, तथा उसकी जड़ में (माथे की तरफ) बहुत गड़हा न हो तो रचना में सफलता प्रगट होती है। इस तरह की नाकवाला जो कुछ भी रचे, चाहे वह उपन्यास हो, नाटक हो, चित्र हो, मूर्त्ति हो, इमारत हो, तो उसमें कला होगी, दृढ़ता होगी, नवीनता होगी।

नाक के साथ नथुनों का भी एक विशिष्ट स्थान है और अपना कोई मत कायम करती समय उनको भूल न जाना चाहिये। डरपोक दब्बू स्वभाव वालों के नथुने कुछ पिचके हुए से होते हैं। खुले और फूले नथुने कल्पना प्रियता, थोड़े में अधिक मान बैठना, और कुछ कामुकता के चिन्ह हैं। बहुत नुकीले नथुने अपने को आवश्यक से अधिक महत्व देना और दूसरों के मामले में व्यर्थ की नाक घुसेड़ते रहना प्रगट करते हैं। ऐसे नथुनों के साथ यदि बहुत पतले होंठ हों और इन होठों के दोनों

सिरे नीचे को झुके हुए हों तो खराब स्वभाव और दूसरे के चरित्र के दूषण खोजने में विशेष प्रयत्नशील रहना प्रगट करते हैं।

इस प्रकार आपने देखा कि मनुष्य की नाक बहुत कुछ बताती है यदि उसे ठीक तरह से पढ़ा जाय, पर जैसा कि हम बार बार और कई जगह लिखते चले आ रहे हैं, अकेली नाक या अकेली किसी भी बात पर विचार करने से काम न चलेगा। आप सब बातों पर इकट्ठे विचार करके ही किसी ठीक निर्णय पर आ सकेंगे।



छठा अध्याय

मुँह

डाक्टरों का कथन है कि शरीर भर में सब से अधिक स्पर्श-शक्ति होठों में है और उसके बाद उँगलियों में। यही बात प्रगट करती है कि होंठ और मुंह कितने नाजुक अजो हो सकते हैं। प्रकृति और स्वभाव का अध्ययन करने वाले केवल होठों को देख कर ही किसी मनुष्य के बारे में इतनी बातें जान सकते हैं जितनी उस मनुष्य से घंटों बातें करने वाले या हफ्तों साथ रहने वाले साधारण व्यक्ति नहीं जान सकते। फिर, होठों में एक विशेषता और भी है। नाक बाल ठुड्ढी आदि तो चरित्र के स्थिर लक्षणों को ही बताते हैं पर होंठ तुरत तुरत के बदलते हुए भावों का भी एक बहुत ही अच्छा प्रतिविम्ब है। क्रोध का, घृणा का, लज्जा का, या अवसाद का भाव होठों से तुरत प्रगट हो जाता है और इन द्रुत भावों के परिवर्तन के साथ साथ होठों का ढंग, उनकी आकृति, उनका बैठाव, प्रकट रूप से बदलता जाता है।

अवसादग्रस्त आदमी किसी कारण से यदि अचानक प्रसन्न हो जाय तो उसके होठों का ढंग भी फौरन बदल जाता है।

मगर केवल यहीं तक बस नहीं है। होठों का एक और महत्व भी याद रखने लायक है। मनुष्य परिस्थितियों में पड़ कर, परिवर्तनों में पड़ कर, अपने को अर्थात् अपनी मानसिक और बौद्धिक शक्तियों को जिस प्रकार बढ़ाता या घटाता जाता है, अथवा अपने परिश्रम और उद्योग से अपनी शक्तियों का जिस प्रकार विकाश करता जाता है, उसके होठों की आकृति भी उसी उसी प्रकार बदलती जाती और उसके आंतरिक परिवर्तन की सूचना देती जाती है। एक छोटे से बालक के रूसे हुए या गुस्से से फूले होंठों को देखिये, और उसी के होठों को दस बीस या चालीस वर्ष बाद उसी अवस्था या स्थिति में देखिये—दोनों का अन्तर स्पष्ट रहेगा। एक बालक के होंठ, उसी के युवा हो जाने पर के होठों से भिन्न होते हैं, अधेड़ आयु में होंठ और बदलते हैं, बुढ़ापा आते आते और अधिक परिवर्तन हो जाता है। अवश्य ही इसमें से कुछ अन्तर तो शारीरिक कारणों से, अर्थात् मांस-पेशियों के शिथिल हो जाने या दांतों के अभाव से होता है पर अधिकांश अंतर का कारण उस व्यक्ति का आंतरिक उत्थान या पतन ही होता है। एक युवा किसी कारण से आगे चल कर अगर दुराचारी या अनाचारी हो जाय, तो चित्रों द्वारा उसके पहिले के होंठों को आज के होंठों से मिला कर देखिये, अन्तर स्पष्ट प्रगट होगा।

यह सब हम इस लिये कह रहे हैं जिसमें मुंह और होठों की आकृति का महत्व स्पष्ट हो जाय। अब हम इस सम्बन्ध की साधारण बातें बताते हैं।

सब से अच्छा मुंह वही है जो न बहुत बड़ा हो न छोटा, जिसके होंठ बहुत मोटे हों न पतले, बहुत लंबे हों न छोटे, और जिसके होंठ पर होंठ साधारण रीति से बैठते हों, न तो बहुत दब कर ही बैठें और न खुले ही रह जाया करें एक दम से मिले ही नहीं। इसके भीतर की वस्तु अर्थात् होठों की आड़ में छिपे दांतों का भी एक महत्व है। बराबर के, सुडौल, चमकदार दांत, अच्छा स्वास्थ और शक्तिशाली व्यक्तित्व बताते हैं तथा उनके ऊपर साधारण रीति से हलके हलके बन्द होने वाले होंठ सम्हल के चलना, बच के चलना, अपने में आप ही निमज्जित रहना आदि प्रगट करते हैं। इनके साथ साथ सिर अगर उठा हुआ या जरा सा पीछे को हटा हुआ रहता हो तो इज्जत का खयाल प्रगट होता है। ऐसे सब चिह्न जिस व्यक्ति में दिखें, समझ लीजिये कि उसमें स्वावलम्बन और स्वाभिमान है, दृढ़ व्यक्तित्व है।

खुला मुंह, अर्थात् साधारण रीति से आपस में मिल न जाने वाले होंठ बकवादीपने का चिह्न हैं। ऐसा व्यक्ति कमजोर चरित्र का और बेसमझे बूझे बातें करने वाला होता है। वह किसी विषय को समझे या न समझे, उस पर बकवाद शुरू कर देगा। अगर आंख बाल और ठुढ्ढी भी ऐसा ही कहती

हों तो इस लक्षण वाले व्यक्ति को अक्सर आप देखेंगे कि दुनियवी मजे लेने में एक विशेष प्रकार की आसक्ति है। ऐसे लोगों में अक्सर जिद की मात्रा भी दिखाई पड़ती है जो प्रायः अच्छे कामों में या सोच विचार के साथ नहीं होती।

मोटे होंठ इन्द्रियसुखों की लालसा बताते हैं, पतले होंठ सहानुभूतिहीनता और कुछ क्रूरता के चिह्न हैं। खुले मुंह पर यदि कमजोरी तथा मूर्खता की छाप हो तो अर्ध-विक्षिप्तपना स्पष्ट प्रगट होता है, पर इसमें एक बात ध्यान रखने की है। खुले होंठों के साथ उन्नत ललाट, अच्छी भौं, और बुद्धिमान आंखें हों, तो समझ लीजिये कि यह व्यक्ति अच्छा वक्ता है अथवा उसमें यह शक्ति छिपी है। यह बुद्धिमत्ता और विचारशक्ति का भी द्योतक है।

कुछ होंठ आप ऐसे देखेंगे जो मोटे तो हुई हैं, नीचेवाला ऊपर वाले से कुछ आगे को बढ़ा हुआ है। यह जुबान का स्वाद लेने से प्रेम प्रगट करता है। अन्य चिह्न बुद्धि प्रगट करते हों तो भी ऐसे व्यक्ति के सामने यदि स्वादिष्ट चटपटी चीजें रख दी जांय तो यह अपना हाथ कभी रोक न सकेगा। ऐसे लोग अक्सर कोमल हृदय और दयालु स्वभाव के होते हैं, पर जल्दी से किसी विषय में कुछ निर्णय कर नहीं पाते, सदा डोलमडोल रहते हैं। ऐसा ही मुंह हो पर होंठ दोनों यदि कस कर बैठते हों तो यह निर्णायक शक्ति और हिम्मत का सूचक होता है, पर वह होते हुए भी ऐसे होंठों वाले अनुचित ढंग पर जिद्दी होते हैं,

किसी बात पर अड़ बैठेंगे तो लाख समझाइये बुझाइये, ये टस से मस न होंगे। सदा समझते रहेंगे कि जो उन्होंने सोचा या तय किया वही सही है, दूसरे सब बेवकूफ हैं। दिल्लगी एक यह भी है कि ऐसे लोग किसी मूर्ख पर भी यदि विश्वास कर बैठेंगे तो उसे ही सब से बुद्धिमान समझ कर उसी की राय से बराबर चलते रहेंगे। इन आदमियों से ऐसी आशा करना भी व्यर्थ है कि ये अपने शरीर को कष्ट दे के दूसरे का कोई काम कर देंगे, क्योंकि स्वभाव अच्छा होने पर भी ये अक्सर कुछ स्वार्थी होते हैं। ऐसे मुंह के साथ ठुढ्ढी का मांस नीचे को फूला या लटकता हो तो ये जुबान के चटोर होते हैं।

पतले होंठ अगर एक दूसरे पर खूब चिपक कर बैठें तथा उनके साथ चौकोर ठुढ्ढी हो तो यह मक्खीचूसपना और कठोर प्रकृति का सूचक होता है। ऐसा व्यक्ति सूखे दिल का, स्वार्थी, लोभी, और दूसरों का अनुचित लाभ उठाने वाला होता है। आनन्द के अवसर पर भी इसे हंसते बहुत कम आप देखेंगे। सिवाय व्यापार के और किसी विषय में ऐसों का विश्वास करने से हानि हो सकती है।

यदि नीचे के होंठ से ऊपर का होंठ कुछ भारी और जरा आगे को लटकता हुआ हो तो प्रायः यह अच्छे स्वभाव दयालुता और शुद्धचरित्र का सूचक होता है, पर ऐसे लोग किसी अनजान के साथ जल्दी मिल बैठने वाले नहीं होते। अभिमानी न होते हुए भी ये बहुत सोच विचार के बाद ही किसी गैर से घनिष्ठता

या मित्रता करते हैं। परन्तु ऐसे होंठ और बातों में अच्छे होते हुए भी मौज लेने की इच्छा प्रगट करते हैं। ऐसे मुंह के होंठ अगर पतले और चिपके हुए हों तो अपनी ज्यादा फिक्र करना, दूसरों की चिन्ता न करना, इत्यादि प्रगट होता है।

एक आश्चर्य की बात और भी याद रखने लायक है। ऊपर हमने होंठों द्वारा चरित्र और स्वभाव की पहिचान करने के जो जो चिन्ह बताए, ऐसे व्यक्तियों के हाथ की लिखावट भी ठीक वही बात बताती है। हाथ की लिखावट से चरित्र की पहिचान करने की कला जिस व्यक्ति को आती है वह ऐसे मनुष्यों के हाथ की लिखी दो चार पंक्तियाँ देख कर ठीक वही बात कह देगा जो आप उसके होंठों को देख कर बता सकेंगे। प्रकृति की न जाने क्या लीला है कि मनुष्य का स्वभाव या चरित्र उसकी हर एक बात से प्रगट होता रहता है, केवल पढ़ने वाला चाहिये।

नीचे वाला होंठ अगर कुछ आगे को बढ़ा हो (मगर बहुत ज्यादा बड़ा या लटकता हुआ न हो) तो यह विद्वत्ता और आलोचनात्मक बुद्धि का चिन्ह है। इससे दूसरों की भद्दी बातों की हंसी करने का भाव भी प्रगट होता है। पर इसमें एक ऐब भी है। सदा दूसरों की कठोर आलोचना और मजाक करते करते ऐसे व्यक्ति को अपनी बुद्धि पर आवश्यकता से अधिक घमण्ड होने लग जाता है और इसी से दूसरों के प्रति

एक प्रकार की अवज्ञा का भाव उसमें आ घुसता है जिससे उसका चेहरा भी धीरे धीरे इस भाव को ग्रहण कर लेता है।

नीचे का होंठ मुड़ा हुआ रहे तो नफासत और सूफियानेपने का चिन्ह है। ऐसे लोग अपनी और दूसरों की पोशाक के बारे में बड़ी नुखताचीनी रखते हैं। बहुत गहरे स्वभाव के न होने पर भी ऐसे लोग काफी चतुर होते हैं और यदि चेष्टा करें तो नामवरी भी हासिल कर सकते हैं बशर्ते कि उनसे उतना परिश्रम हो सके। उनमें अपनी और अपने कपड़े लत्तों की आवश्यकता से अधिक चिन्ता रहने से अकसर गैर लोगों पर उनका अधिक प्रभाव पड़ता है, और यदि वे कुछ विद्वत्ता हासिल कर लें तो वह प्रभाव स्थायी भी हो सकता है।

होठों के दोनों कोने भी काफी महत्त्व रखते हैं। नीचे को मुड़े हुए उदासी प्रगट करने वाले होठों के कोने और ऊपर को उठे हुए मजाक पसन्द तबीयत बताने वाले कोनों का अन्तर सभी देख सकते हैं। एक तरह के होंठ होते हैं जिन्हें धनुषाकार कह सकते हैं। यह अच्छे स्वभाव और सर्वदा प्रसन्न रहने वाली तबीयत का चिन्ह है बशर्ते कि दोनों होंठ बहुत कस कर न बैठें। (ऐसे होंठ बहुत ज्यादा लाल या भरावदार भी न होने चाहियें क्योंकि यह ऐन्द्रिक सुखों की लालसा प्रगट करता है।)

जैसा और बातों के बारे में, वैसे ही मुंह के बारे में भी एक मोटा नियम यह समझ लीजिये कि साधारण अवस्था ही प्रायः अच्छी होती है। होंठ न बहुत मोटे हों न पतले, न

बहुत लाल ही हों न एकदम बेरंग ही, न बहुत लम्बे ही हों न एक दम सकरे, तो अच्छा रहता है। खूब भारी जबड़ा, मोटे, भरे हुए, लटकते हुए होंठ, अंगुलियें जड़ के पास से बहुत मोटी मोटी, और अंगूठे की नाखून वाली पोर बहुत फूली हुई, यह सब जिस व्यक्ति में देखिये, उसके बारे में समझ लीजिये कि वह आनन्द का लोभी है—चाहे वह जिव्हा का आनन्द हो या इन्द्रियों का। हृदय के ऐसे लोग प्रायः अच्छे ही होते हैं पर दूसरों का उपकार करने में इन्हें अगर कुछ कष्ट उठाना पड़े तो वे ऐसे परोपकार को दूर से ही नमस्कार करेंगे। पर, इसमें भी एक भेद है। इन चिन्हों के साथ अगर बुद्धिमत्ता के लक्षण हों तो वह आदमी इन्द्रियगामी न होगा।

दृढ़ता सूचक मुंह पर दोनों होंठ जम कर बैठे हुए हों तो समझ लीजिये कि यह मनुष्य जानता है कि वह कहां पर है, तथा उसे कितना आगे बढ़ना और कहां पर रुक जाना चाहिये। ऐसा मनुष्य अपनी इच्छाओं के वश में हो के, या केवल मजा लेने की लालसा में, अपनी मर्यादा के बाहर कभी नहीं चला जायगा। ऐसे मुंह का निचला होंठ यदि जरा बढ़ा हुआ हो तो सम्हल के चलना और अपनी फिक्र रखना प्रगट होता है, और ये दोनों ही बातें इस संसार में आगे बढ़ने अर्थात् उन्नति के लिये आवश्यक हैं। इसी से आप यह भी समझ लें कि वैसे ही होंठ जो एक कमजोर मानसिक शक्ति वाले के साथ रह कर ढीलेपने और मूर्खता के चिन्ह हो सकते हैं, यदि बुद्धिमान और

विचारशील के साथ हों तो उसको बुरी बातों से रोक उसकी उन्नति के कारण बन सकते हैं। पर ऐसे होंठ इस प्रकार के न होने चाहियें कि दांतों से हटे हटे से रहें। यह अपने ऊपर काबू न रख सकने का चिन्ह है।

ऐसे होंठ जो दूसरे के ऊपर खूब फिट बैठें, एक के गड़हे में दूसरे की फुलान और दूसरे के गड़हे में पहिले की फुलान हो, बिना दबाए, आसानी से एक में एक बैठे हुए हों (तो यह अच्छा चिन्ह है। ऐसे पुरुष बहुधा अपने काम में चतुर, आनन्दी स्वभाव के, धोखा न देने वाले, और कुछ कुछ खिंची हुई सी प्रकृति वाले होते हैं। ऐसा मुंह जल्दी झूठ न बोलेगा, लेकिन अगर कोई गुप्त बात हो, ऐसी बात हो जिसे छिपा कर रखना ही अभीष्ट है, जैसे प्रेम इत्यादि, तो ऐसा व्यक्ति पूरा सच न बोलेगा, कुछ बचा के रख लेगा।) ऐसे व्यक्ति से यदि आप चाहें कि इसकी बिना इच्छा के इसके मन का आन्तरिक भाव जान लें तो कठिन होगा।

जैसा कि हमने शुरू में कहा, होठों की आकृति बहुत कुछ मानसिक विकाश पर स्थित है और जिस व्यक्ति का चरित्र क्रमशः जितना उन्नत और विकसित होता जायगा उसके होंठ भी वैसे ही वैसे बदलते चले जायंगे। बुरे चरित्र वाला यदि अपने मनोबल से अपना चरित्र सुधार ले तो उसके होंठों पर यह परिवर्तन स्पष्ट आ जायेगा, इसी तरह कोई अच्छे चरित्र-वाला विपरीत परिस्थिति में पड़ के, बुरे संग साथ में पड़ के, या

किसी अन्य कारण से दुश्चरित्र हो जाय, तो उसके होंठ उसकी कहानी स्पष्ट कहने लगेंगे। साथ ही साथ यह भी समझ रखना चाहिए कि दूसरे के प्रति नम्रता और आदर का भाव, तथा स्वयम् आराम और सुख से रहने की इच्छा—ये दोनों बातें एक साथ ही एक ही व्यक्ति में रह सकती हैं, और ऐसे व्यक्ति के होंठ इन दोनों ही बातों को प्रगट करते रहेंगे। इस लिये अगर आप चाहते हैं कि आपके मुंह की आकृति सुन्दर हो, आकर्षक हो, तो आप अपने मन के भावों को शुद्ध, प्रेमी, सरल, और गंभीर बनाइये, दूसरे से सहानुभूति करना सीखिये, दूसरे के दुःख में भाग लेना, उसे कम करने की चेष्टा में रहना, सीखिये। देखियेगा कि धीरे धीरे आपकी आकृति इन सद्‌गुणों को ग्रहण कर रही है। कुछ ही दिन बाद आप स्वयम् अपने होंठों का अन्तर देख के चकित हो जायेंगे। इसके विपरीत यदि आपके मन में सदा बुरे विचार ही दौड़ा करते हैं, दूसरों से डाह घृणा इत्यादि का ही प्राबल्य रहता है, तो आपका अच्छा चेहरा भी धीरे धीरे खराब हो जायगा। याद रखिए किसी बुद्धिमान के कहे हुए इस प्राचीन वाक्य को—'चेहरा भावों की खिड़की है।' मनुष्य के आंतरिक भाव उसके चेहरे से झांकते रहते हैं।



सातवां अध्याय

दांत और ठुड्ढी

नाक या मुंह जितने महत्व की चीज न होने पर भी दांत कुछ न कुछ बताते अवश्य हैं और इसी लिये इनका भी कुछ विवरण दे देना उचित है।

साफ सुडौल पंक्तिबद्ध दांत केवल सुन्दर ही नहीं होते, वे अच्छे स्वास्थ्य के भी चिह्न हैं। पीले, टेढ़े मेढ़े, आगे को निकले या पीछे को घुसे, तथा मुड़े हुए दांत खराब स्वास्थ्य भी बताते हैं और खराब स्वभाव भी। कारण बुरे दांत होंगे तो बुरा स्वास्थ होगा और बुरा स्वास्थ होगा तो स्वभाव भी चिड़चिड़ा, क्रोधी, अनमना हो जायगा, अतएव मनुष्य को चाहिये कि न केवल अपने वरन अपने लड़कों के दांतों पर भी खूब खयाल रक्खे और उनमें कोई खराबी न आने दे।

कुछ दांत ऐसे होते हैं जो ऊबड़ खाबड़ होते हैं यानी कोई नीचा तो कोई ऊंचा होता है तथा कोई आगे तो कोई पीछे

रहता है। कुछ दांत लम्बे, बेतरह लम्बे होते हैं, कुछ छोटे, बहुत छोटे होते हैं, कुछ मसूड़ों के भीतर एक दम दबे हुए रहते हैं और कुछ मसूड़ों के बिल्कुल बाहर निकले रहते हैं। कुछ इस ढंग के होते हैं कि जब वह मनुष्य हंसे तो ऊपर का या नीचे का या दोनों मसूड़े एक दम खुल जाते हैं और बेढंगे तौर पर दिखने लगते हैं, तथा कुछ ऐसे होते हैं जिनमें ऊपर वाले दांत आगे और नीचे वाले पीछे होने के बजाय इसका बिल्कुल उलटा अर्थात् नीचे वाला आगे और ऊपर वाला पीछे होता है अथवा सब नहीं तो उनमें से कुछ ऐसे होते हैं। इन सभी बातों का कुछ खास अर्थ होता है।

अवश्य ही जैसा हमने पहिले कहा, साफ, चिकने, सुडौल, बराबर के, और न बहुत लंबे न छोटे, न भीतर घुसे न आगे निकले, न मसूड़े के अन्दर ही दबे न बाहर ही निकले, ऐसे दांत सुन्दर भी होते हैं और अच्छे स्वास्थ के भी चिह्न हैं। जिसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है उसका चित्त भी प्रसन्न रहता है अतएव ऐसे दांत जिसके देखिये समझ लीजिये कि वह अच्छे स्वभाव का, हंसमुख, सरल, स्वस्थ व्यक्ति है।

ऊबड़ खाबड़ या आगे पीछे वाले यानी असमान दांत कुड़-बुड़े स्वभाव और रागी प्रकृति के चिह्न हैं। लंबे दांत लंबी आयु पाने की सम्भावना, नाटे दांत छोटी आयु की सम्भावना बताते हैं। बहुत ही नुकीले, लंबे, पशुओं जैसे दांत पशुओं जैसा स्वभाव भी बताते हैं।

कभी कभी आप ऐसे दांत देखेंगे जो आगे को निकले हुए होते हैं। यह मक्खीचूसपना, चीजों और द्रव्य को बटोरने की आदत, लालची स्वभाव, इत्यादि प्रगट करते हैं। किसी मुक्तहस्त से खर्च करने या दान देने वाले व्यक्ति को कभी भी आप इस प्रकार के दांतों वाला न पावेंगे। दांत जितना ही आगे को निकले होंगे उतना ही अधिक यह बात होगी। कोई कोई दांत तो आगे बढ़ कर होंठों तक को दबा लेते हैं। ऐसा व्यक्ति और भी अधिक लालची, मक्खीचूस, चीजों को कस के पकड़ रखने वाला, होगा। यद्यपि इसका कभी कभी अपवाद भी नजर आता है और कुछ दयालु दाता या परोपकारी व्यक्ति कभी कभी ऐसे भी नजर आ जाते हैं जिनके इस तरह के दांत होते हैं, पर यदि आप गौर से उनके बारे में जांच करियेगा तो देखियेगा कि उनकी यह दातव्यता, दयालुता, या परोपकार, उनके हृदय से नहीं निकलता बल्कि किसी मतलब से होता है। इसके अन्दर नाम कमाने की, बड़प्पन हासिल करने की, या किसी पाप का प्रायश्चित्त करने की इच्छा दबी रहती है। हृदय की उदारता या दयालुता ऐसे दांतों के साथ आपको कभी न मिलेगी।

प्रकृति की लीला देखिये। वह कितने भीतर से काम करती है इसका उदाहरण यह दांतों वाला मसला है। डाक्टरों का कहना है कि बच्चेपन यानी बहुत छोटी उम्र में बहुत मीठा खाने अथवा उंगली या रबर की चुसनी दिन रात चूसते रहने

से ऐसा होता है। आप पूछेंगे कि लड़कपन की एक खराब आदत अगर दांतों की शकल बिगाड़ देती है तो इससे मनुष्य का स्वभाव या चरित्र भला बुरा कैसे कहा जा सकता है? सो ऐसे कि लड़कपन ही से प्रकृति मानव-स्वभाव प्रगट करती रहती है। जो लड़का लालची तथा इकट्ठा करने, या बटोर रखने वाले, स्वभाव का होता है वही अंगूठा या चुसनी चूसने का भी ज्यादा आदी होता है। छोटे बच्चे कोई चीज लेंगे, चट उसे मुंह में डाल लेंगे। उनका मनीबेग, पाकेटबुक, जेब या थैली जो कुछ है उनका मुंह है। छोटे से बन्दर के बच्चे को लक्ष्य कीजिये। अगर वह कोई चीज खा रहा है और आप उसे भगाते या डराते हैं, तो वह चट उस चीज को मुंह में भर के भाग जायगा। यह काम उसका लालची स्वभाव उससे कराता है। यही स्वभाव मनुष्य के छोटे बच्चों से भी यही काम कराता है और वह भी हरएक वस्तु को मुंह में रख लेना पसन्द करता है। लड़कपन की यह आदत आगे चल कर स्वभाव और चरित्र के रूप में प्रगट होती है। आप शायद पूछें—छोटे से बच्चे में यह लालचीपना कैसे आया? यह एक दम दूसरा प्रश्न है। इसका पुनर्जन्म से सम्बन्ध है। पूर्वजन्म की आदतें जल्दी भूली नहीं जा सकतीं चाहे शरीर बदल भी जाय—खैर।

कुछ कुछ भीतर को झुके या घुसे हुए दांत लज्जाशीलता और दब्बूपना प्रगट करते हैं तथा आगे को निकले लंबे नुकीले

दांत और भारी जबड़े कठोरता क्रूरता और दबंगता जाहिर करते हैं। पर कभी कभी इन दोनों बातों से विपरीत भी देखा जाता है यदि अन्य लक्षण दूसरे प्रकार के हों।

दांतों के साथ वाले जबड़े किस किस्म के हैं इसको भी ध्यान में रखते हुए ही दांतों को देख कर मनुष्य के स्वभाव या चरित्र का निर्णय करना चाहिये। यदि जिद्दी स्वभाव, कट्टरता, आदि हो तो जबड़ा भारी, चौड़ा और कुछ लटका हुआ सा होता है। ऐन्द्रिकसुखापेक्षी व्यक्तियों का भी जबड़ा प्रायः ऐसा ही होता है। अकसर आप देखेंगे कि जितना भारी और बड़ा जबड़ा है, मनुष्य उतना ही "पार्थिव" प्रकृति का यानी सांसारिक वस्तुओं का लोभी है। जितने मांस खाने वाले पशु हैं सब के जबड़े मजबूत और बड़े होते हैं। लालची जानवरों के जबड़े लंबे होते हैं। मनुष्य में भी वैसा ही समझिये—तब यह बात है कि अन्य चिन्ह जैसे माथा, होंठ, बाल, नाक, आदि कुछ और कहते हों तो आपको सम्हल कर कुछ निर्णय करना चाहिये। अगर सिर का अगला हिस्सा छोटा और पीछे को हटा हुआ हो, साथ में जबड़े चौड़े हों तो ऐसा व्यक्ति साथ करने योग्य नहीं। माथा चौड़ा, पेशानी चमकती हुई, स्थिर आंखों के साथ ऐसा जबड़ा हो तो वह मनुष्य बुद्धिमान है और अपना खास व्यक्तित्व रखता है। बुलडाग के जैसा जबड़ा अच्छा नहीं होता।

अब ठुड्ढी पर आइये। असल में दांत जबड़ा और

ठुढ्ढी, इन तीनों को मिला कर ही सेट पूरा होता है और इसी लिये इन तीनों पर एक साथ ही नजर डालनी चाहिये। ठुढ्ढियों की भी कई किस्में होती हैं। कुछ सीधी होती हैं, कुछ ऊपर को उठी हुई, कुछ नुकीली, कुछ चौकोर या लंबी अथवा चौड़ी या नाटी होती हैं, कुछ दबी हुई तो कुछ बीच से फटी हुई सी होती हैं। इन सभी का कुछ कुछ मतलब है।

कुछ ठुढ्ढियों में गढ़े से पड़े होते हैं। ये सुन्दर अवश्य लगते हैं, पर इनके साथ अगर अंगुली की पोरें मोटी मोटी हों तो आनंदी स्वभाव होते हुए भी ऐसे व्यक्ति अक्सर ऐन्द्रिक सुखों के लालची होते हैं। बड़ी ठुढ्ढी मजबूती का लक्षण है। जिस ठुढ्ढी पर मांस कम हो हड्डी ज्यादा, साथ ही वह बड़ी और चौड़ी हो, तो यह स्थिरता धीरता और गंभीरता का चिन्ह है। ऐसा व्यक्ति अपने गुणों का अपव्यय नहीं करता और जिस काम में लगता है दिलोजान से उसमें जुट जाता है। चौकोर ठुढ्ढी लगन की, साथ ही कुछ क्रोधी स्वभाव की द्योतक है। चिपटी ठुढ्ढी ठंढापना प्रगट करती है, मगर साथ साथ रूखा स्वभाव और सूखा स्वार्थीपना भी जाहिर करती है। अगर ऐसी ठुढ्ढी के साथ गाल की हड्डियां उभरी उभरी रहें, तो कंजूसपना प्रगट होता है। बहुत ही ऊंची गाल की हड्डी हो यह दगाबाजी का चिन्ह है।

नुकीली ठुढ्ढी स्वार्थी स्वभाव प्रगट करती है। आगे को बहुत निकली हुई भी हो तो चालाकी, धूर्तता, आदि प्रगट होता

है। छोटी या दबी हुई हो तो परिश्रमी स्वभाव प्रगट होता है, पर वह परिश्रम अधिकतर अपने लाभ या सन्तोष के लिये ही होगा। ऐसे आदमी अगर परोपकार करें तो भी अपने को सुख देने या वाहवाही लूटने के लिये ही करेंगे। कुछ ऐसी ठुढ्ढीवाले बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के भी देखे जाते हैं, पर अक्सर उनका ऊपरी चोला ही ऐसा होता है, भीतर कुछ दूसरी ही बात रहती है। अपने को कष्ट देके, दुःख में डाल के, खुद भूखे रह के, दूसरे को खाना देने की इच्छा, ऐसे लोगों में नहीं होती। हमें कष्ट न हो और दूसरे को लाभ पहुंच जाय, साथ में हमें वाहवाही भी मिले—यही ऐसी ठुढ्ढीवालों का साधारण स्वभाव समझ लीजिये।

ठुढ्ढी निकली हुई मगर गोलाई लिये हुए हो तो चरित्र की मजबूती के साथ साथ दुनियवी चीजों का आनन्द लेने की इच्छा प्रगट होती है, पर यह आनन्द सीमा के भीतर ही रहेगा अधिक बाहर न जायगा। पर ऐसे लोग अक्सर अपने संग साथ वालों की दोस्ती का लाभ उठा लिया करते हैं। वे दूसरों का भेद सुन लेंगे, दूसरों की बातें जान लेंगे, और उनका भण्डाफोड़ चाहे न भी करें पर उनसे कुछ अपना मतलब सिद्ध कर लेंगे। अगर लेखक है तो वह उस पर एक उपन्यास गढ़ डालेगा, व्यापारी है तो कुछ रोजगार कर डालेगा, गरज कि उस जानकारी को किसी न किसी अच्छे ढंग से अपने फायदे का कर लेगा।

ऐसी गोल घुमावदार ठुढ्ढी के बीच का गढ़ा मजा लेने की तबीयत प्रगट करता है, चाहे वह मजा किसी किस्म का हो, लेकिन ऐसे लोग बहुत खराब चरित्र के अक्सर नहीं होते जब तक कि माथा बहुत छोटा और अन्य चिन्ह भी खराब न हों।

छोटी ठुढ्ढी दब्बू स्वभाव प्रगट करती है, पीछे को हटी हुई या बहुत ही दबी ठुढ्ढी स्वभाव और चरित्र की कमजोरी बताती है।

एक प्रकार की ठुढ्ढी होती है जो यद्यपि गोल और घुमावदार तो होती है पर उसमें होंठ के नीचे की तरफ एक गढ़ा सा होता है—दाँतों की जड़ और ठुढ्ढी के बीच में। यह कल्पनाशील मस्तिष्क का द्योतक है। लेखकों की ठुढ्ढी अक्सर आप इसी ढंग की पावेंगे।

लम्बी, आगे को निकली, नीचे से एकदम चिपटी, ठुढ्ढी वकीलों बारिस्टरों और सालिसिटरों की अक्सर देखने में आती है। इनके साथ अगर पतले और एक दूसरे पर खूब दब कर बैठे हुए होंठ हों तो ऐसा व्यक्ति अपना मतलब सिद्ध करने वाला होता है, दूसरों का चाहे जो कुछ बने बिगड़े। वह भावप्रवणता के फेर में न पड़ेगा, ईमानदार चाहे हो, पर अपना पैसा कहीं से मरने न देगा। अगर ऐसी ठुढ्ढी के साथ साथ ऊपर वाला होंठ लम्बा हो तो ऐसा मनुष्य मित्रता करने लायक नहीं, चौड़ी ठुढ्ढी, ऊंची उभड़ी हुई गाल की हड्डी, तथा

चौड़ी चिपटी नाक, हो तो और भी बुरा। पर, उसके साथ अगर अच्छा माथा, साफ आंखें, और ईमान्दार दृष्टि है, तो समझना चाहिये कि यह मनुष्य चेष्टा करे तो अपने को सुधार सकता है।

दोहरी ठुढ्ढी वाला व्यक्ति मौजी स्वभाव का होता है पर जबान का प्रायः चटोर होता है। चौकोर ठुढ्ढी के साथ उसके निचले हिस्से में दातों की पंक्ति के साथ साथ अगर एक गढ़ा सा पड़ा दीखे तो यह जिद्दीपने का लक्षण है, पर ऐसे व्यक्ति अक्सर उदार चरित्र के होते हैं।



आठवां अध्याय

कान

कान एक ऐसा मामूली सा, किनारे हटा, और साधारण दिखने वाला अंग है कि उस पर प्रायः ध्यान ही नहीं दिया जाता, पर आकृति-विज्ञान में कानों का एक विशिष्ट स्थान है और इनकी सहायता से मनुष्य का चरित्र और स्वभाव बहुत सहज में जाना जा सकता है।

कानों की भीतरी रचना से अवश्य ही हमें कोई मतलब नहीं, हमें तो उनकी ऊपरी शकल सूरत से काम है और उसी के बारे में हम लिखते हैं।

छोटे कान अच्छे कुल और सूफियानेपन के द्योतक हैं, पर उनका बहुत ज्यादा छोटा होना अच्छा चिह्न नहीं। अगर कान बहुत ज्यादा छोटे हैं तो यह डरपोकपने का चिह्न है, खास कर के यदि वे साधारण से अधिक लम्बे भी हों। शायद आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया हो कि डरपोक या दब्बू जानवरों के कान लम्बे होते हैं, जैसे खरगोश के, और अकसर

गर्दन भी लंबी होती है, जैसे हिरन की। वही बात मनुष्य में भी समझिये। छोटे कानों की एक और विशेषता है, वे प्रेम और प्रीति के चिन्ह हैं। यदि उनका निचला सिरा मोटा हो तो यह भाव बहुत अधिक होता है।

कान की स्थिति अर्थात् वह कैसे ढंग पर लगा हुआ है, यह भी कुछ ध्यान देने का विषय है। कुछ लोगों के कान चेहरे से मानों अलग हटे, बाहर निकले से, होते हैं, तो कुछ के सिर के साथ मानों चिपके से रहते हैं। कुछ के कान, जब उनका चेहरा सामने से देखा जाय, तो साफ दिखाई पड़ते हैं, तो कुछ के नहीं दिखते या बहुत थोड़ा नजर में आते हैं। कुछ कान सीधे दिखते हैं तो कुछ टेढ़े से नजर आते हैं। इन सब लक्षणों के भी कुछ खास मतलब हैं। बड़े कान जिनके निचले हिस्से बहुत मोटे हों कुछ भद्दी और पार्थिव प्रकृति के चिन्ह हैं। छोटे कान, जैसा कि हमने ऊपर कहा, सूफियानेपने के चिन्ह हैं, पर ऐसे कानों वाला अकसर ठंढे दिल का होता है। सिर की बगली से चिपके हुए कान भावुकता और कुछ लज्जाशीलता बताते हैं, खास कर के जब छोटे भी हों। अगर ऐसे कान बहुत छोटे हों तो दब्बू और लज्जालु प्रकृति समझनी चाहिये, पर इससे यह नहीं कि स्वभाव अथवा चरित्र की भी कमजोरी मान ली जाय। समय पड़ने पर ऐसे लोग काफी मजबूती दिखा सकते हैं।

अगर कान पीछे की तरफ टेढ़े से हों तो डरपोकपना बताते

हैं। सीधे खड़े कान हिम्मत और मजबूती के चिन्ह हैं। ऐसे कान कड़ा स्वभाव भी बताते हैं और शक्ति बल इत्यादि के भी द्योतक हैं। वीर पुरुषों के कान अकसर आप ऐसे ही पावेंगे।

कुछ कान आप ऐसे पावेंगे जो एक अजीब ढंग से टेढ़े हो के सिर से अलग हटे रहते हैं, मानों भेड़िये के कान हों। ऐसे कान अच्छे नहीं। ये क्रूरता के चिन्ह हैं। अगर कद में छोटे भी हों तो ये लालची स्वभाव बताते हैं। मोटे भी हों और नाजुक भी लगें तो परस्पर विरोधी चिन्ह हैं। ऐसे लोगों में सूफियानापना भी नहीं होता और आंतरिक कोमलता भी नहीं।

पर केवल कानों ही को देख कर कोई बात एक दम निश्चय नहीं कर लेनी चाहिये। और सब चिन्हों पर भी निगाह रख के ही कुछ निर्णय करना उचित है। कितने ही वीर और साहसी स्त्री पुरुषों के कान ऐसे दीख पड़ेंगे जैसे लड़ाकू अथवा क्रूर मनुष्यों के होते हैं, पर उन्हें वैसा समझने की भूल न कीजिये। उनकी यह प्रकृति उनके भीतर दबी हुई है, कभी मौका पड़ेगा तो ये बातें निकल पड़ेंगी और वह आदमी वीरता के साथ, बहादुरी और हिम्मत के साथ, बिना एक कदम भी पीछे हटाए, अंत तक लड़ता रह आयगा। यदि वैसा अवसर आ ही गया तो छोटे सूफियाने मोटे या सीधे ऊंचे कानों वाला मर जायगा और मार डालेगा, दया न करेगा। उस समय कोमल लोग कठोर हो जायंगे और मुलायम हाथ तलवार के

धनी बन जायंगे। मखमल के नीचे से लोहा निकल पड़ेगा। ऐसी प्रकृति उस मनुष्य के भीतर दबी रहेगी, उसकी शिक्षादीक्षा परिवार या रहन सहन, इन बातों को चाहे दबाए रहे, पर कभी एक चिनगारी भी पड़ जायगी तो वह बारूद की तरह भभक उठेगा।

लोग अकसर ऐसा कहते सुने जाते हैं "भला कभी किसी को विश्वास हो सकता था कि फलां आदमी ऐसा काम करेगा !!" किसी ने कोई नई बात कर डाली है और लोग इस तरह की फबती कसने लगे हैं। पर आकृति-विज्ञान का जानकार कदापि ऐसा न कहेगा। अगर उसने आकृति देख के चरित्र का निर्णय करना ठीक ठीक सीख लिया है, तो वह चिन्हों द्वारा समझ लेगा कि फलां आदमी में फलां भावना दबी पड़ी है और कभी न कभी निकलेगी ही, बशर्तें कि उस भावना को निकलने का कोई मौका मिल जाय।

कान यदि लंबे और कुछ पोले हों तो यह कला-प्रियता का चिह्न है। ऐसे कान अगर पीछे की तरफ दबे हुए हों तो उदासीनता और विराग बताते हैं। सिर की बगली से चिपके हुए कान कोमल शान्त विचारशील प्रकृति बताते हैं।

कानों के बारे में यह साधारण नियम याद रखिये—छोटे पतले हलके नाजुक कान सूफियाभापन, नफासत, नजाकत, मुलायमियत, अच्छा कुल, आदि बताते हैं। मझोले दर्जे के मजबूती और बल बताते हैं। बड़े, मोटे, भम्भड़ कान, लाल और फूले फूले, पार्थिव, स्थूल, प्रकृति के चिह्न हैं।

कान आंखों के कोनों से किस अन्तर पर हैं और आंख की सीध से ऊपर पड़ते हैं कि नीचे यह भी एक विचारणीय विषय है। आंख से ऊंचे पर कान हों तो अच्छा चिह्न नहीं। यह बदला लेने की प्रवृत्ति, गर्म गुस्सेवर मिजाज, और क्रोधी स्वभाव बताता है। कुछ लोग तो यहां तक कहते हैं कि ख़ूनी आदमियों के कान अकसर ऐसे ही पाए जाते हैं।

आंखों से दूर पड़ने वाले कान योग्यता और विचारशक्ति बताते हैं, चाहे वह मनुष्य इन दोनों गुणों को किसी भी काम में खर्च करे, क्योंकि अकसर इन गुणों का दुरुपयोग होते भी देखा गया है, अतः अन्य सब चिह्नों को लक्ष्य में रख कर ही इस बात का निर्णय करना चाहिए।



नवां अध्याय

गर्दन

मनुष्य की गर्दन शरीर का एक आवश्यक भाग है, क्योंकि इसी के ऊपर मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ भाग—सिर—टंगा रहता है।

गर्दन की बनावट में प्रकृति ने कई बातों का खयाल रक्खा है। वह बोझ उठाने लायक, सिर का बोझ, भी होनी चाहिये, और घूमती फिरती यानी सिर को इधर उधर घुमाने फिराने लायक भी होनी चाहिये, यही नहीं, वह झुकती डोलती यानी सिर को नीचे ऊपर हिलाने डुलाने लायक भी होनी चाहिये। एक साथ ही जब इतने तरह के काम एक ही अजों से होते हैं तो उससे चरित्र और स्वभाव का भी कुछ सम्बन्ध रहे तो आश्चर्य ही क्या है?

मोटे तौर पर गर्दन दो तरह की देखने में आती है—लंबी और पतली, तथा मजबूत और ठिगनी। दोनों बातें एक साथ नहीं होंगी, यानी पतली गर्दन भी रहे, तथा मजबूत भी हो,

ऐसा नहीं हो सकता। न तो लंबी और मोटी गर्दन देखने में आती है, न ठिंगनी और पतली। लंबेपन को प्रकृति प्रायः मजबूती नहीं देती। आपने देखा ही होगा कि लम्बे आदमी प्रायः मजबूत नहीं होते, अकसर उनकी कमर औरों से पहिले झुक जाती है।

सब बातों की तरह गर्दन के विषय में भी मध्य-वृत्ति सब से अच्छी। गर्दन न बहुत लम्बी ही रहे न ठिंगनी ही, तो अच्छी होती है। बहुत मोटी गर्दन आसानी से इधर उधर घूम नहीं सकती, इसी लिये इधर उधर देखने, अपने शत्रु और मित्रों को जानने पहिचानने, प्रकृति के रहस्यों को समझने बूझने, आदि में सदा सहायक नहीं होती। मोटी गर्दनवाले जानवरों जैसे हाथी भैंसे आदि, के हमले से अकसर लोग इधर उधर कावा कतर कर बचते सुने गये हैं—सो इसी लिये कि गर्दन मोटी रहने के कारण वे उसे घुमा फिरा कर सहज में सब कुछ और सब ओर देख भाल नहीं सके। अस्तु, जो गर्दन पतली होगी वह देख भाल ज्यादा कर सकेगी और ऐसी गर्दन वाला अधिक चतुर होगा।

गर्दन का साधारण झुकाव किस ओर को है—सो भी लक्ष्य करने से बहुत कुछ पता लगता है। बहुत गम्भीर विषयों पर देर तक सोच विचार और चिन्तन करते रहने वाले की गर्दन कुछ आगे को टेढ़ी हो जाती है जिससे सिर झुका सा रहता है। चिन्ता, विचार, फिक्र आदि के समय अथवा

किसी अचानक की बात पर, गर्दन अकसर एक तरफ को झुक जाती या झुकी रहती है। इस अवस्था में कोई पड़ा हो तो उसकी गर्दन देखने से इन भावों का पता लग सकता है। घमंडी स्वभाव की गर्दन तनी रहती है, बहादुर की गर्दन अकड़ी रहती है, जोर से हंसती समय गर्दन पीछे को लटक पड़ती है। ये सब बातें थोड़ा भी लक्ष्य करने से सहज ही में जान ली जा सकती हैं अतः इनके विषय में विस्तार से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं, फिर भी हम पशुओं की गर्दन लेकर इस विषय में कुछ बताना प्रारम्भ करते हैं।

पशु-जगत में आते ही सब से पहिली बात आपकी निगाह में यह पड़ेगी कि लम्बी गर्दन वाले पशु अकसर कमजोर और दब्बू होते हैं तथा शिकार बनते हैं—पशुओं के भी, और मनुष्यों के भी। यह भी आप लक्ष्य करेंगे कि ऐसे पशु कुछ मूढ़ भी होते हैं। प्रकृति ने ऐसे पशुओं को, जो खुले मैदानों में रहते हैं, लम्बी गर्दनें दे रक्खी हैं ताकि वे दूर से ही खतरे को देख के अपने बचाव की चेष्टा करें, जैसे जिराफ, कंगारू आदि तथा ऐसे पशुओं को जो झाड़ियों के बीच में रहते हैं, लम्बे कान तथा मोटी, निकली हुई, आंखें दे रक्खी हैं ताकि वे खतरे की दूर से ही आहट पा सकें और झाड़ियों की आड़ में से भी देख सकें। खरगोश, हिरन आदि इसी दूसरी श्रेणी में आते हैं। साथ ही यह भी है कि इन दोनों ही तरहों के पशु कुछ बहुत बुद्धिमान नहीं होते। चिड़ियों में भी यही बात आप लक्ष्य करेंगे। शुतुरमुर्ग या

बत्तक आदि पक्षी अपनी मूर्खता के लिए जगत-प्रसिद्ध हैं।

नमूने के लिये खरगोश की बात उठा लीजिये। इसके कान लम्बे और सब तरफ घूमने लायक हैं, आंखें मोटी, बाहर को निकलती हुईं, एक साथ ही आगे और पीछे दोनों ही तरफ देख सकने लायक हैं। यह उसकी रक्षा के साधन हैं, पर साथ साथ आप पावेंगे कि उसकी गर्दन लम्बी नहीं है. यह इसी लिये कि यह पशु अकसर झाड़ियों और आड़ की जगहों में रहता है और इधर उधर दबक के अपने को छिपा सकता है। इसे दूर देखने या इधर उधर गर्दन घुमा के देखने की जरूरत नहीं पड़ती इसी लिये प्रकृति ने इसे लम्बी गर्दन नहीं दी। पर इसके कान तेज होते हैं, बहुत हलका सा शब्द भी यह दूर से सुन सकता है और इस काम में खासी मदद इसके लम्बे पतले सब तरफ को घूमने फिरने वाले कान देते हैं। इन कानों की एक खास विशेषता यह है कि ये पीछे को, पीठ के साथ, सट जाते हैं। जितने डरपोक दब्बू कमजोर जानवर हैं, उनके कान आप ऐसे ही, पीछे को हटे और गर्दन या पीठ के साथ सट जाने वाले देखेंगे।

इस प्रकार यह पता लग गया कि जो जानवर डरपोक दब्बू या कमजोर होते और इसी कारण सहज ही में दूसरों के भक्ष्य बन जाते हैं उनके लम्बी पतली गर्दन और लम्बे निकले हुए कान होते हैं। अब आगे चलिये और मजबूत बहादुर तथा क्रूर पशुओं पर आइये।

सांड़ या भैंसे को देखिये वा शेर या हाथी पर निगाह डालिये, ये सभी बहादुर हिम्मतवर और ताकतवर होते हैं। और इनकी गर्दनें कैसी होती हैं ? छोटी और नाटी, पर मोटी और बहुत ही मजबूत। वे न लचीली होती हैं, न लम्बी ही। सहज में इधर उधर घूमती भी नहीं। प्रकृति का दूसरा रहस्य इस बात में मिलता है। मजबूती है तो लचीलापना नहीं है, अकड़ाव है। ऐसे जानवर सहज में सिर्फ एक ही तरफ को देख सकते हैं सब तरफ को नहीं, यह इनकी भीतर को घुसी हुई आंखों से भी पता लगता है और ऐसी ही गर्दन और आंखों के कारण अन्य कमजोर पशु अकसर इनसे बच जाते हैं क्योंकि वे चपल होते हैं। बात यह है कि जिन जानवरों का दूसरों द्वारा शिकार होता है उनको तेज नजर, तेज कान, और तेज चाल, प्रकृति उनके बचाव के लिये ही दे देती है। कमजोर, डरपोक, दब्बू या मूर्ख पशुओं में इसी से ये बातें अक़सर पाई जाती हैं। उधर ऐसे पशु जो शिकार खेल के अपना पेट भरते हैं ताकतवर होते हुए भी अकसर सुस्त, लध्धड़ बहुत तेज आंखों वाले नहीं, तथा भारी भड़कम और बेडौल शरीर के, होते हैं तथा चाल में भी प्रायः सुस्त होते हैं, क्योंकि यदि ऐसा न होता तो बेचारे कमजोर जानवरों का अस्तित्व ही लोप हो जाता। छोटे जानवर चंचल, चपल, फुर्तीले होते हैं, और चट से भाग या छिप जाते हैं, मजबूत जानवर, चौड़ी छाती और विस्तृत सीनेवाले, चाहे लम्बी उछाल मारें और कुछ दूर

तक बहुत तेज दौड़ भी सकें, पर उनमें लम्बा दम नहीं होता। पहिली ही उछाल में शेर ने अगर हरिन या बारहसिंघे को दबोच नहीं लिया तो फिर वह अकसर उसे पकड़ नहीं पाता।

अस्तु अब प्रकृति का नियम स्पष्ट हो गया। डरपोक, कमजोर, आज्ञाशील, पोस मानने वाले, तथा कुछ कुछ मूर्ख पशुओं की लम्बी और पतली गर्दन होती है, तथा ताकतवर, बहादुर, हिम्मतवर, मजबूत, क्रूर, हिंसक पशुओं की मोटी छोटी मजबूत गर्दन होती है। इन दोनों किस्मों के बीच में अवश्य ही कई श्रेणियां और ढङ्ग आ जाते हैं।

अब मोटे तौर पर आप यही बात मनुष्यों के सम्बन्ध में भी समझ लीजिये और दोनों किस्म की गर्दनों के माने याद कर लीजिये। एक मोटी बात तो आपकी निगाह में पड़ी ही होगी। स्त्रियों की गर्दन पतली और नाजुक होती है, और वे साधारणतः कमजोर और कोमल स्वभाव की भी होती हैं।

झुकी गर्दन नम्रता, विनय, आदि का चिन्ह है। किसी का आदर करती समय हम गर्दन झुका लेते हैं। विचार या फिक्र में भी गर्दन झुक जाती है।

पीछे को फिंकी हुई गर्दन घमंड, ऐंठ, स्वाभिमान, घृणा, लापरवाही, आदि का चिन्ह है। इस तरह की गर्दन हिम्मत भी जाहिर करती है।

ऊपर हम कह आए हैं कि विचारशील व्यक्ति की गर्दन अकसर आगे को झुक जाती है, अस्तु ऐसी गर्दन देख आप

समझ लें कि वह विचारशील है, पर ऐसे व्यक्ति अकसर झोंकियल स्वभाव के, आगा पीछा बहुत ज्यादा सोचने वाले, कुछ कमजोर प्रकृति के, और जल्दी से कुछ निर्णय न कर सकने वाले भी होते हैं। एक बगल को झुकी हुई गर्दन कुछ प्रीति और मेल जोल पसंद करने वाला स्वभाव प्रगट करती है। ऐसे लोग दूसरों से बहुत जल्दी घुल मिल बैठते हैं, खुश-तबीयत होते हैं, अकसर बकवादी होते हैं, और जिन्दगी का मजा लेने वाले होते हैं, पर प्रायः कुछ ओछो तबीयत के भी होते हैं। इन पर बहुत विश्वास कर बैठने से कभी कभी धोखा हो सकता है।

चिन्तित, थका हुआ, पस्तहिम्मत, दुःख-कातर, व्यक्ति अपनी गर्दन झुका कर रक्खेगा। खुश, प्रसन्न, संतुष्ट, आशावादी, ऊपर को उठी गर्दन रक्खेगा। विश्वास और भक्ति-पुष्ट अंतःकरण वाले व्यक्ति की गर्दन भी अकसर उठी हुई रहती है क्योंकि उसका परमात्मा पर निर्भर रहना उसे भरोसा दिलाए रहता है।

दसवां अध्याय

माथा

हमने चेहरे के एक बहुत ही मुख्य भाग को अब तक छोड़ रक्खा जो है—माथा। आकृति-विज्ञान में माथे का महत्व बहुत अधिक है पर चूंकि इसके साथ साथ चेहरे और शरीर के प्रायः सभी भागों पर विचार करना पड़ेगा इसी लिये इस विषय को हमने सब से पीछे उठाया है।

आकृति-विज्ञान, अर्थात् चेहरा मोहरा देख कर मनुष्य के स्वभाव या चरित्र की पहिचान करने की कला में माथे का एक निराला स्थान है, क्योंकि इसी के भीतर मनुष्य की विचार-बुद्धि, मानसिक-शक्ति तथा आत्म-विकास का स्थान है। मनुष्य के सिर के स्वाभाविक तौर पर तीन भाग किये जा सकते हैं। अगला भाग यानी माथा, पिछला भाग यानी गर्दन के ऊपर वाला हिस्सा, और बगली यानी दोनों कानों की तरफ वाले हिस्से। इनमें से साधारणरीत्या अगला भाग यानी माथा बुद्धि, विचार, और मानसिक शक्ति का केन्द्र है (जैसा कि हमने ऊपर कहा),

पिछला भाग स्थूल, पार्थिव, पाशविक वृत्तियों का केन्द्र है, और दोनों बगल में कला, विज्ञान, और अन्य वृत्तियों का स्थान है। अगला भाग बड़ा हो तो विचारशीलता प्रगट करता है, पिछला बढ़ा हो तो सांसारिकता, दोनों बगलें उन्नत हों तो कलाप्रियता प्रगट होती है। इन्हीं तीनों भागों की स्थूलता और कृशता के क्रम से तीन प्रकार के मनुष्य भी मुख्यतः दीख पड़ते हैं, बुद्धिमान और मूर्ख, भावुक और पाशविक वृत्तियों वाले, कलाप्रिय और जड़।

अंग्रेज और अमेरिकन विद्वानों के मत से (हमारे ऋषियों का मत इससे कुछ भिन्न है और उसके बारे में हम कभी फिर कहेंगे) सिर के अगले भाग में आशा, आश्चर्य, इज्जत आदि के भाव रहते हैं, मजबूती, स्थिरता, विचारशीलता, उचित अनुचित का ध्यान, आदि ऊपर की तरफ होते हैं, लालच, नाशकारिता, लड़के बच्चों का मोह, सांसारिक चीजों से प्रेम, लड़ाई झगड़े की इच्छा, आदि भाव सिर के पिछले भाग में रहते हैं तथा गाना, बजाना, नाचना, नाट्य करना, चित्रकला आदि आदि दोनों बगल में रहते हैं। आगे चल कर हम इन विषयों पर और भी कहेंगे, फिलहाल पहिले माथे के बारे में ही बताते हैं।

चौड़ा ऊंचा माथा देखते ही विचारशील बुद्धिमान व्यक्तित्व का भान होता है। उसी तरह छोटा, दबा हुआ, सकरा माथा मूर्खता, दुष्टता, कुविचार आदि बताता है। साधारण रीति से यह बात ठीक होते हुए भी इसमें कुछ प्रभेद हैं जिनके बारे में

हम मौका आने पर कहेंगे, फिर भी मोटे तौर पर यह बात निर्विवाद है कि बुद्धि और विचार की शक्ति, तथा अपने परिश्रम द्वारा प्राप्त किये हुए ज्ञान और अनुभव का स्थान, माथा ही है। (जिस मनुष्य को पढ़ने का बहुत शौक है, जो केवल पढ़ता ही नहीं, पढ़े हुए ज्ञान को याद भी रखता और समय पर काम में भी लाता है और इसी कारण जिसकी स्मृति-शक्ति भी तेज है, उसका माथा बहुधा ऊंचा, उभरा हुआ, चमकदार, आप पावेंगे। रचयिता, संग्रहकर्ता, परिश्रमी, बहुत से विषयों में बहुत कुछ जानने वाला, बहुत सी बातें याद रखने वाला व्यक्ति, अकसर ऐसे ही उन्नत ललाट वाला होता है। पर इस बारे में एक बात याद रखने लायक है। ऐसे व्यक्ति का समूचा ज्ञान पठन पाठन से ही प्राप्त होता है, अकसर ऐसे माथे वाले में स्वयं देख या अनुभव करके अपना ज्ञान बढ़ाने की शक्ति नहीं होती। पढ़ी हुई, या दूसरों से सुन कर याद रक्खी हुई बातें ही, उसके ज्ञान की सीमा होती हैं।)

नीचा, अर्थात् कम ऊंचा माथा, जो साथ ही में दूर तक फैला यानो चौड़ा भी हो, यह कल्पनाशक्ति, तेज बुद्धि, तथा स्वाभाविक चतुराई का चिह्न है। ऐसा माथा अकसर आप औपन्यासिकों, बालकों के लिये कहानियां लिखने वालों, घटनाप्रद पुस्तकें रचने वालों आदि का पावेंगे। ऊंचे और कम चौड़े माथे की बनिस्बत नीचे और ज्यादा चौड़े माथे में कल्पना और अनुभवशक्ति अधिक होती है। ऐसे माथे वाला स्वयं

देख के, अनुभव कर के, सोच के, किसी नतीजे पर पहुंचता है, उधर वह पहिला यानी ऊंचे माथे वाला—पढ़ के, दूसरों की लिखी बातों को बूझ के, अपना ज्ञान बढ़ाता है। इसमें ज्ञान को ग्रहण करने और बटोर रखने की शक्ति रहती है, उसमें स्वाभाविक ज्ञान, चतुरता, हाजिरजवाबी, आदि।

अब ऐसे माथों पर आइये जो एक साथ ही—ऊंचे भी हैं और चौड़े भी। इनमें वे दोनों ही गुण होंगे जो हमने ऊपर इन दो प्रकार के माथों के बताए हैं, अर्थात् इनमें स्वाभाविक बुद्धि, अनुभव और कल्पनाशक्ति भी होगी और सुने या पढ़े ज्ञान को बटोर रखने या याद रखने की शक्ति भी। ऐसे लोग अकसर महान व्यक्ति (जीनियस) होने योग्य होते हैं अगर उन्हें उचित अवसर मिल जाय। इनमें परिश्रम और योग्यता दोनों ही होते हैं और फल होता है—पूर्णता। ऊंचे माथे की परिश्रमपूर्वक ग्रहण करने की शक्ति को चौड़े माथे की कल्पनाशक्ति मिल जाती है और फलस्वरूप वह अपनी लगन और अध्यवसाय के बल पर सफलता लाभ कर लेता है। पर कभी कभी ऐसे माथे वाले भी अवसादग्रस्त, दुर्बल-चित्त, कुविचारपूर्ण और कमजोर मनोबल वाले देखने में आते हैं। इसका कारण अन्यत्र खोजना पड़ेगा, सम्भव है उनकी ठुड्ढी कमजोरी बताती हो या नाक मूर्खता।

पर माथे के कुछ और रूप भी होते हैं, कुछ माथे पीछे को हटे हुए, कुछ सीधे, कुछ आगे को झुके, और कुछ एक दम खड़े

होते हैं। इन माथों की तरफ लक्ष्य करती समय भौं की ओर ध्यान देना मत भूलिये क्योंकि कुछ आकृतियों का भौं वाला भाग कुछ ऐसे ढंग पर उभड़ा हुआ होता है कि वह माथे का रूप ही बदल देता है।

पीछे को हटता जाता हुआ सकरा माथा अच्छा चिह्न नहीं है—हमारा मतलब असलियत में पीछे से हटे माथे से है, हटा हुआ दिखनेवाले माथे से नहीं, क्योंकि दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है। प्रायः माथे के ऊपर वाले सिर के बाल उड़ जाने से भी माथा पीछे को हटा हुआ और सकरा लगने लगता है, पर उसे वैसा मत समझिये। वास्तव में ही पीछे को हटा हुआ माथा बुद्धि की कमी बताता है और सकरा यानी कम चौड़ा माथा कठोरता और ग्रहण करने में अयोग्यता का चिन्ह है। ऐसा माथा अगर रेखाओं से भी रहित हो यानी उस पर सिकड़ें न हों तो यह कल्पना और सहानुभूति का अभाव प्रगट करता है। माथे पर की सिलवटें सहानुभूति और विचार की क्रिया से उत्पन्न होती हैं, अतएव जिस माथे पर यह चिह्न न दिखे उसे इन बातों से हीन समझना होगा। माथे पर की कुछ लकीरें भवों को बार बार उठाने और देर तक गम्भीरता के साथ सोचते रहने से भी पैदा होती हैं, पर ये लकीरें लेटी लेटी होती हैं यानी दाहिने से बाएं या बाएं से दाहिने आती हैं पर ऊपर हमने सहानुभूति या विचार से उत्पन्न जिन लकीरों के बारे में कहा वे खड़ी खड़ी यानी ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर को गई

हुई होती हैं, अस्तु दोनों के मतलब में भ्रम नहीं होना चाहिये। एक चीनी कहावत कहीं देखी थी जिसका मतलब था—"अगर किसी के बारे में यह जानना हो कि वह क्या होने वाला है—तो उसके माथे की तरफ देखो, अगर किसी के बारे में यह जानना हो कि वह क्या हो गया है तो उसके मुंह की तरफ उस वक्त देखो जब वह शान्तिपूर्वक बैठा हो।" यह बहुत सही बात है। हमारे यहां कहते भी हैं कि मनुष्य का भाग्य उसके माथे पर लिखा रहता है, वह लिखावट यही माथे की सिलवटें हैं—खड़ी और पड़ी। इन लकीरों की भाषा जो पढ़ सकता है उसे कुछ विशेष जानना बाकी नहीं रहता।

शायद आप पूछ बैठेंगे कि माथे की लकीरें इन बातों को कैसे प्रगट कर पाती हैं? उत्तर बहुत सहज है। मनुष्य जो कुछ देखता है, सुनता है, भिन्न भिन्न इन्द्रियों द्वारा अनुभव करता है, उसका प्रभाव स्नायुओं द्वारा उसके दिमाग के अन्दर जाता है, और दिमाग उसके उत्तर में जो कुछ कहता है वह भी स्नायुंओं द्वारा ही बाहर आता है। इन स्नायुओं का प्रधान आवागमन का मार्ग माथा है अर्थात् उधर ही से बहुत सी स्नायुएं आई गई हैं। इन स्नायुओं की क्रिया का जो प्रभाव होता है वह मनुष्यों के माथे पर सब से बेशी पड़ता है क्योंकि ललाट का मैदान भाव ग्रहण करने का सब से उत्तम स्थान रहता है। मनुष्य के विचार, इच्छाओं, भावनाओं, आकांक्षाओं, कल्पनाओं आदि का एक छाया-चित्र सा इस मैदान—माथे—पर

पड़ जाता है, साथ ही भिन्न भिन्न विचारों में पड़ कर मनुष्य भिन्न भिन्न प्रकार से अपने माथे को सिकोड़ता या सिमटाता फैलाता है जैसा बार बार होने पर माथे पर वैसी ही लकीरें भी पड़ चलती हैं। क्रोधी का क्रोध, दयालु की सहानुभूति, स्नेही का अनुराग, या कल्पना-परायण व्यक्ति की विविध कल्पनाएं, अपनी मूक भाषा में माथे पर अपना चिन्ह छोड़ जायँ इसमें आश्चर्य ही क्या है ?

चिन्ता, आश्चर्य, अवसाद, क्रोध, या बहुत देर तक का गम्भीर विचार, माथे पर की लकीरों में अपनी छाया छोड़ जाता है। जिस माथे पर किसी प्रकार की कोई भी लकीरें आप न देखें तो सहज ही में समझ सकते हैं कि यह व्यक्ति सहानुभूतिहीन, स्वार्थी, कल्पनाशक्तिविहीन, स्तब्ध या बुझी हुई तबीयत वाला है। पर इस तरह एक दम रेखाओं से हीन माथा आपको शायद खोजने से भी नहीं मिलेगा। माथे की लकीरें विचारों से पैदा होती हैं जैसा कि हमने ऊपर कहा, और ऐसा व्यक्ति कौन होगा जिसके मन में कभी कोई विचार, भला या बुरा, उन्नत या निकृष्ट, उठे ही नहीं ! सच तो यह है कि माथे की लकीरों और उभाड़ आदि द्वारा चरित्र और स्वभाव की पहिचान एक अलग कला ही है जिससे अंग्रेजी में फ्रेनोलाजी कहते हैं।

प्रकृति का एक वैचित्र्य देखिये। मनुष्य की आकृति देख कर जिस प्रकार आप उसके चरित्र या स्वभाव के बारे में कह

सकते हैं, उसी तरह हाथ की रेखाएं देखनेवाला उन रेखाओं को देख कर कह सकता है, और उसी तरह माथे की लकीरें पढ़ने वाला उन लकीरों को देख कर कह सकेगा, और तीनों ही अगर अपने अपने विषय के पूर्ण ज्ञाता हैं तो तीनों का निर्णय एक ही होगा। आकृति-विज्ञान के सम्बन्ध में एक बड़ा ग्रन्थ लिखने वाले एक फ्रेन्च विद्वान ने इस सम्बन्ध में अपना एक विचित्र अनुभव लिखा है कि—एक बार जब वह समुद्र तट के किसी छोटे नगर में सैर के लिये गया हुआ था तो एक आदमी उसके पास आया और बोला कि क्या आप मेरी आकृति देख कर मेरे बारे में कुछ कह सकते हैं ? इस विद्वान ने जो कुछ बताया सो उस मनुष्य ने कागज पर नोट कर लिया, और जब यह कह चुका तो उसने दो कागज और भी इसके सामने रख दिये। इनमें से एक कागज में एक हाथ देखने वाले ने उसका हाथ देख कर उसके स्वभाव के विषय में लिखा था और दूसरे में एक माथे की लकीरें पढ़ने वाले ने उसका माथा देख कर लिखा था। आश्चर्य की बात थी कि इन तीनों कागजों में उस मनुष्य के स्वभाव का जो वर्णन किया गया था वह आपस में बिल्कुल मिलता जुलता था ! इस बात का जिक्र वह फ्रेन्च विद्वान बड़े आश्चर्य के साथ करता हुआ पूछता है कि क्या कोई अच्छा ज्योतिषी अगर उस मनुष्य का जन्मपत्र देखता तो वह भी वैसा ही कहता ? हम तो कहेंगे कि—"हां" पर खैर, यह दूसरा विषय हो जाता है। इस समय जो हम बताना चाहते हैं वह

यही कि मनुष्य के स्वभाव चरित्र या विचारों की छाप उसकेशरीर में स्थान स्थान पर पड़ जाती है केवल पढ़ने वाला चाहिये। अस्तु।

जैसा कि हम कह रहे थे, माथों की शकल कई तरह की होती है। कोई ऊंचा तो कोई चौड़ा होता है, कोई पीछे हटा तो कोई आगे निकला होता है, कोई सीधा खड़ा तो कोई ऊपर से सकरा और नीचे से चौड़ा होता है। इन सभी चिन्हों से अलग अलग बातें प्रगट होती हैं और हम संक्षेप में इन सभों के बारे में थोड़ा थोड़ा बताते हैं।

चौड़ा और ऊंचा माथा विद्वत्ता और योग्यता का सूचक है। अगर माथे का ऊपरी हिस्सा गोलाई लिए हुए हो तो यह कृपालुता, आदर, अनुराग, धार्मिकता आदि का चिन्ह है। ऊपर वाला भाग गोल न हो, अगर कुछ नुकीला सा हो तो दृढ़ता, जिद्दीपना, मजबूती आदि का द्योतक होता है। सिर का पिछला हिस्सा भरा हुआ हो तो प्रेम का, चिपटा हो तो स्वार्थपरता का चिन्ह है। यदि सिर के दोनों कानों की तरफ वाले हिस्से बहुत ज्यादा निकले हुए हों तो झूठ, चोरी, कभी कभी खून तक कर डालने वाला स्वभाव प्रगट होता है, पर ऐसे सिर बहुत कम ही मिलते हैं यही कुशल है। यदि ये दोनों बगली हिस्से थोड़ा ही उभाड़दार हों, बहुत निकले न हों तो धोखा, गुस्सा, लालच, कंजूसी, डाह आदि प्रगट करते हैं।

माथे के ऊपर वाला हिस्सा उभाड़दार हो तो कल्पना, शक्ति, विचारशीलता, उचित अनुचित का ख्याल आदि प्रगट

होता है। माथे का बिचला, यानी दोनों भौंहों के ऊपर वाला हिस्सा अगर गोलाई लिये हुए हो तो वह फिलासफर का माथा है और गम्भीर रूप से सोचने विचारने की क्षमता प्रगट करता है। अगर यह भाग घुमावदार तो हो पर ज्यादा नहीं, और इसके ऊपर का हिस्सा पीछे को हटता हुआ सा हो, तो ऐसे लोग बहुत गम्भीर विचार-शक्ति या बहुत अधिक योग्यता या बहुत अधिक चतुरता तो नहीं रखते, फिर भी साधारण से अच्छे ही होते हैं। जो लोग नई नई चीजें या बातें खोज निकाला करते हैं उनका माथा भी अकसर इसी किस्म का होता है।

बेफिक्र, दुनिया की खोज खबर न रखने वाले, अपने में ही मस्त, भविष्य की चिन्ता या गुजरे हुए का ख्याल न रखने वालों का माथा, कम गोल होता है। जो विचार करके किसी निर्णय तक पहुंचने की क्षमता नहीं रखते, ज्यादातर झोंक में आ के काम कर डालने की आदत जिनकी होती है, ऐसे लोगों का माथा बीच में से अकसर उभरा हुआ पाया जाता है।

भवों के ऊपर वाला हिस्सा निकला हुआ हो तो गम्भीरता से देखने की शक्ति, चीजों की तह तक पहुंचने की इच्छा, आदि प्रगट होता है। अच्छे अखबार-नवीसों का माथा अकसर ऐसा ही आप पावेंगे। समालोचकों और निर्णायकों का माथा बीच में से, नाक की सीध में, ऊंचा रहता है। दोनों

भवों के बीच वाला हिस्सा उभाड़दार हो तो अच्छी स्मरण शक्ति, और लोगों तथा स्थानों या वस्तुओं का नाम आदि बहुत दिनों तक याद रखने की योग्यता प्रगट होती है। वहां पर ऊंचाई के बदले गढ़ा सा हो तो इस गुण की कमी प्रगट होती है। यही कौतूहल का भी केन्द्र है। जिसे कौतूहल ज्यादा होगा वही ज्यादा खोद बिनोद भी तो करेगा!

भौं की हड्डी गोलाईदार हो तो विचार-शक्ति, सजावट, इन्तजाम, रंग और स्वर (यानी चित्रकला और संगीत) से प्रीति आदि प्रगट होता है। दोनों भवों के बीच वाले हिस्से से नीचे की तरफ (यानी कौतूहल के नीचे) अगर फूला हो तो सौन्दर्यप्रियता प्रगट होती है।

सिर का ऊपर वाला हिस्सा ऊंचा रहे तो उससे हंसी मजाक से प्रेम, प्रसन्न रहते और दूसरों को प्रसन्न करने की इच्छा रखने वाला स्वभाव, वाक्पटुता आदि गुण प्रगट होते हैं। अगर ऊपर का हिस्सा ज्यादा उभाड़दार हो तो वह मनुष्य हमेशा नौजवान की तरह, आकृति और बर्ताव दोनों ही में, रहता है और जैसे समाज में पहुंच जाय उसी तरह का बन जाता है। यदि उसे कोई बात अरुचिकर भी लगे तो वह इसको प्रगट नहीं करता अपने मनोभावों को दबा कर रखता है, चाहे भविष्य में फिर कभी वह वैसे आदमियों के बीच नहीं ही जावे। यों चाहें तो आप कह सकते हैं कि वह इस हद तक सच्चा बर्ताव नहीं करता, पर यह झूठापन, अगर यह झूठापन ही है तो,

नम्रता का, शील का, झूठापन है। इससे किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचता।

दयालुता या परदुःखकातरता का भाव उस व्यक्ति में अधिक रहता है जिसके सिर के ठीक बीचोबीच वाला ऊपरी हिस्सा उभाड़दार हो। (यह अंग्रेजी मत है, प्राचीन ऋषि-मतानुसार यह धार्मिकता का चिन्ह है) बातचीत में योग्यता और चतुराई, विनोदशीलता, और दूसरों की नकल करने की शक्ति उनमें अधिक होती है जिनके माथे का ऊपरी अगला हिस्सा गोलाकार हो। जिसमें जितनी ही अधिक यह शक्ति होगी, उसके सिर का यह अगला भाग उतना ही अधिक गोल होगा।

भूल जाने की आदत, चीजें, घटनाएं, या मनुष्यों को, यह उन लोगों में ज्यादा होती है जिनका दोनों भवों के बीच वाला नाक के ऊपर का हिस्सा दबा हुआ या चिपटा सा हो। जिनकी भवों के नीचे वाली हड्डी चिपटी चिपटी सी नजर आवे उन्हें किसी नई जगह जाना पड़े तो बड़ी कठिनता से वे अपने स्थान, दिशा, या मार्ग का निर्णय कर पावेंगे, क्योंकि यह गति और दिशा का केन्द्र है।

माथे या सिर की गठन द्वारा स्वभाव या चरित्र का निर्णय करती समय एक बात आपको याद रखनी चाहिये। मनुष्य बहुत कुछ तो अपने साथ ले कर ही पैदा होता है, यानी उसकी बहुत सी शक्तियां या कमजोरियां तो उसे जीवनारम्भ से ही, मां के पेट से ही, मिली हैं जहां कि उसका शरीर रचा गया

और माथे की शकल गढ़ी गई है और इसी लिये बहुत मामलों में तो वह एकदम पराधीन है, फिर भी बहुत मामलों में वह इस बात में स्वाधीन भी है कि अपनी शक्तियों का किस प्रकार से उपयोग कर रहा या अपने को उन्नत करने की कहां तक चेष्टा कर रहा है। उसकी निज की चेष्टा और प्रयत्न के फलस्वरूप जो कुछ वह लाभ करता है वह भी अपना चिन्ह उसकी आकृति, विशेष कर माथे पर, छोड़ जाता है और स्वभाव या चरित्र का निर्णय करती समय इस बात को भूल नहीं जाना चाहिये।

फूला हुआ और भारी भारी सा लगने वाला माथा सुस्त बुद्धि का चिन्ह है। ऐसा माथा अगर मामूली से ज्यादा ऊंचा हो तो यह दूसरों के साथ मिलजुल कर रहने की शक्ति का अभाव प्रगट करता है। ऐसे लोग चाहे अच्छे गुण रखते भी हों पर उसे उन्नति देने या प्रकाश में लाने में असमर्थ होते हैं। मध्यम दर्जे का माथा, जिसकी भवें मोटी और चौड़ाई ज्यादा हो, स्वाभाविक चतुरता प्रगट करता है।

सीधा खड़ा, ऊंचा माथा, जब और चिन्ह अच्छे हों तो अच्छे पढ़े लिखे और विचारशील व्यक्ति का चिन्ह है, पर ऐसे लोग अकसर कल्पनापरायण या कवित्व शक्ति रखने वाले नहीं होते। ये दोनों गुण कम ऊंचे, ज्यादा चौड़े, और भरे हुए माथे वालों में ही ज्यादा पाये जाते हैं।

सकरा, नीचा, तंग माथा, मूर्खता का चिन्ह है, खास कर

यदि वह पीछे को हटता हुआ भी हो। चौकोर माथा, खासा ऊंचा और अच्छा चौड़ा, मजबूती, सचाई, स्थिरता, प्रौढ़ता आदि प्रगट करता है। अगर भवें भी सीधी और मजबूत हों तो ये गुण और भी बढ़ जाते हैं।

मोटे तौर पर यह समझ लीजिये कि चौकोर माथा मजबूती, गोल माथा कलाप्रियता और मुलायमियत, लंबोतरा कोमलता, नीचा चतुरता, ऊंचा और गोल विशेष पढ़ा लिखा होना, और ऊपर से झुका हुआ माथा विचारशीलता प्रगट करता है। भवें यदि आगे को बढ़ी हुई हों तो सोच विचार करने की शक्ति, बुद्धिमत्ता, और जल्दी से कुछ निर्णय कर सकने की क्षमता प्रगट होती है।

परन्तु एक बात यह भी याद रखिये। इन चिन्हों में से किसी एक चिन्ह पर ही मत रह जाइये नहीं तो धोखा खा जाइयेगा। इन सभी चिन्हों को देखिये, और सभों की देख भाल और सब का जोड़ लगा कर तभी अपना कुछ निर्णय कीजिये। चतुर आदमी में लापरवाही का माद्दा होगा तो काम बनने के बजाय बिगड़ जायगा, बहुत होशियार में अगर धूर्तता का अंश होगा तब भी उसको उलटे रास्ते ही ले जायगा, सुस्त और मोटी अकल वाला भी अगर लगन का और मेहनती होगा तो तरक्की कर ले जायगा, और ऐसे लोगों के माथों को बहुत सावधानता से देखने से ये सभी बातें आपको स्पष्ट लिखी हुई वहां मिलेंगी।

इस प्रकार आप देखेंगे कि व्यापार में सफलता अकसर उसी व्यक्ति को अधिक मिलती है जो कुछ भोंदी बुद्धि का मगर लगा रहने वाला, मेहनती, इज्जत बेइज्जती का विशेष खयाल न करने वाला, धुन का पक्का, आदि आदि होगा। ऐसों का माथा अकसर ऊंचे किस्म का होगा जो याददाश्त की ज्यादती बताता है। कम ऊंचे और ज्यादा चौड़े माथे वालों की तरह खूब तेजरौ न होने पर भी ऐसे लोगों की सहज बुद्धि और परि-श्रमशीलता इन्हें ऊंचा उठा देगी। हमारा यह मतलब नहीं कि वह दूसरा व्यक्ति सफल होगा ही नहीं, बल्कि हमारे कहने का मतलब यह है कि दूसरों की सफलता जब थोड़ी देर की अथवा साधारण सी होगी तो ऐसे की गहरी और स्थायी होगी। मरने बाद ऐसा व्यक्ति स्वभावतः ही दूसरे से अधिक धन छोड़ जायेगा।

साफ चिकना माथा सचाई कोमलता मुलायमियत आदि प्रगट करता है। ऊबड़खाबड़, आड़ी बेड़ी लकीरों से भरा, खोजी पठनपाठन-प्रिय और विचारशील प्रकृति प्रगट करता है। नाक के ठीक ऊपर वाले हिस्से में, दोनों भौहों के बीच की खड़ी लंबी लकीरें गहरे विचार की सूचक हैं। बहुत देर तक किसी गहन विषय पर गंभीर रूप से" विचार करने से ऐसी लकीरें पड़ जाती हैं।

ग्यारहवां अध्याय

चाल ढाल

आकृति अर्थात् चेहरे के सम्बन्ध की तो प्रायः सभी बातें समाप्त हो गईं फिर भी साधारणतया मनुष्यों की चाल ढाल, रहन सहन, व्यवहार आदि भी उनके बारे में बहुत कुछ बतलाता है, अस्तु चाहे आकृति-विज्ञान के अन्दर ठीक तौर से यह विषय न भी आता हो तौ भी इस बारे में भी कुछ कह कर ही हम इस विषय को समाप्त करेंगे।

जोर जोर से कदम फेंक फेंक कर चलने वाला आदमी, जिसके जूते की एड़ी हर बार जोर से सड़क या पटरी पर पड़ती और आवाज करती हो, अकसर स्वाभिमानी, दूसरों की फिक्र न करने वाला, "दूसरे क्या कहेंगे" इसकी चिन्ता न रखने वाला, और स्वाधीन प्रकृति का होता है। शोरगुल मचाने वाले व्यक्ति अकसर फुर्तीले, जल्दीबाज, बकवादी, और दूसरों की सुविधा असुविधा की फिक्र न करने वाले होते हैं। सीधा होकर, हर एक कदम दबा दबा के, जोर से और मजबूती से

रखने वाला, अकसर दृढ़ और स्वावलंबी होता है। शान्त स्वभाव, धीरे धीरे पर सोच विचार कर, और मजबूत कदम रखने वाला, दूसरों की फिक्र रखने वाला, सभ्य, धीर और सहानुभूतिपूर्ण होता है, पर शान्त होते हुए भी यह नहीं कि दब्बू या डरपोक हो। ऐसा व्यक्ति चलती समय कोई ऐंठ या अकड़ नहीं दिखाता, न जूते की एड़ी को बहुत जोर जोर से ही पटकता है, फिर भी इसके कदम मजबूत पड़ते हैं और यह अगर जिद्द कर बैठे तो बहुत ही कस कर अपनी बात को धर रक्खेगा। ऐसा आदमी अकसर अपने पैर बहुत ही धीरे से जमीन पर रक्खेगा। जोर ज़बर्दस्ती किसी मामले में इसे पसंद न आवेगी, न दूसरों की कही बातों का कोई विशेष असर ही इस पर पड़ेगा। अपने विचारों सिद्धान्तों और सुखों के लिये यह ज़िद्द पर अड़ कर भी न बैठेगा। फिर भी सहज में अपना मत बदल देने वाले ऐसे लोग नहीं होते।

कुछ लोग इस प्रकार चलते हैं कि दो आदमियों की जगह घेर लेते हैं, मानों सड़क या गली उन्हीं की हो। दोनों हाथ उनके खूब जोर जोर से इधर उधर हिलते डोलते रहते हैं, सिर ऊंचा करके चलते हैं, दूसरे भले ही उनके रास्ते से हट जांय पर वे कभी दूसरे के लिये रास्ता नहीं देते, चलती समय सामने आ पड़ने वालों को धक्का देकर एक तरफ हटा देते और अपने रास्ते चले जाते हैं। यह सब स्वाधीन प्रकृति, जिद्द, स्वाभिमान और स्वार्थीपने के लक्षण हैं। ऐसे लोग जल्दीबाज़ी कभी नहीं

करते, ऐसा करना वे अपनी इज्जत या शान के खिलाफ समझते हैं। दूसरे इनके लिये भले ही खड़े राह देखा करें पर ये कभी दूसरों के लिये जल्दीबाजी न करेंगे, मगर मजा यह है कि अगर ये कहीं पर देर से पहुंचें और दूसरा चला जाय तो ये बहुत नाराज हो जायंगे। यह सब घमंड और अपने को बहुत बड़ा समझने की आदत के चिन्ह हैं। ऐसे लोगों के बाल अकसर अंत की ओर कुछ ऐंठे हुए या घुंघराले से होते हैं, अंगूठे का सिरा मोटा होता है, हथेली मोटी और उंगलियें कुछ हिलती कांपती सी होती हैं। ऐसे आदमी को अपने रुपये का अकसर बहुत घमंड होता है, और यह कपड़े लत्ते भड़कदार पहिनना और सदा बना ठना रहना चाहता है। देखने में प्रायः ऐसों का चेहरा खुशमिजाज और प्रसन्न नजर आता है पर यह भाव भीतरी नहीं होता। घर के अंदर, छोटों से, अपने से कमजोर स्थिति के लोगों के साथ, ऐसे लोग अकसर कठोर और घमंडी बर्ताव करते हैं।

• चलती समय सिर का उठान कैसा है, इसे लक्ष्य करने से भी मनुष्य के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है। झुके हुए कंधों और चलती समय जमीन पर निगाह रख कर चलने वाला व्यक्ति अकसर विचारशील और दूर तक की सोच जाने वाला होता है। उसकी स्थूल दृष्टि बहुत गहरी नहीं होती, अकसर अपनी आंखों के नीचे वाली चीज या सामने होने वाली घटना उसकी निगाह में न पड़ेगी, पर वह अध्यवसायी

और गंभीर विचार का तथा अपनी राय को बहुत कस कर पकड़ रखने वाला होता है। प्रायः ऐसे लोग दब्बू स्वभाव के और आड़ में रहने की प्रकृति वाले भी होते हैं। चलती समय जमीन पर आंखें गड़ा के चलने से उदासी, सुस्ती, भय, भविष्य की चिन्ता, आदि भी प्रगट होता है।

सांप की तरह टेढ़ी मेढ़ी हो जाने वाली रीढ़ जिस व्यक्ति की हो उससे सावधान रहिये। ऐसे लोग प्रायः वेईमान, धोखेबाज, और विश्वासघाती होते हैं। चाहे ऐसों के मुंह से हंसो के फौवारे ही निकलते रहें पर सदा ऐसों की जीभ में कुछ और तथा मन में कुछ और रहता है। ये लोग मीठी मीठी बातें कर के आपका भेद ले लेंगे और तब आप ही को धोखा देंगे। ऐसे व्यक्ति की आंखों की ओर आप देखें तो अकसर उसे चंचल और दृष्टि अस्थिर पावेंगे। यह भी अच्छे लक्षण नहीं हैं। गर्दन आगे को झुकी हुई हो तो बनावटी नम्रता का लक्षण है. सामने खुशामद करते रहने पर भी पीठ पीछे ऐसा व्यक्ति किसी की निन्दा करने या हंसी उड़ाने में कुछ भी रुकाव न मानेगा। अकसर ऐसे लोग दुबले पतले और कुछ जनानी चेष्टा वाले होते हैं।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके कंधे चौड़े, शरीर भारी, चेहरा मोटा होता है। चलेंगे तो अकड़ते हुए, खड़े होंगे तो पांव फैला कर, बात करेंगे तो हाथ या छड़ी जोर जोर से हिला हिला कर, जैसे मार ही बैठेंगे। आपसे कुछ अनुचित बन

जाय तो ऐसा बिगड़ेंगे मानों खा जायंगे। देखने में ऐसे लोग भले ही शेर लगें, पर अकसर होते हैं अंतर के एक दम बिल्ली। यह सब केवल ऊपरी लक्षण हैं। जरा सा आप भी इनके सामने अकड़ जाइये, बस ये ठंढे पड़ जायंगे। ऐसे लोगों की एक और विशेषता अकसर देखने में आती है—इनके पास अगर बहुत रुपया हो तो भी ये दूसरे को इस बात का पता लगने देना पसन्द नहीं करते।

एक तरह की और भी चाल देखने में आती है। कुछ लम्बे चेहरे लम्बे बालों वाला व्यक्ति, गर्दन और सिर आगे को थोड़ा झुका हुआ, आकृति से गम्भीरता और स्थिरता टपकती हुई, दृष्टि विचारपूर्ण, आंखें मानों दूर की कोई चीज देख रही हों। कदम धीरे धीरे रखते हैं, किसी से धक्कमधुक्का नहीं करते, कपड़े लत्ते ढीले ढाले पुराने या मैले, फैशन की इन्हें परवाह नहीं है, न दूसरों की निगाहों की। अपने विचार में डूबे चले जा रहे हैं। ऐसे लोग अकसर विचारशील, दार्शनिक, दाता, सहृदय, धार्मिक, परोपकारी और सदाचारी होते हैं।

छोटी, मोटी, अकड़ी हुई सी गर्दन, छोटा गोल मटोल सिर, टोपी पीछे की तरफ हटी हुई, मोटा शरीर और छोटे छोटे कदम रखते हुए चलना, यह सब नौकरी पेशा या दूकानदार के लक्षण हैं।

जल्दी जल्दी कदम रख के चलने वाला सीधा और फुर्तीला आदमी, अकसर सफल व्यापारी या पेशेवर होता है। लापर-

व्राह सुस्त आलसी व्यक्तियों के कदम टेढ़े मेढ़े या ढीले ढाले पड़ते हैं। बिल्ली की तरह की चाल धोखेबाज या बहुत ही चालाक व्यक्ति की होती है। जल्दी मजबूत फुर्तीले कदम वकीलों के, तथा मजबूत स्थिर और दबे हुए से पड़ने वाले कदमों के साथ गम्भीर विचार में डूबी हुई दृष्टि लेखक की होती है।

पौशाक देख के भी पहिनने वाले के विषय में बहुत कुछ कहा या समझा जा सकता है, उसी तरह बालों में कंघी किस ढंग से फेरी जाती है, मोछें कैसी हैं, अंगुलियों में अंगूठी या कुरते कमीजों के बटन कैसे हैं, जूता छड़ी छाता किस किस्म का है, चश्मा या टोपी कैसी है, ये सब भी ऐसी बातें हैं जिनको अगर लक्ष्य में रक्खा जाय तो बहुत कुछ पता लगाया जा सकता है, पर यह सब बताने बैठेंगे तो विषय बहुत ही ज्यादा बढ़ जायगा, अस्तु इन बातों का जिक्र हम यहाँ न करेंगे और सिर्फ दो चार बची खुची जरूरी बातें और बता कर इस विषय को समाप्त कर देंगे।



बारहवां अध्याय

हाथ, उंगलियां, हथेली

ऊपर हमने चाल ढाल अर्थात् पैरों के बारे में बताया, अब कुछ हाथों के बारे में भी कहेंगे जिनसे बहुत सी बातों का पता लगता है।

एक प्रसिद्ध विद्वान के लेखानुसार लोग उस समय अपने हाथ बटोर या उंगलियां सिकोड़ लेते हैं जब उन्हें जोर दे कर कोई बात कहनी अथवा अपनी शक्ति का संचय करना पड़ता है। बंधी हुई मुट्ठी शक्ति, दृढ़ता, संकल्प, मजबूती, आदि का चिन्ह है। इसके विपरीत खुले हाथ और बाहर फैली उंगलियां प्रसन्नता, विश्वास, आत्मसमर्पण, आधीनता, आदि प्रगट करती हैं।

किसी चीज को ले लेने, जीत लेने, छीन लेने, छुपा लेने, आदि का भाव बन्धी उंगलियों से प्रगट होता है। कंजूस को कहीं से कुछ सोना मिल जाय तो खूब कस के उसे मुट्ठी से बांध मुट्ठी को छाती से लगा लेगा, अतएव इसी से लोभ का भाव भी

प्रगट होता है। लेने या देने का भाव भी उंगलियों से ही प्रगट होता है। जब कोई बहुत खुशी में हो तो दोनों हाथ जोड़ ऊपर उठा भगवान को स्मरण करता या धन्यवाद देता है, (यदि कोई चिन्ता, फिक्र, बेचैनी हो, तो उंगलियां हिला या उनसे किसी चीज को ठोकते हुए विचार करता है, मानों उंगलियों से कोई विद्युत-धारा दिमाग तक जायगी और उस गुत्थी को सुलझाने में मदद देगी।) अस्तु, मन की भीतरी स्थिति प्रगट करने में हाथ और उंगलियों का महत्व कम नहीं है।

बहुत से विद्वानों का कथन है कि इस तरह की कोई धारा है भी जो उंगलियों से दिमाग तक जाती है और गम्भीर विचार में सहायक होती है। (किसी विद्वान सूक्ष्मदर्शी या वैज्ञानिक को गम्भीर चिन्ता में कभी देखा है? अकसर ऐसे मौके पर उसकी उंगलियां कुछ न कुछ करती रहती हैं। चाहे वह अपने कोट का बटन मलता रहे, टेबुल पर उंगली बजाता रहे, घड़ी की चैन खींचता रहे, रूमाल ऐंठता रहे, या चाकू कलम वा पेन्सिल से खेल करता रहे। किसी न किसी काम में उसकी उंगलियां व्यस्त रहेंगी ही। फिर भी उसका ध्यान उधर न होगा, वह सोचता होगा कुछ और ही, और सो भी बड़ी गम्भीरता से, इतने ध्यान से कि उसे शायद यह पता तक न होगा कि उसकी उंगलियां कुछ कर रही हैं।)

एक बहुत बड़े वकील का किस्सा कहीं पढ़ा था। जब वह बहस करने को खड़ा होता था तो अपनी उंगलियों से अपने

कोट के बटन को ऐंठता रहता था, यह उसकी आदत पड़ गई थी। बहस उसकी ऐसी मजबूत होती थी कि जिस पक्ष में वह रहे उसे अवश्य ही जीत होती थी। एक बार वह किसी मुकद्दमे में बहस करने को था जो बहुत ही मजबूत था और सभी को विश्वास था कि वह मुकद्दमा अवश्य जीतेगा क्योंकि दूसरा पक्ष बहुत ही कमजोर था, पर उस पक्ष का वकील बड़ा ही धूर्त था। उसे अपने विपक्षी वकील की इस आदत का पता था, अस्तु ऐन बहस के मौके पर उसने किसी तरह बड़ी सफाई से उस दूसरे वकील के कोट का वह बटन जिससे उसकी उंगलियां खेलती रहती थीं, काट कर उड़ा दिया। पहला वकील बहस करने को खड़ा हुआ और कुछ ही बोल पाया था कि आदत के म्वाफिक उसकी उंगलियां उस बटन की तरफ बढ़ीं, पर वह बटन कहां! वकील बहस करते करते रुक गया, मानो उसकी कोई चीज खो गई हो, बटन की तरफ देखा तो वह नदारद, इधर उधर खोजने लगा, और ऐसा व्यग्र हो गया कि क्या बहस कर रहा है सो ही भूल गया। यद्यपि फौरन ही अपने को सम्हाल वह फिर बहस करने लगा, पर बार बार उसकी उंगलियां वह बटन खोजने दौड़तीं और बैरंग वापस आतीं, जिससे उसकी विचार-धारा रुक जाती। आखिर वह उस मुकद्दमे को हार ही गया।

इस उदाहरण से उङ्गलियों की शक्ति और विचारशृङ्खला पर उनके प्रभाव का पता लगता है। जितने गम्भीर विचार

करने वाले हैं सब को इस तरह की कोई न कोई आदत होती ही है। किसी लेखक को अपने किसी नये उपन्यास के लिये प्लाट सोचती समय देखिये—उसकी आंखें बन्द होंगी, दिमाग दूर दूर दौड़ रहा होगा, शरीर निश्चल होगा, पर उङ्गलियें कुछ न कुछ जरूर कर रही होंगी, चाहे टेबुल ठोंक रही हों, कुरसी थपथपा रही हों, पेन्सिल या कलम से खेल रही हों। उङ्गलियें चल रही हैं और दिमाग भी दौड़ रहा है। दोनों का सम्बन्ध प्रत्यक्ष है।

इसके विपरीत जब दिमाग काम न कर रहा हो, या जब अपने खूब काबू में हो, जो करीब करीब वही बात है, तो उङ्गलियें नहीं हिलतीं, न हाथ पांव ही हिलते हैं। (कुछ लोग जो बहुत जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं, अकसर हाथ या उङ्गलियों के बजाय पैर हिलाया या जूता मचमचाया करते हैं, पर ये भी जब खूब गम्भीर विचार में डूबे हों तो इनके भी यह सब काम बंद हो जाते हैं) उस समय समझना होगा कि दिमाग या तो बिल्कुल कुछ सोच ही नहीं रहा है, या जो कुछ उसे सोचना था वह सोच चुका, अथवा बहुत गहरे चला गया है। जब उसमें कुछ क्रिया होगी तो बाहर हाथ पांव भी कुछ न कुछ क्रिया दर्शाने लगेंगे।

एक बात और, यह हाथ पांव हिलाना, या इनके जरिये अपने भाव प्रगट करने की चेष्टा करना, सब श्रेणी के मनुष्यों में एक समान नहीं होता। समाज की निम्न श्रेणी के लोग, किसान,

मजूर, कारीगर, बात करती समय हाथ पांव सिर या मुट्ठी जोर जोर से हिलावेंगे। जिस वक्ता की बहस में कुछ बहुत जोर नहीं है, वह उस कमी को हाथ पांव जोर जोर से हिला डुला कर पूरा करेगा और इस प्रकार अपनी वक्तृता को जोरदार बनाने की चेष्टा करेगा, मगर जिसकी बहस में जोर है वह चुपचाप, शांतभाव से खड़ा होकर, ऐसी बातें कहेगा कि सुननेवालों के दिलो-दिमाग उबल पड़ेंगे। दोनों का अंतर स्पष्ट है। अस्तु प्रगट हुआ कि बहुत हाथ पांव हिलाना या भावभंगी दर्शाना, मानसिक कमजोरी या अपुष्टि के चिन्ह हैं। किसी बहुत बड़े राजनीतिज्ञ से कभी मिलिये, उसे इस प्रकार की भावभंगी करते बहुत ही कम पावेंगे। अगर बहुत ही जोश में होगा, तौ भी उसकी शायद एक उङ्गली ही जरा सा उठ के रह जायगी, जब कि दूसरा कोई साधारण व्यक्ति शायद वैसे मौके पर अपनी मुट्ठी बांध कर दिखाता।

कोई मौका पड़ने पर हाथ किस तरह पर बढ़ाया जाता है यह भी देखने से बहुत कुछ पता लगता है। किसी का हाथ दबता हुआ, झिझकता हुआ, रुकता हुआ सा बढ़ता है, तो किसी का झट से आगे बढ़ आता है। किसी की हथेली ऊपर रहती तो किसी की नीचे, किसी की उङ्गलियां फैली रहती हैं तो किसी की आपुस में सटी। यह सब भी लक्ष्य करने की बातें हैं क्योंकि इनके भीतर बहुत बड़ा रहस्य छिपा हुआ है।

इस मामले में एक मोटा नियम यह समझ लीजिये कि

सहज में फैला हाथ और दिखती हुई हथेली, स्पष्टता, सचाई, साफ़दिली आदि का चिन्ह है। ऐसे व्यक्ति को कुछ छिपाना नहीं है, कुछ दबाना नहीं है, वह जो कुछ कह रहा है, सचसच और साफ साफ़ कह रहा है। मजिस्ट्रेट के सामने कैदी हाथ फैला कर कहता है—"हुजूर, मैं कुछ नहीं जानता, मैं इस मामले में बिलकुल बेकसूर हूँ और व्यर्थ ही इसमें घसीटा गया हूँ !!" वह सच कह रहा है। इसके विपरीत जिसे कुछ छिपा रखना है, दाब रखना है, अथवा आधा ही प्रगट करना है, वह अपनी हथेली या उंगलियां दबा कर रखेगा। हमने एक बहुत ही विद्वान वकील के मुंह से सुना है कि जो आदमी झूठी गवाही देता है वह अपनी हथेली जहां तक बन पड़ता है, छिपा के रखता है, जेब में रख ले, पीठ पीछे कर ले, या मुट्ठी बांधे रहे चाहे जैसे भी हो, झूठी बातें कहती समय वह अपनी हथेली अदालत के सामने कभी न दिखावेगा। खैर, इस बात में चाहे जहां तक भी सचाई हो, इसमें शक नहीं कि फैला हाथ, आगे बढ़ी उंगलियां, और दिखती हुई हथेली, स्पष्टवादिता, निर्भीकता, सत्य, और पुष्टता का चिन्ह है। अगर कोई आदमी सच कह रहा है और आप उसकी बात में किसी तरह का सन्देह प्रगट करते हैं तो वह चट अपना हाथ कुछ जोर से आपकी तरफ बढ़ावेगा और पूछेगा, "क्या मैं झूठ कह रहा हूं !!" उसकी हथेली को लक्ष्य कीजिये, वह दिख रही होगी। इसके विपरीत यदि वह मनुष्य झूठ कह रहा है अथवा केवल अर्ध-सत्य ही

कह रहा है तो ऐसे मौके पर वह अपना हाथ पीठ पीछे बांध लेगा अथवा मुट्ठियें बांध छाती पर मोड़ लेगा और तब बड़े गुस्से से आपसे पूछेगा, "क्यों साहब! क्या आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं है! क्या मैं झूठ बोल रहा हूं!!" उसकी हथेली नजर न आवेगी। समझ लीजिये कि यहां कुछ गड़बड़ी जरूर है।

यह हाथ या मुट्ठी बांध लेना या सिकोड़ना असल में मानसिक क्रिया का ही एक चिन्ह है। जो वास्तव में ही सच्चा है, उसे कुछ छिपाना नहीं है, कुछ बचाना नहीं है, कुछ रोकना नहीं है, उसे कोई दांव या पैंतरा खेलना नहीं है कि जिसके लिये वह अपनी उंगलियों से काम ले और दिमाग को फुर्तीला बनावे, इसी से वह अपने हाथ आगे बढ़ा देता है। इसके विपरीत जो झूठ बोल रहा है, जिसे कुछ छिपाना है, जिसे अपने प्रतिपक्षि से दांव पेंच खेलना है, उसे अपनी मानसिक शक्तियों से बहुत काम लेना है और इसी से वह अपनी उंगली सिकोड़ रक्खेगा, या मुट्ठी बांध रक्खेगा, ताकि उसके मस्तिष्क की विचारधारा टूटने न पावे। ऐसे आदमी को जरा सा, किसी तरह, अपना ध्यान इधर उधर करना पड़ा कि वह गया। झट उसके मुंह से कोई कच्ची बात निकल जायगी और, उसका झूठ पकड़ जायगा, उसके हाथ खुल कर लटक जायंगे, आंखें नीचे गिर जायंगी, गरदन झुक जायगी। उसकी अपनी गलती से उसके झूठ का राज खुल गया, ये सब लक्षण इस बात को दिखाते हैं।

जब कभी किसी को मजबूती, दृढ़ता, कठोरता आदि दिखलानी होती है, वह मुट्ठी बांध कर अपनी शक्ति का संचय करता है। जितने ही उसके ये भाव गहरे होंगे, उतनी ही ये बातें ज्यादा होंगी। मुट्ठी बांध के मानों वह अपनी आंतरिक शक्तिधारा को बटोर रहा है। इसके विपरीत जिसे अपने को प्रगट कर देना है, अर्थात् भीतर से बाहर को आना है वह अपने हाथ भी खोल देता है।

हाथ मिलाने का हम भारतवासियों को बहुत ही कम अवसर मिलता है क्योंकि यह आर्य सभ्यता नहीं है, फिर भी जिन्हें इसका बहुत मौका पड़ता है, वे हाथ मिलाने के ढंग से भी बहुत कुछ समझ सकते हैं।

आन्तरिक दोस्ती से दो हाथ जब मिलते हैं तो हथेलियें गर्म रहती हैं, और एक दूसरे के भीतर अंगूठे की जड़ तक घुस जाती हैं। ठंढी, पसीने से तर हथेली, डर, छिपावट, आशंका, दुराव, आदि का चिन्ह है। जिसे कुछ छिपाना है वह पूरा हाथ कभी न देगा। वकील बारिस्टर, पुलिस आफिसर, जासूस आदि, जिनके मुंह में अकसर कुछ और तथा भीतर कुछ और रहता है, हाथ मिलाती समय पूरा हाथ कभी न देंगे। जब कभी आपके बढ़े हुए हाथ से मिलने को दूसरे की दो ही उंगलियां बढ़ी हुई नजर आवें, सम्हल जाइये।

दयालु और साफ चित्त वाले खुले दिल और जोर से हाथ मिलाते हैं, ठंढे दिल के, घमंडी, या कुछ छिपा रखना चाहने वाले

धीरे से मिलाते और झट हटा लेते हैं। घमंडी आदमी भी रुकता रुकता हाथ बढ़ाता अथवा दो ही तीन उंगलियां बढ़ाता है। अतएव इन बातों पर यदि ख्याल रक्खा जाय तो हाथ मिलाने के ढंग मात्र से ही आदमी का आन्तरिक भाव समझा जा सकता है।

कोई चीनी सभ्य पुरुष आपसे मिलता है तो अपने हाथ से अपना ही हाथ मिलाता है। वह अपनी खुशी प्रगट करता है और आपके बदन को इतना पवित्र समझता है कि छू के उसे गन्दा नहीं करना चाहता।

लोभी, मतलबी, लालची व्यक्ति, आपसे कुछ कहेगा तो अपने दोनों हाथ आपुस में मलता रहेगा। समझ लीजिये कि उसे आपसे कोई मतलब निकालना है और बहुत सम्भव है कि अपना मतलब पूरा हो जाने पर वही आपका ठट्ठा भी उड़ावे।

एक बहुत बड़े फ्रान्सीसी जासूस का कहना है कि आदमी चाहे झूठ ही बोलता रहे पर उसके हाथ उसका भीतरी मनोभाव प्रगट कर देंगे। एक बहुत बड़े अंग्रेज ऐक्टर का कथन है कि जो ऐक्टर ऐक्ट करती समय अपनी उङ्गलियों को काबू में नहीं रख सकता वह कभी अच्छा ऐक्टर हो नहीं सकता। हमारे देश में भी बहुत से ऐसे विद्वान हैं जो केवल हाथ देख कर मनुष्य के बारे में बहुत सी बातें बता देते हैं। अस्तु हाथ के महत्व पर आप भी गौर कीजिये और उसकी गतिविधि समझने की चेष्टा कीजिये।

तेरहवां अध्याय

कपड़े लत्ते, बर्ताव

कपड़े लत्ते और व्यवहार या बर्ताव भी मनुष्य के बारे में बहुत कुछ बता देते हैं। उन ऋषिमुनियों या साधु संन्यासियों की बात हम नहीं कहते जो केवल एक लंगोटी लगाए या शायद उसका भी बहिष्कार किये हुए जंगलों में रमते रहते हैं। हम तो साधारण मनुष्यों की बात कहते हैं जिन्हें नगरों में रहना और पेट के लिये तरह तरह के धन्धे करना है।

साफ सुथरे कपड़े, ठीक तरह से सिले, और बदन पर फिट, भीतरी सूफियानेपन के द्योतक हैं और इनका ऊपरी प्रभाव भी कम नहीं है। आप अच्छे कपड़े पहिने जा रहे हैं और रास्ते में कीचड़ का एक छींटा उस पर पड़ गया। जरा अपने उस समय के मनोभावों पर गौर कीजिये तो! और तो जो कुछ रहे सो रहेगा ही, आपका मन चाहेगा कि अभी घर जाएं और कपड़ा बदल आवें। क्यों? इसीलिये कि कीचड़ की वह बून्द शायद सभी सड़क के चलने वाले देखें और आप

पर हसेंगे। असल तो यह है कि किसी को इतनी फुरसत ही नहीं है जो आपकी तरफ देखे, मगर यह बात क्या उस वक्त कुछ सम्बोधन देगी ?

कपड़ों के फेर में ही दिन रात पड़े रहने वाले और उन्हीं को सब कुछ समझनेवालों की बात हम नहीं कहते, हम तो साधारण स्थिति के साधारण लोगों की बात कहते हैं। ऐसों के लिये कपड़ों का एक विशिष्ट महत्व है जिसे भूल जाना उचित नहीं।

टोपी पर निगाह कीजिये, सीधी, जम कर बैठी हुई टोपी स्थिर स्वभाव बताती है, टेढ़ी या एक तरफ को झुकी हुई टोपी अलबेलापना प्रगट करती हैं, पीछे को यानी पीठ की तरफ लटकी हुई टोपी छोटा स्वभाव, बुद्धि-विकाश की कमी, या दूसरों को मूर्ख बना या समझ के अपना काम बनाने की प्रकृति, आदि की सूचक है और ऐसे लोगों का अकसर अपनी जुबान पर भी बस नहीं होता। आगे यानी माथे पर झुक आई हुई टोपी छिपावट, शर्म, या कुछ आड़ में रहने की प्रवृत्ति और इच्छा बताती है, पर कभी कभी इससे गंभीर विचार और गूढ़ निरीक्षण करने वाला स्वभाव भी प्रगट होता है।

मैले या फटे कपड़े आलसी स्वभाव, सुस्ती, उदासी, आत्म-विश्वास की कमी, आदि प्रगट करते हैं। कपड़े पुराने या फटे होने पर भी यदि साफ हों, जूता पुराना हो जाने पर भी साफ सुथरा और पैबंद लगा हुआ हो, तो ऐसा आदमी चाहे विपरीत

परिस्थिति में भी पड़ गया हो पर समझना होगा कि उसका आत्म-विश्वास बना हुआ है और कभी न कभी या मौका पाकर वह तरक्की अवश्य कर लेगा।

ढीले ढाले कपड़े लापरवाही के चिन्ह हैं जो दो कारणों से हो सकती है। या तो वह मनुष्य इतने ऊंचे पर है कि उसे अपने कपड़ों की फिक्र करने की जरूरत ही नहीं, अथवा उसका दिमाग अन्य बातों के चिन्तन में इतना डूबा रहता है कि कपड़े लत्ते जैसी मामूली चीजों को वह लक्ष्य में रख ही नहीं सकता। सर्वदा काम में अत्यंत व्यस्त रहने वाले व्यक्ति का भी यह लक्षण हो सकता है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति बहुत चुस्त पौशाक पहिन के काम में जरा अंडस अनुभव करते हैं।

मनुष्य का आत्माभिमान जितना ही कम होता जाता है, उतना ही वह अपनी शकल सूरत, चाल ढाल, और व्यवहार के बारे में लापरवाह होता जाता है। उसके दिमाग को भी विपरीत परिस्थितियें मानों कमजोर कर देती हैं, वृत्तियां कमजोर पड़ जाती हैं, शरीर अवश हो पड़ता हैं, पाशविकता बढ़ती जांती है, सद्‌गुण मिटते जाते हैं। एक तरह पर, धीरे धीरे, मानों उसकी आत्मा बुझने लगती है, और वह मनुष्यत्व से पशुत्व की ओर झुकने लगता है।

इसके विपरीत जिसका जमाना उरूज पर है, जिसे सफलता पर सफलता मिल रही है, जो ऊंचाई से ऊंचाई पर जा रहा है, उसमें स्वावलंबन और स्वाभिमान बढ़ता जाता है, और साथ

साथ उसकी मानसिक शक्तियां भी बढ़ती जाती हैं। उसकी शकल सूरत, चाल ढाल, व्यवहार, सभी इन बातों को प्रगट करते हैं।

आकृति-विज्ञान के सम्बन्ध में मोटी मोटी इन बातों को बता कर अब हम केवल इतना ही और कह कर बिदा लेंगे—"दूसरों को पहिचानने की चेष्टा करते हुए अपने को पहिचानिये।"

॥ इति ॥